

त्रिलोचन के चतुर्दशपदी काव्य-रूप का अनुशीलन



अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़
की एम० फिल० उपाधि हेतु प्रस्तुत
लघु शोध-प्रबन्ध

निर्देशक :

डा० एस० एम० शर्मा

रीडर, हिन्दी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़

शोधार्थी :

श्रीमती इफ्फत नाज खातुन

एम० ए० (हिन्दी), बी० एड०, एम० फिल०

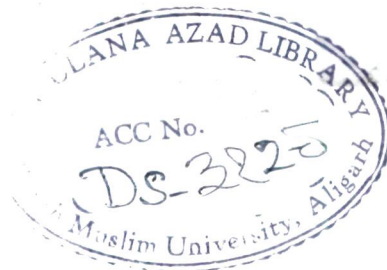
हिन्दी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़ (उ०प्र०)

1999

DS-3129



DS3129



Red in Computer

16 AUG 2000



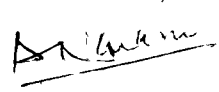
CHECKED-2002

Supervisor's Certificate

Certified that the dissertation entitled "**TRILOCHAN KE CHATUDARSHPADI KAVYA-ROOP KA ANUSHEELAN**" submitted by **MRS. IFFAT NAZ KHAN SHAHEE** for **M. Phil. DEGREE** is an original research work. It is ^{her} own efforts and is suitable for the award of M. Phil. degree of Aligarh Muslim University, Aligarh.

She has fulfilled all the conditions laid down in the ordinance of Aligarh Muslim University, Aligarh in this respect.




(Dr. S. N. Sharma)
Reader,
Department of Hindi
A.M.U., Aligarh

Dated14.5.99.....

विषयानुक्रमिका

भूमिका

प्रथम अध्याय	त्रिलोचन शास्त्री – जीवन परिचय	(1 – 13)
द्वितीय अध्याय	चतुर्दशपदी स्वरूप विश्लेषण	(14 – 52)
	1. चतुर्दशपदी का स्वरूप	
	2. चतुर्दशपदी: काव्य के विधायक तत्व	
	3. वर्गीकरण-इतालवी और आंग्ल चतुर्दशपदी रूप	
	4. पाश्चात्य साहित्य और चतुर्दशपदी, एक अन्तर्योग	
	5. आधुनिक हिन्दी कविता में चतुर्दशपदी, सर्वक्षण	
तृतीय अध्याय	त्रिलोचन का चतुर्दशपदी काव्य: वस्तु-परीक्षण	(53 – 77)
चतुर्थ अध्याय	त्रिलोचन का चतुर्दशपदी काव्य: शिल्प-सौष्ठव	(78 – 105)
पंचम अध्याय	उपसंहार – चतुर्दशपदीकार त्रिलोचन का प्रदेय	(106 – 114)
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	(115 – 117)

भूमिका

हिन्दी का आधुनिक काल साहित्यिक दृष्टि से बहुआयामी है। इस युग में साहित्य की सभी विद्याओं का बहुमुखी विकास हुआ है। गद्य में जहाँ एक ओर नई-नई विद्याओं का उदभव और विकास हुआ वहाँ पद्य – विद्या भी द्रुतगति से विकसित हुयी। काव्य – प्रवृत्तियाँ युग – चेतना के साथ – साथ बदलती रहीं हैं। छायावाद के बाद के काव्य में यह प्रवृत्तिगत विकास बहुत ही दिलचस्प है। यदि यह कहा जाए कि छायावादोत्तर काव्य अपनी प्रवृत्तियों में गद्योन्मुखी होता गया है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यथार्थवाद, मनोविश्लेषणवाद, कुण्ठा, हताशा, विषाद आदि की प्रवृत्तियाँ समान रूप से गद्य – पद्य में विकसित देखने में आती हैं। भाषा का रूप भी दूर की कौड़ी लाने के चक्कर में दुरूह होता गया है। परन्तु इस युग में कुछ ऐसे साहित्यकार भी उभरे हैं जिनमें कविता के प्रकृत रूप के दर्शन होते हैं। भवानी प्रसाद मिश्र, त्रिलोचन शास्त्री आदि ऐसे ही कवि हैं जिन्होंने सहज भाषा में अपने मनोगत भावों को वाणी दी है।

त्रिलोचन शास्त्री न केवल सहज भाषा के कवि हैं। अपितु उनका उदार हृदय साहित्य में नये – नये प्रयोगों के लिए भी उदार रहा है। उन्होंने हिन्दी में आंग्ल साहित्य की एक विद्या सॉनेट को ग्रहण कर उसे हिन्दी का ही काव्य रूप बना लिया है।

मैंने अपने एम.फिल. के लिए त्रिलोचन के इसी काव्य रूप को ग्रहण किया है। त्रिलोचन से पहले यद्यपि इस विद्या के बिखरे – तुखरे प्रयोग छायावाद में प्रसाद आदि ने किये हैं। पर त्रिलोचन ने इसे विकास की ऐसी शिखरों पर पहुँचाया है कि त्रिलोचन सॉनेट के पयोय ही बन गये हैं। हमने इसे एम.फिल. शोध का विषय बनाया है।

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम अध्याय "त्रिलोचन शास्त्री – जीवन परिचय" से सम्बन्धित है जिसमें उनके जीवन वृत्त, व्यक्तित्व और कृतित्व पर विमर्श हुआ है।

अध्ययन के दूसरे अध्याय में चतुर्दशपदी स्वरूप विश्लेषण से सम्बन्धित है जिसमें चतुर्दशपदी का स्वरूप, चतुर्दशपदी काव्य के विधायक तत्व, वर्गीकरण इतालवी और आंग्ल चतुर्दशपदी रूप, पाश्चात्य साहित्य और चतुर्दशपदी एक अन्तर्गत, आधुनिक हिन्दी कविता में चतुर्दशपदी संवेक्षण आदि पर विचार किया है।

तीसरा अध्याय "त्रिलोचन का चतुर्दशपदी काव्य वस्तु परीक्षण"।

प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय में "त्रिलोचन का चतुर्दशपदी काव्य शिल्प सौष्ठव" पर विचार किया गया है जिसके अन्तर्गत भाषा, अलंकार, विम्ब एवं प्रतीक, मुहावरे, छंद विधान, शैली की गवेषणा की गयी है।

पंचम अध्याय "उपसंहार - चतुर्दशपदीकार त्रिलोचन का प्रदेश" पर विचार किया गया है।

इस अवसर पर मुझे आभार प्रदर्शन की आवश्यकता की सुखद अनुभूति हो रही है जिनके श्री चरणों में बैठकर मुझे अपने एम.फिल. के शोध प्रबन्ध को लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनका औदाये और अनुजावत स्नेह कदापि भुलाने की वस्तु नहीं है। अतः मैं उन्हें धन्यवाद न देकर उनके प्रति मूक कृतज्ञता ज्ञापित करती हुयी उनके आशीर्वाद की ही कामना करती हूँ।

विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर मिश्रा जी के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनका व्यवहार हम शोधार्थियों के प्रति सदैव उत्साहवर्धक रहा है।

प्रोफेसर शैलेश जैदी सदाहमें कार्य के प्रति तत्पर रहने के लिए उत्साहेत करते रहे। उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

डॉ. उदयशंकर श्रीवास्तव, डॉ. रमेश चन्द्र, अजब सिंह, और विभागीय विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझती हूँ जिन्होंने समय समय पर अपनी सत्प्रेरणा से मेरा उत्साहवर्धन किया है।

मैं डॉ. मुहम्मद उस्मान खॉं, सेमीनार इंजाचे, हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का शुक्रेया किस प्रकार अदा करूँ, जिन्होंने मुझे तत्परता से किताबें उपलब्ध करायीं।

विभाग के कार्यालय में कायरत सईद भाई, परवेज आपा, रामजीलाल भाई और सभी जो कार्य करते हैं उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना धर्म समझती हूँ जिन्होंने समय समय पर मेरा अनेक प्रकार से उपकार किया है ।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की आजाद लाइब्रेरी के हिन्दी सेक्शन के भाई सय्यद राकिम अली के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे पुस्तकों को सहयोग दिया । मैं उनका बड़े भाई के रूप में सदा आदर के साथ स्मरण करती हूँ ।

जिन रचनाओं से मुझे शोध प्रबन्ध की सामग्री प्राप्त हुयी है उन रचनाकारों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ ।

मैं आभारी हूँ अपने मामा श्री सरदार अहमद खान और पिता श्री अब्दुल शाहिद खान जिनकी अपरिमित प्रेरणा और मार्गदर्शन ने मुझे जीवन – सत्य को समझकर संघर्ष करने की क्षमता और ऊर्जा से आपूर्ति किया । उन्हीं की प्रेरणा से ये मेरा शोधकार्य सम्भव हो सका । मैं उनके श्री चरणों में बार – बार नमन करती हूँ ।

एम.फिल. शोधकार्य में मुझे पूज्य मामीजी श्रीमती रेहाना बेगम और पूज्य माता श्रीमती अतुफा बेगम का असीम स्नेह निरन्तर कार्य करने के लिए प्रेरणा प्रदान कर प्रोत्साहित करता रहा है । उन्होंने अपने आदर्श उत्तरदायित्वों का जिस सहज तथा सफल ढंग से निवाह किया है वह अनुकरणीय और चिरस्मरणीय है । मैं श्रद्धाभाव से उनके प्रति नतमस्तक हूँ । उनका शुभाशीष मुझ पर सदैव बना रहे ।

मैं अपने पाते श्री मौ. शुऐब खान के प्रति श्रद्धावन्त हूँ जिन्होंने शोधकार्य के लिए घर गृहस्थी की सभी प्रकार के उत्तर दायित्वों से मुक्त कर अवसर प्रदान किया । मैं उनके प्रति सदैव मूक कृतज्ञता ज्ञापित करती रहूँगी ।

मैं अपनी बेटी फारदा, छोटी बहन शीबा, जेबा, उन सभी पारेवारीजनों, भित्नों एवं स्नेहियों की कृतज्ञ हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से इस शोधकार्य में सहयोग किया है ।

अन्त में मैं परमापेता परमात्मा के प्रति नमस्कार पूर्वक अपने वक्तव्य को समाप्त करती हूँ और शोध प्रबन्धक को परीक्षण हेतु प्रस्तुत करती हूँ ।

शोधार्थी

श्रीमती इफ्फत नाज़ खान

अध्याय - 1

त्रिलोचन शास्त्री - जीवन परिचय

अध्याय - 1

त्रिलोचन शास्त्री - जीवन परिचय

छायावादोत्तर हिन्दी कविता के उभरते हुये कवियों में त्रिलोचन का महत्त्वपूर्ण स्थान है । वे उन कवियों में से हैं, जिनमें मानवता के उज्ज्वल भविष्य के प्रति एक बलवती आस्था विद्यमान है ।

त्रिलोचन प्रगतिवादी काव्य धारा के कतिपय चुने हुये कवियों में से एक हैं । कभी - कभी कुछ लोग उन्हें प्रयोगवादियों की श्रेणी में भी रख देते हैं । त्रिलोचन शास्त्री प्रगतिशील हिन्दी कविता के दूसरे दौर के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कवियों में गिने जाते हैं ।

त्रिलोचन शास्त्री का मूल नाम वासुदेव सिंह है और शास्त्री उनकी उपाधि है । "त्रिलोचन" नाम गाँव के संस्कृत गुरु श्री देवदत्त ने दिया था । त्रिलोचन जी का जन्म सम्बत् 1974 में भाद्र मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया सोमवार तदनुसार 20 अगस्त सन् 1917 में उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले के चिरानी पट्टी, कटघरापट्टी में हुआ था।

इनके दादा श्री बलिराज सिंह एवं दादी श्रीमती रजासी ॥राज्यश्री॥ देवी थी । त्रिलोचन जी के पिता श्री जगरदेव सिंह सात फीट तीन इंच के हृष्ट - पुष्ट व्यक्ति थे¹ । जब त्रिलोचन जी मात्र 5 वर्ष के बालक थे, तभी इनके पिता ने सन्यास ले लिया और इनकी माता श्रीमती मनबरता देवी पर ही इनके लालन पालन की जिम्मेदारी आ गयी² ।

त्रिलोचन का बचपन अभिभावक - विहीन था । उनके पिता राम भक्त थे, उन्हीं से त्रिलोचन ने रामायण की चौपाइयों सुनी थीं और वह बहुत ही सहज याद हो गयी थीं । वे कबड्डी के खेल में भी छन्दों को मंत्र की तरह पढ़ते थे ।

6 वर्ष के बाल त्रिलोचन के सामने दोहरा संकट था, एक ओर माँ की रुढ़ि और दूसरी ओर बुआ का उदात्त मानवी गुण । इसी मानव प्रेम की कविता है, "परदेसी के नाम पत्र" । अवध की वह श्रद्धेया, सीधी - साधी, ठेठ ठकुराइन सिर्फ

1. वर्तमान साहित्य - अगस्त 92 - विभूति नारायण राय, पृष्ठ 45

2. भाषा त्रैमासिक - सितम्बर 1981 - सम्पादक - जगदीश चतुर्वेदी, पृष्ठ 99

इतना जानती थी कि जीवन संघर्ष के लिये शरीर में बल तो होना ही चाहिए और कितना ही बल क्यों न हो, वह कम ही पड़ेगा । जवान लड़का जितना खायेगा, उतना ही उसमें बल आयेगा, सीधी - सी बात और उतना ही वह दुश्मन (पट्टीदारों) से निबट भी सकेगा, जिसकी आगे जरूरत थी । वह खासी रोटियाँ इनके सामने रख देतीं और कहतीं- "बच्चू, अगर एक भी छोड़ी, तो समझ लो" । यह कभी - कभी बुरी तरह ऊब जाते थे, उनका एक ही इलाज था । माँ उलटा उन्हीं को पेड़ से टाँग देती थीं और बेभाव की उनको पड़ती थी । सोचिए वह कैसी माँ थीं, जो अपने बेटे को सचमुच फौलाद का बनाना चाहती थीं, उससे कम नहीं और बाप - जो तब तक गुजर चुके थे - उनके अंदर संतो का ज्ञान स्फुरित हुआ देखना चाहते थे । यही उनकी महती आकांक्षा थी¹ ।

त्रिलोचन शास्त्री का विवाह 11 वर्ष की अवस्था में हुआ था । उनकी पत्नी जयमूर्ति देवी उनसे 4 - 5 साल बड़ी थीं, पत्नी की मातृभाषा जौनपुर की अवधी - भोजपुरी मिली हुयी थी² । त्रिलोचन शास्त्री अब अकेले रहते हैं या अपनी पत्नी के साथ रहते थे । उनकी पत्नी का देहांत "सागर" मध्य प्रदेश में 19 दिसम्बर 1988 ई. को हुआ था । पत्नी के देहान्त के बाद उनका अकेलापन एक तरह से बढ़ गया है । इस परिस्थिति का सामना उन्होने बहुत मुश्किल से किया है ।

त्रिलोचन शास्त्री के दो पुत्र हैं- एक डॉ० जय प्रकाश सिंह जो बनारस विश्वविद्यालय में इतिहास पढ़ाते हैं । उनकी पत्नी का नाम उषा है जो जोरहाट - असम की रहने वाली हैं , और उनकी तीन सन्तानें हैं - गायत्री सिंह (पुत्री), रिपुंजय सिंह (पुत्र), मृगांका सिंह (पुत्री) । दूसरे अमित प्रकाश सिंह जो कलकत्ता में दैनिक "जनसत्ता" में समाचार सम्पादक हैं । उनकी पत्नी का नाम उषा है जो ज्वालापुर - हरिद्वार की रहने वाली हैं और उनकी दो सन्तानें हैं : अद्रीश (पुत्र), पंखुडी (पुत्री) ।

त्रिलोचन शास्त्री की तीन बहनें थीं, जिसमें से दो त्रिलोचन से बड़ी थीं - मर्यादा और नन्हका, एक छोटी - उरेहा । त्रिलोचन शास्त्री के तीन भाई थे जिनमें से त्रिलोचन से बड़े दो जो जीवित नहीं रहे - 1. रामसरन सिंह जिनकी 12 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गयी थी । 2. रामफेर सिंह जिनकी 8 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गयी

1. भाषा त्रैमासिक - सितम्बर - 1981 - संपादक - जगदीश चतर्वेदी, पृष्ठ 99

2. वर्तमान साहित्य - अगस्त - 92 - संपादक - विभूति नारायण राय, पृष्ठ 45

थी । एक भाई त्रिलोचन शास्त्री से छोटे थे जिनका नाम भगवनी सहाय वर्मा था। उनका जन्म 1923 में और मृत्यु 9 अप्रैल 1992 ई. को हुई थी¹।

त्रिलोचन शास्त्री के घर में बुआ बड़ी थीं जो उसे मानती थीं । माँ बालक को पढ़ाने के पक्ष में नहीं थी । शमशेर ने लिखा है :- "बचपन ही में, उनके पिता ने उन्हें किसी संकल्प के कारण एक स्वामी जी की सेवा में सौंप दिया था और वह उनके शिष्य बने हुये आसाम से पंजाब तक कई बरस तक बन, पर्वत, देहात घूमते रहे"² । त्रिलोचन की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव दोस्तपुर में हुयी थी । त्रिलोचन शास्त्री ने हिन्दी के साथ - साथ संस्कृत पढ़ना शुरू किया । उन्हीं के पड़ोस वाले गाँव में एक पण्डित देवदत्त रहते थे । त्रिलोचन को संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा उन्हीं से मिली । शास्त्री जी के गाँव में बसंत पंचमी से होली तक चौताल गाये जाते थे । हर चौताल के बाद उलारा गाया जाता था । उनके मन में कविता का संस्कार उसी को सुनते हुये पड़ा अर्थात् कविता उन्होंने लोक से सीखी, पुस्तक से नहीं । त्रिलोचन जी ने उर्दू अपने अध्यापक माजिद हसन खाँ से सीखी थी । भाषा का शुद्धता का संस्कार उन्हीं से ग्रहण किया । त्रिलोचन ने दादी से मीरा और कबीर के पद सुने थे । रामचरित मानस स्वयं पढ़ना शुरू किया , क्योंकि घर में उसकी प्रति थी ।

शास्त्री जी ने काशी में भी शिक्षा प्राप्त की, काशी के गुरु का नाम स्वतंत्र माध्यम संप्रदायाचार्य श्री दामोदर लाल शास्त्री था। बाद में उन्होंने बी.ए. तथा एम.ए. साहित्य - रत्न (पूर्वार्द्ध) अंग्रेजी साहित्य में बी.एच.यू. से किया ।

त्रिलोचन शास्त्री से गाँव की भोली - भाली लड़कियाँ और नौजवान और भी लोग अक्सर निजी पत्र लिखवाने आते रहते थे और वह बहुत सरस, बहुत अच्छे - अच्छे पत्र उनके लिये लिख देते थे । उनपर सबको बड़ा विश्वास था और हर चीज, हर बात, हर गीत, हर कविता, श्लोक और छंद वार्ताएं उन्हें सहज ही कंठस्थ हो जाती थीं ।

त्रिलोचन बहुत ही स्वाभिमानी व्यक्ति हैं और अपनी इस प्रकृति के कारण वो लगभग अकेले रहते हैं । पत्नी के साथ रहे हैं या अकेले रहते हैं किसी के साथ रहना उनको पसंद नहीं इससे उनकी कार्यशीलता पर प्रभाव पड़ता है ।

1. वर्तमान साहित्य - अगस्त - 92 - संपादक - विभूति नारायण राय, पृष्ठ-45

2. भाषा त्रैमासिक - सितम्बर - 1981 - संपादक - जगदीश चतुर्वेदी, पृष्ठ-99

त्रिलोचन अक्खड़ स्वभाव के व्यक्ति हैं । यह एक नेक दिल और साधु स्वभाव इंसान हैं । ज्यादातर तो वे कुर्ता - पायजामा ही पहनते हैं - पहले तो धोती कुर्ता पहना करते थे । शरीर मजबूत है, काठी मजबूत है, हड्डी मजबूत हैं । एकाध बीमारी के कारण मुखकृति में कुछ परिवर्तन हुआ है । पहले वे दाढ़ी - मूँछ नहीं रखते थे । अब वे दाढ़ी मूँछ रखते हैं । वे जैसे भीतर से हैं वैसे बाहर से भी प्रकट होते हैं। त्रिलोचन इस समय के एक बहुत समर्थ कवि हैं, इसमें तो अब किसी को संदेह नहीं है । त्रिलोचन जी बहुत ही दयालु एवं सबकी सहायता करने वाले व्यक्ति हैं । पैदल चलने का उन्हें बहुत अभ्यास था , शायद हिन्दी में सबसे अधिक पैदल चलने वाले लेखक त्रिलोचन हैं । त्रिलोचन आजादपुर मॉडल टाउन वाले मकान से पैदल यूनिवर्सिटी (दफ्तर) जाते और दिन - भर मुँह बाँधे रह कर सिर्फ चाय और पान पर सारा दिन काटते ।

दूसरों के मुँह से अपने बारे में चुप लगाये रखना लेकिन भीतर ही भीतर मगन रहना त्रिलोचन की खास अदा है । लिबास में (और काव्य में भी) इस तरह की सादगी कि अच्छों - अच्छों की सफेदी शरमा जाये । स्वभाव और लबाबों - लहजा ऐसा कि दूसरों को मुग्ध करता चले और नागवार गुजरने की भनक से कोसों दूर । आत्म सम्मान को जरा ठेस पहुँचे तो बस, तुनक मिजाजी ऐसा कि खुदा के घर भी न जायेगें बिन बुलाए हुए । त्रिलोचन घूमंतू कवि हैं ।

शास्त्री जी पूरा का पूरा निराला - काव्य जुबानी सुना सकते हैं, उन्होने कोशिश करके हिन्दी के शब्द - भण्डार पर गहरा हाथ मारा है, वे तत्सम, तद्भव, देशी - विदेशी काफी शब्दों का सही अर्थ और परिचय दे सकते हैं, उन्हें खड़ी बोली के अलावा अवधी के ग्राम्य - प्रयोगों का खासा अच्छा ज्ञान है, वे जर्मन, अंग्रेजी और फ्रेंच के शब्दों का सही उच्चारण अधिकारिक ढंग से बता सकते हैं, वे रामचरित मानस का पाठ करते हैं । पितृश्राद्ध में उनका विश्वास है । किस जमाने में संकट - मोचन में दैनंदिन हाजिरी दिया करते थे ।

वे खासे हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट हैं । वे अपनी जानकारी को गर्व की बात नहीं मानते । शास्त्री जी हिन्दी कविता के अधीत जानकार हैं उन्हें आदि - काल से लेकर सठोत्तरी कविता तक में रुचि है, वे "पृथ्वी राज रासो" ओर प्रयोगवाद पर समान रूप से बोल सकते हैं ।

त्रिलोचन की मातृ-भाषा भोजपुरी एवं खड़ी बोली व्यवहार की भाषा है । वे मूलतः स्थिरता के कवि हैं । त्रिलोचन हिन्दी भाषी अंचल की जातीय चेतना के कवि हैं । उदात्त और घनीभूत अनुभूति के साथ भी उनकी भाषा का स्वर बहुत ज्यादा नहीं बदलता । कविता का सम्पूर्ण स्वर सधा हुआ, छन्दानुशासन बहुत कसा हुआ और तटस्थ बना रहता है । त्रिलोचन अवधी भाषा के विद्वान हैं । अवधी वे खूब अच्छी तरह जानते हैं । और भाषा विज्ञान में अच्छी गति हैं ।

अवध के गांव में पैदा होने वाले इस कवि ने बचपन ही से जीवन की विषमताओं को नजदीक से जाना है । उसने गांव की जनता के लिये शिक्षा और संस्कृति के बन्द द्वार देखे । किशोरावस्था में ही उसे स्वयं अपनी शिक्षा को बीच में ही समाप्त कर देना पड़ा । युवावस्था में बहुत दिनों तक उसने दर-दर की ठोकें खायीं । परिवार से दूर रहते हुये उसके भीतर परिवार की ममता कौंधती रही । लेकिन बुरे दिनों से टूटा नहीं, बल्कि उसका मनोबल और भी दृढ़ हुआ । उसने गरीबी और अंधविश्वास के बीच मरती-जीती ग्रामीण जनता की मानवता को पहचाना और गांवों से दूर रहते हुये भी उसने उस मानवता को एक अक्षय प्रेरणा के रूप में अपने हृदय में सँजोये रखा ।

हिन्दी की देशज और प्रगतिशील कविता के चार-पांच बड़े कवियों में गिने-जाने वाले त्रिलोचन शास्त्री मनीषी और विद्वान की तरह बात करते हैं । जब संस्मरण सुनाते हैं तो जैसे विचार, दृश्य और कल्पना की एक नदी बहती दिखती है, हँसते हैं, तो मासूम बच्चे की तरह । सामने बैठकर बात करते व्यक्ति को वे जैसे सहसा उठकर आने चिंतन के घरातल पर ले आते हैं और उससे बराबरी का रिश्ता बना लेते हैं । संस्कृत, फारसी, हिन्दी, अवधी, अंग्रेजी में जो भी उद्धरण देते हैं उनमें विद्वता का बोझ न होकर चिन्तन की शान्ति और भारहीनता होती है जो तुरन्त आपके अनुभव का हिस्सा बन जाती है । किसी बच्चे को भी अपने बराबर ले आने का अद्भुत गुण है, जो उनकी पूरी पीढ़ी में रहा है । उनके साथ बैठ रहें और उन्हें सुनते रहें । वे कल्पना में अब काफी रहते हैं और कब कल्पना लोक से यथार्थ में आते हैं और कब यथार्थ से कल्पना लोक में जाते हैं— अगर आदमी इसके बारे में सावधान न हो तो उसे भ्रान्ति हो सकती है । उनमें एक कथाकार की प्रतिभा है । वे बहुत से संस्मरण सुनाते-सुनाते कहीं-कहीं अपनी ओर से संस्मरण रचते भी हैं ।

मार्क्सवादी कवियों में त्रिलोचन शास्त्री का विशिष्ट व्यक्तित्व है। इन्होंने अपने सृजन को सिद्धान्त की व्याख्या का माध्यम नहीं बनाया और न रचनाओं में सिद्धान्तों को प्रकट होने दिया, इस प्रकार वे, मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक होकर भी, अपने कवि को इस विचारधारा से अलग रखे हुये हैं। उनकी कविताएँ काव्यत्व के निकर्ष पर आस्वाद्य हैं भले ही वे पार्टी-साहित्य में स्वयं की गणना न करा पायें। त्रिलोचनजी के कवि व्यक्तित्व की दूसरी विशेषता है-परम्परा को स्वीकार कर प्रयोगों के लिये भी उदार अवकाश रखना। इनकी तीसरी विशेषता है-अपने कविकर्म के प्रति दीर्घ सूत्री वक्तव्य न देकर, रचना के माध्यम से ही अपनी रचना-धर्मिता के सम्बन्ध में प्रकाश डालना। त्रिलोचन के प्रिय कवि कबीर, तुलसी, गालिब और निराला हैं।

त्रिलोचनजी के चौताल को सुनकर 'द्विजद्वैनी' ने उन्हें लिखने के लिये उत्साहित किया। तब फिर उन्होंने लिखना प्रारम्भ किया। त्रिलोचन में बहुत क्षमता है और उन्होंने काफी पढ़ा है, लेकिन उन्हें काम करने के लिये जैसी परिस्थितियाँ चाहिए थी वैसी उन्हें सुलभ नहीं हुयीं और शायद यह स्थिति बहुत दिनों तक बनी रही।

त्रिलोचन ने आजीविका के लिए आज, जनवार्ता, समाज, प्रदीप चित्ररेखा, हंस और कहानी आदि पत्र-पत्रिकाओं में सहसंपादक का काम किया। एक अस्थिर पत्रकार का जीवन, कभी काम मिला, कभी बेकार। त्रिलोचनजी ने सन् 1930 से 35 में प्राइवेट शिक्षक पत्रकारिता का कार्य किया था और सन् 1939 से 41 तक 'कहानी' मासिक में बनारस में कार्य करते रहे।

उन्होंने सन् 43 से 50 तक 'हंस' तथा 'चित्ररेखा' मासिक पत्रिकाओं में, तथा ज्ञानमंडल काशी के वृहद हिन्दी कोष में कार्य किया। 1952 से 53 तक गणेशराय इंटर कालिज डोमी, जौनपुर में अंग्रेजी शिक्षक के रूप में कार्य किया। इसके अलावा वह समय-समय पर अनेक कोषों के सम्पादन में सहायक रहे। 1953 से 54 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के 'हिन्दी-अंग्रेजी मानक कोष' में सहायक रहें। 1954 से जून 1959 तक हिन्दी शब्द-सागर, संशोधित परिवर्द्धित संस्करण में कार्यरत रहें। 1959 में राँची के राष्ट्रीय प्रेस में प्रबन्धक के रूप में कार्य किया। 1960 से 1967 तक 'हिन्दी शब्द सागर' में कार्य किया। 1968 से 1972 तक विदेशी छात्रों को हिन्दी, उर्दू और संस्कृत पढ़ाते रहे। 1972 से 1975 तक

दैनिक 'जनवार्ता' के सहायक सम्पादक के रूप में बनारस में काम करते रहे । 1975 से 1978 तक 'हिन्दी ग्रन्थ अकादमी' में भाषा सम्पादक के रूप में भोपाल में कार्य किया । मई 1978 से मार्च 1984 तक दिल्ली विश्वविद्यालय उर्दू विभाग की उर्दू-हिन्दी द्विभाषिक कोष परियोजना में उनका कार्य है । 1978 में मंहगाई के जमाने में भी त्रिलोचन ने मात्र आठ सौ, हजार रुपये पर लगातार सात साल इस तरह काम किया कि चेहरे पर शिकन नहीं आने दी। न वेतन-मान की चिन्ता न वेतन वृद्धि का गम ¹।

28 मार्च 1984 से 28 जुलाई 1990 तक सागर विश्वविद्यालय (MOPTO) 'मुक्ति बोध-सृजन-पीठ' के अध्यक्ष रहे । यह अध्यक्षता स्थाई नहीं है । इसी बीच वह कविताएँ लिखते रहे । 11 नवम्बर से 31 मई 1992 ई0 में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में कार्यरत रहे ।²

पुरस्कार और सम्मान:- त्रिलोचनजी अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किये गये, परन्तु उन्हें इनका रंचमात्र भी दर्प अथवा अहं नहीं है । समय-समय पर मिलने वाले पुरस्कार इस प्रकार है:-

- (1) 1981 में साहित्य अकादमी पुरस्कार (कृति-'ताप के ताए हुए दिन')
- (2) 1983-84-उ0प्र0 हिन्दी संस्थान द्वारा सम्मान पुरस्कार ('दिगन्त' तथा 'गुलाब और बुलबुल' कृतियों पर)
- (3) 9 फरवरी 1990-हिन्दी कविता के लिए मध्य प्रदेश का ('मैथिलीशरण गुप्त सम्मान')
- (4) 1989-90-हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शलाका सम्मान (मार्च 1992 में प्रदत्त)³

रचनाओं का परिवेश:- शास्त्रीजी की रचनाओं में युगीन संस्कृति और परिवेश आकार पा सका है । सागर में रहते हुए त्रिलोचन शास्त्री ने बहुत सी नई कविताएँ लिखी हैं, जो सागर के पास बहने वाली एक प्राचीन नदी-जिसका उल्लेख कालीदास ने किया है — को लक्ष्य करके लिखी गयी हैं । इस प्राचीन नदी का नाम था, दशार्ण । इसलिए

1. वर्तमान साहित्य-अगस्त 1992, विभूति नारायण राय, पृष्ठ-45
2. वहीं.
3. वर्तमान साहित्य-अगस्त 92-विभूति नारायण राय, पृष्ठ-45

आपने अपने नये संग्रह का नाम सोचा है:- 'दशार्ण की कविताएँ' । इनकी प्रकाशित काव्य रचनाएं इस प्रकार हैं:-

1. 'धरती' (काव्य संग्रह)
2. 'गुलाब और बुलबुल' (गजल और सॉनेट)
3. 'दिग्गन्त' (सॉनेट)
4. 'ताप के ताए हुए दिन' (सॉनेट)
5. 'शब्द' (सॉनेट)
6. 'उस जनपद का कवि हूँ' (सॉनेट)
7. 'अरघान' (काव्य संग्रह, सॉनेट)
8. 'तुम्हें सौपता हूँ' (काव्य संग्रह, सॉनेट)
9. 'अनकहनी भी कुछ कहनी है' (सॉनेट)
10. 'फूल नाम है एक' (सॉनेट)
11. 'प्रतिनिधि कविताएँ'-त्रिलोचन (स. केदार नाथ सिंह)
12. 'देश काल' (कहानी - संग्रह)
13. 'सबका अपना आकाश' (काव्य संग्रह)
14. 'चैती' (काव्य संग्रह)
15. 'अमोला' (काव्य-संग्रह)
16. 'मुक्ति बोध की कविताएँ' : संपादन (साहित्य अकादमी, दिल्ली)
17. 'रोजनामचा' (डायरी)

1. 'धरती':-

त्रिलोचन का पहला कविता संग्रह 'धरती' 1945 में प्रकाशित हुआ था, दूसरा संस्करण 32 साल बाद निकला । त्रिलोचन की आरम्भिक पहचान 'धरती' संग्रह से बनी, जिसने अनुभूतियों की संयमित अभिव्यक्ति के लिये पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया । साथ ही विस्तृत जीवन के काव्यात्मक आंकलन के लिये वे सराहे गये । 'धरती' में छायावादी कल्पना के माध्यम से नये समाज का सामाजिक स्वप्न है ।

2. 'गुलाब और बुलबुल':-

'गुलाब और बुलबुल' नवम्बर 1956 में प्रकाशित हुआ । प्रस्तुत संग्रह में गजलों और रूबाइयों और सॉनेट हैं । त्रिलोचन ने गजल, रूबाई, सॉनेट - जैसे हिन्दीतर कविता

के क्लासकीय काव्य रूपों में भी कविता रची है और हिन्दी के नये - पुराने काव्य रूपों तथा छंदों में भी । इनमें प्रेमपरक रचनाएँ अधिक हैं । परन्तु जीवन के अन्य पक्षों को भी यहाँ छोड़ा नहीं गया है ।

3. 'दिगन्त':-

'दिगन्त' का प्रकाशन जनवरी 1957 में हुआ था । 26 साल बाद इसका दूसरा संस्करण निकला था । 'दिगन्त' में सौनेट हैं । ये प्रगतिवादी चिंतन से बंधे नहीं हैं । शास्त्री जी की प्रशस्ति की मूल हेतु 'धरती' है । कवि 'धरती' से 'दिगन्त' तक पहुंचा है । निश्चय ही प्रगति के इन तीनों चरणों में कवि का व्यक्तित्व बढ़ा, पनपा और उजागर हुआ । 'दिगन्त' के सौनेटों में उनके जीवन के चरित्र अधिक हैं । इसके बाद 23 साल तक खामोशी । कवितायें तो लिखते रहे, संकलन छपने की नौबत न आयी ।

4. 'ताप के ताए हुए दिन':-

लम्बे अन्तराल के बाद 1980 में त्रिलोचन का काव्य संग्रह 'ताप के ताए हुए दिन' प्रकाशित हुआ । इधर के संग्रहों ने त्रिलोचन के महत्त्व को प्रतिष्ठा दी जो पहले सम्भव नहीं हुयी थी । 1981 में 'ताप के ताए हुए दिन' कविता संग्रह पर 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला । अब तो त्रिलोचन के घर पर प्रकाशक आने लगे थे ।

5. 'शब्द' :-

'शब्द' काव्य संग्रह का प्रकाशन सन् 1980 में हुआ था ।

6. 'उस जनपद का कवि हूँ':-

'उस जनपद का कवि हूँ' काव्य संग्रह सन् 1981 में प्रकाशित हुआ ।

7. 'अरघान':-

त्रिलोचन शास्त्री का काव्य संग्रह 'अरघान' 1983 में प्रकाशित हुआ ।

8. 'तुम्हें सौंपता हूँ':-

प्रस्तुत कविता संग्रह सन् 1985 में प्रकाशित हुआ ।

9. 'अनकहनी भी कुछ कहनी है':-

'अनकहनी भी कुछ कहनी है' कविता संग्रह सन् 1985 में प्रकाशित हुआ ।

10. 'फूल नाम है एक':-

प्रस्तुत संग्रह भी सन् 1985 में प्रकाशित हुआ ।

11. 'प्रतिनिधि कविताएँ' – त्रिलोचन :-

इसके सम्पादक केदार नाथ सिंह हैं । इसका प्रकाशन 1985 में हुआ है ।

12. 'देश काल' :-

'देश काल' एक कहानी संग्रह है। इसका प्रकाशन सन् 1986 में हुआ था ।

13. 'सबका अपना आकाश' :-

'सबका अपना आकाश' का प्रकाशन 1987 में हुआ था ।

14. 'चैती' :-

'चैती' का प्रकाशन 1987 में हुआ ।

15. 'अमोला' :-

'अमोला' त्रिलोचन का अन्तिम काव्य – संग्रह है । इसका प्रकाशन 1990 में हुआ ।

16. 'मुक्तिबोध की कविताएँ' :-

'मुक्तिबोध की कविताएँ' का संपादन साहित्य अकादमी, दिल्ली से हुआ था । इसका प्रकाशन 1991 में हुआ था ।

17. 'रोजनामचा' :-

'रोजनामचा' त्रिलोचन शास्त्री की डायरी है । इसका प्रकाशन 1993 में हुआ ।

त्रिलोचन जी के चौताल को सुनकर "द्विजदैनी" ने उन्हें लिखने के लिये उत्साहित किया । तब फिर इन्होंने लिखना प्रारम्भ किया । 1932 तक उन पर छाया वादी प्रभाव रहा फिर वे उनकी लिखने की शैली बन गयी । 1935 में उन्होंने गद्यात्मक कविताएँ लिखीं । त्रिलोचन ने कविता , सॉनेट , गजलों , गीत , चतुष्पदियों , बरवै , कहानी , एकांकी काव्य – नाटक और डायरी – सब पर अपनी समर्थ लेखनी चलाई है ।

आपका आरम्भिक विकास उस दौर में हुआ जब छायावाद समाप्ति की ओर था , और प्रगतिवाद के लिये जमीन तैयार हो रही थी । हिन्दी कविता के एक युग से दूसरे युग में संक्रमण के उस दौर के आप साक्षी रहे हैं । बनारस संस्कृत पढ़ने के ख्याल से गये थे । बनारस में जब प्रगतिशील लेखक संघ का गठन हुआ तो उसके लिये आपने भी काम किया , सागर में आपका जीवन निस्संग होने के कारण आपने अपना काम किया ।

त्रिलोचन ने गद्य कम लिखा है। उन्होंने अनेक कथा - कविताएँ लिखीं हैं। उन्होंने शुरूआत रूमानी कविताओं से की थीं, फिर धीरे - धीरे भारतीय जनता खासकर भारतीय किसानों के जीवन को समझने की कोशिश की। उनकी कविता में एक दर्प है, और वह संघर्ष में लगी हुयी जनता का दर्प है। अक्सर त्रिलोचन अपनी बात वेद और बाल्मीकि से शुरू करते हैं। वे संस्कृत के विद्वान हैं। जो विषमताएँ उनके जीवन में दिखाई देती हैं, वे उनकी रचनाओं में भी प्रच्छन्न रूप से विद्यमान हैं। ऊपर से देखने में कवितायें ऊबड़ - खाबड़ मालूम होती हैं, लेकिन अनुभव की विविधता के कारण, वह अत्यंत आकर्षक हैं।

व्यक्ति के रूप में ही नहीं, त्रिलोचन कवि के रूप में भी विचलित करते हैं। उनकी कविता लोक - जीवन के निकट की कविता है। अवधी जीवन के अनेक प्रसंग उनकी कविताओं में स्पष्ट दिखाई देते हैं। अवधी जीवन के अनेक शब्दों का प्रयोग त्रिलोचन ने पहली बार किया है। त्रिलोचन अकेले कवि हैं जिनकी रचनाओं में अपने जनपद का दुख - सुख, विसंगतियाँ, प्रमाणिकता से अभिव्यक्त हुई हैं।

धक्काखाने वाले, पीड़ित, दुखी और रोटी के लिये परेशान लोग त्रिलोचन की कविताओं के स्थाई भाव हैं। भोले - भाले किसान और पूर्ण सर्वहारा गाँवों के श्रमिकों का जीवन और जीवनानुभव से प्राप्त जीवन और जगत सम्बन्धी बातें और उनकी संवेदना को निर्मित, विकसित उनकी अभिव्यक्ति और सक्षम बनाती है।

छायावाद के बाद वाली पीढ़ी के कवियों में त्रिलोचन शास्त्री जैसे काव्य - विद ओर शास्त्रप्रज्ञ कवि बहुत कम हुये हैं। त्रिलोचन की कविता शास्त्रों से नहीं बल्कि जीवन से मिली है। इसलिये जहाँ एक ओर उनके शिल्प की आर्षता है, वहाँ दूसरी ओर उनके स्वर पूरी तरह आधुनिक भी हैं।

त्रिलोचन की कविता में हिन्दू जाति की संघर्षशील चेतना की जड़ों को सींचा है और ये जड़ें अतीत के साहित्य में बहुत गहरे फैली हुयी हैं। उनमें सृजन की अपार शक्ति है। और गहराई को छूने, मर्म को सांस्कृतिक अर्थ में पकड़ने की सहज क्षमता है। त्रिलोचन शास्त्री ने अपनी कविताओं में स्वानुभूत जीवन स्थापित किया है।

त्रिलोचन सूक्ष्म पर्यवेक्षण के कवि हैं। केदारनाथ अग्रवाल, गिरिजाकुमार माथुर, भवानी प्रसाद मिश्र आदि नये उठते हुये कवियों में त्रिलोचन का स्थान

महत्त्वपूर्ण है । भाव और टेकनीक दोनों की दृष्टि से त्रिलोचन की कविता एक ठेठ भारतीय – जन की कविता है । यह आदमी अब भी एक समर्पित व्यक्ति है – एक गहरे अर्थ में अब भी आस्थाशील है । इसके पास आस्था की, अनुराग की और मानव – करुणा की विनयशीलता है । अवध प्रदेश के सामान्य परिवारी व्यक्ति हैं । जीवन के आर्थिक अभाव और परिणाम को भोगा है, इसलिये रचनाओं में कृत्रिमता न होकर अनुभूतिक निष्ठा है । शास्त्री जी की भाषा में अभी भी पुराने संस्कारों का अवशेष है । उनका जीवन पत्रकारिता के परिवेश में बीता है, इसलिये स्पष्टवादिता भी है ।

भूख, उपवास और बेरोजगारी पर जैसी अनुभूति – तीव्रता त्रिलोचन की कविताओं में है, वैसी अन्य किसी प्रगतिशील कवि में नहीं । त्रिलोचन निराला के बाद और उन्हीं की परम्परा में आने वाले बहुत ही समर्थ कवि हैं । वह उस संधि पर खड़े हैं, जहां से प्रगतिवादी और प्रयोगवादी आन्दोलन एक – दूसरे से अलग होते हैं ।

त्रिलोचन प्रगतिवाद के सशक्त कवि हैं । उनकी कविताओं में एक ओर सादगी विद्यमान है तो दूसरी ओर मिट्टी की सोंधी गंध भी । इनकी कविता कहीं भी अपने औसत घरातल से नीचे नहीं उतरी है । इनकी कविता आकार में छोटी है परन्तु प्रभाव में तीव्र है । चूंकि त्रिलोचन ने व्यावहारिक जीवन में स्वयं संघर्ष किया है, इसलिये उनकी कविताओं में दैन्य अभाव और संघर्ष का यथार्थ चित्रण हुआ है । इनकी कविता संघर्ष-जन्य अटूट विजय भाव और शक्ति से परिपूर्ण है । कवि ने मानव के रागात्मक पक्ष का बराबर ध्यान रखा है, पर कहीं – कहीं इनकी कविता बौद्धिकता के आधिक्य के कारण रूखी और वेगहीन हो गयी है ।

त्रिलोचन जी की शब्द – साधना यह है कि उन्होंने अपनी कविता के लिये कोई नई भाषा नहीं गढ़ी बल्कि पहले से मौजूद जीवित भाषा को उसकी जीवन्तता में ग्रहण किया । उस भाषा में उन लोगों को अपने आप बोलने दिया जिन्हें अभी तक बोलने का मौका नहीं मिला था ।

त्रिलोचन के काव्य संसार को और व्यापक तौर पर पाने के लिये धरती के जन से उसके जन – रागों से जुड़ना जरूरी है । त्रिलोचन जैसा मोटा, झोटा पहनने वाले, चना चबेना खाने वाले आदमी हैं वैसा ही उनका राग भी, त्रिलोचन के शरीर के कम बल को देखकर आज के रचनाकार की तस्वीर तो नहीं, भारतीय परम्परा के किसान की तस्वीर

जखर कौंध जाती है । जिसने जीवन में सब कुछ सहा है और भोगा है ।

सॉनेट जैसे विजातीय ऐचें – बैचें काव्य रूप को अपनी जन परम्परा में ढालने का काम त्रिलोचन जैसे साधक रचनाकार के ही बूते की बात है, क्योंकि जैसा जातीय जन की बानी और पानी है वैसा ही ओज और राग का समिश्रण इस प्रकार से किया है कि सॉनेट जैसा विजातीय छंद जातीय छंद बनकर, हिन्दी कविता की एक निधि बन गया है।

छायावादोत्तर युग के हिन्दी कवियों में चतुर्दशपदी – काव्य विधा की दृष्टि से त्रिलोचन शास्त्री सर्वाधिक गौरव के अधिकारी हैं । उन्होंने इस दिशा में सर्वाधिक सफल यात्रायें की हैं । त्रिलोचन जी हिन्दी में "सॉनेट" के एक तरह से पर्याय ही बन गये हैं। शास्त्री जी मार्क्सवादी कवि होते हुये भी एक विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी हैं ।

त्रिलोचन शास्त्री ने 1935 में सॉनेट लिखना प्रारम्भ किया और 1940 तक लिखते रहे, फिर छूट गये और तकरीबन 9 वर्ष के अंतराल के बाद सन् 1949 में फिर सॉनेट लिखे जो 1955 तक लिखते रहे और फिर 1962 में सॉनेट लिखे । इसके बाद सन् 1975 में थोड़े बहुत, और फिर बाद में कुछ नहीं लिखा । सॉनेटों के लिये त्रिलोचन अधिक जाने गये¹ ।

हिन्दी में सॉनेट लोचन प्रसाद पाण्डे, जय शंकर प्रसाद ने लिखे । इसके अतिरिक्त नरेन्द्र शर्मा, बच्चन फिर बाद को निराला ने भी सॉनेट लिखे ।

पिछले 50 वर्षों से त्रिलोचन की साहित्य – साधना अभिराम चल रही है ।

वस्तु और शिल्प दोनों दृष्टियों से – कवि त्रिलोचन की रचनाओं में क्रमशः विकास मिलता है, शैली आघात सरल और सुबोध है । छायावादी शैली में कुछ रचनायें अपवाद हैं । कवि में कल्पना की शक्ति है । वातावरण का चित्रण कने में कवि को सफलता मिली है । अधिकांश रचनायें मुक्त छंद में हैं । अनेक रचनाओं में संगीत और लय का ध्यान भी रखा गया है । काव्य रूपों के प्रति भी उन्होने प्रयोग किये हैं । उर्दू की गजलों और रूबाइयों की आत्मा हिन्दी की है । त्रिलोचन के सॉनेट (चतुर्दशपदी) नये काव्य प्रयोग में अपना स्थान रखते हैं ।

अध्याय - 2

चतुर्दशपदी काव्य स्वरूप विश्लेषण

अध्याय - 2

चतुर्दशपदी काव्य स्वरूप विश्लेषण

प्रस्तावना :-

साहित्य जीवन और जगत की सौन्दर्यमयी शब्दसृष्टि है । यों तो जीवन और जगत के दृश्य सभी देखते हैं, पर कवि जब अपनी कल्पना और अनुभूति पर पड़े उसके प्रभाव को अभिव्यक्ति देता है तब उसके संस्कार विशेष के रंगों से वे ओत - प्रोत होते हैं । अतः वह उसका निजी अभिव्यक्ति स्वरूप प्रकट होते हैं ।

काव्य निराकार पदार्थों, भावों और विचारों को साकार और सजीव बनाता है ।

जीवन - जगत और सत्य के किसी स्वरूप का आकर्षक और सजीव चित्रण काव्य का अभिधान ग्रहण करता है। वह रमणीय अर्थ को प्रकट करने वाली एक शब्द-कला है।¹ कल्पना और अनुभूति से प्रेरित विचारों की सजीव, आकर्षक, स्मरणीय और प्रभावरूपी अभिव्यक्ति है ।

उत्कृष्ट कला के साथ काव्य एक रचना है, सृजन है । इसका सम्बन्ध विश्लेषण, तर्क बुद्धि से उतना नहीं जितना सृजनात्मक या रचनात्मक प्रतिभा से है। काव्य प्रतिभा सम्पन्न मानव की शब्दगत सुधर सृष्टि है, इसी से ये साहित्य के समस्त रूपों की अपेक्षा अधिक रोचक होती है । कभी - कभी साहित्य शब्द का प्रयोग भी काव्य के अर्थ में होता है ।

काव्य बाह्य जगत के साथ साथ हमारे भीतर के मानस जगत का भी चित्रण प्रस्तुत करता है और उसके द्वारा अन्तस् के रहस्य का उद्घाटन करता है । अतः काव्य का बड़ा प्रभाव है ।

स्वरूप और गुण के आधार पर काव्य के अनेक भेद होते हैं । (1) इन्द्रिय आधार और (2) काव्य वस्तु के ग्रहण में साहित्यकार का निजी दृष्टिकोण ।

1. रमणीयार्थ : प्रतिपादक : शब्द : काव्यम् - रस गंगाधर - पण्डित राज जगन्नाथ

1. इन्द्रिय आधार पर काव्य के दो भेद होते हैं -
 1. दृश्य काव्य
 2. श्रव्य काव्य
2. वस्तु के ग्रहण में साहित्यकार का निजी दृष्टिकोण के आधार पर भी काव्य के दो भेद होते हैं -
 1. विषयी प्रधान काव्य
 2. विषय प्रधान काव्य ।

1. विषयी प्रधान काव्य का सम्बन्ध व्यक्ति से होता है ।

2. विषय प्रधान काव्य का सम्बन्ध वस्तु से रहता है ।

विषयी प्रधान काव्य में गीति - प्रगीत काव्य आते हैं और विषय प्रधान काव्य में नाटक जैसी विधाएं आते हैं ।

"प्रगीत काव्य से हमारा तात्पर्य उस लघु कविता से है जिसमें कवि के निजी विचार अथवा भाव भी अभिव्यंजित होते हैं ।" ¹

कविता में जब कवि की दृष्टि विषयी प्रधान होती है, तो प्रगीत काव्य का जन्म होता है ।

प्रगीत के अनेक भेद किये जा सकते हैं । आकारगत सौन्दर्य के आधार पर इसके अनेक भेद हैं -

1. सॉनेट (Sonnet)
2. ओड (Ode)
3. ऐलिजी (Elegy)

यहाँ हमें प्रगीत काव्य के सॉनेट (चतुर्दशपदी) नामक काव्य रूप का अध्ययन और विश्लेषण अभीष्ट है ।

1. आधुनिक हिन्दी कविता और विदेशी काव्य - रूप - डॉ. एस. नारायण,
पृष्ठ 4

चतुर्दशपदी (सॉनेट) : प्रकृति एवं स्वरूप :-

हिन्दी में सॉनेट अंग्रेजी परम्परा से आया है। हिन्दी का "चतुर्दशपदी" शब्द अंग्रेजी भाषा के "सॉनेट" (Sonnet) शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। अंग्रेजी भाषा का भी यह शब्द अपना मौलिक नहीं है। वहाँ भी यह यूरोप महाद्वीप की "इतालवी" (Italian) भाषा से लिया गया है। अंग्रेजी साहित्य में भी इस विधा को सबसे पहले सोलहवीं शती के पूर्वार्द्ध में सर टॉमस वायट (Sir Thomas Wyatt) और हेनरी होवार्ड (Henry Howard) ने प्रचलित किया था। सर टॉमस वायट (1503-42) और हेनरी होवार्ड (1516-47) "द अर्ल आव सरे" नामक दो साहित्यिक राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने कूटनयिक उद्देश्यों से इटली की यात्राएँ की थीं। सर टॉमस वायट अपनी इटली की यात्राओं के समय पैट्रार्क (Petrarch) के काव्य साहित्य के सम्पर्क में आये और उससे बहुत अधिक प्रभावित हुये। इन कूटनयिक साहित्यकों ने अपने देश इंग्लैंड में आकर इस विधा के अनुरूप ही कविता लिखनी प्रारम्भ कर दीं। अतः सर वायट इस विधा से प्रभावित होकर इसे इंग्लैंड में लेकर आये और सरे के अर्ल ने अपनी काव्य-गत कला से इसे सजा संवार कर समुन्नत रूप प्रदान किया। तभी से अंग्रेजी साहित्य में चतुर्दशपदी कविता का श्रीगणेश हुआ।

"चतुर्दशपदी" कविता के उद्गम स्थान में अनेक विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वानों का कहना है कि चतुर्दशपदी का उद्गम स्थान इटली है, जबकि कुछ के अभिमत में सिसली। सॉनेट का उद्भव और विकास सिसली की "स्ट्रेम्बोटो" (Strambotto) नामक एक लोक कविता से हुआ है। सिसली की "स्ट्रेम्बोटो" नामक आंचलिक कविता की मुख्य विशेषता उसकी परिवर्तित तुक बंध है। यह कविता अपनी इस मुख्य विशेषता के लिए मुख्य रूप से जानी जाती थी। तेरहवीं शताब्दी में दो उत्साही साहित्यिक हुये जो ज्योकोमो डी. लैटिनो (Giacomo di Lantino) और ज्याटोनी डी. अरेजो (Guittone di arezzo) के नाम से जाने जाते थे। इन दोनों उत्साही साहित्यिकों ने इस लोक-कविता के तुकबंध और छंदोबंध के रूप को एक नया और निश्चित रूप देने का प्रयास किया। कहने की आवश्यकता नहीं कि

इसी से सॉनेट का मार्ग प्रशस्त हुआ । अभी यह लोक - कविता पूरी तरह से एक अलग विधा नहीं हो पाई थी कि इसे एक अलग विधा का नाम देने का काम दाँते (Dante) और पेट्रार्क (Petrarch) जैसी दो महान् प्रतिभाओं ने किया, जिनके कारण यह नई विधा अपना अलग स्थान बना सकी । अतः हम सिसली (Sicily) और प्रोविन्स (Provence) दोनों को ही सॉनेट का सम्भावित उद्गम स्थान मान सकते हैं परन्तु हम इतना कह सकते हैं कि सॉनेट नामक इस विधा का सर्व प्रथम उन्नत साहित्यिक स्वरूप तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इतालवी साहित्य में प्राप्त होता है । आलोच्य विधा का विकसित रूप भले ही इतालवी साहित्य से प्राप्त होता है परन्तु इसके विकास का श्रेय पेट्रार्क को ही जाता है ।¹

"सॉनेट (चतुर्दशपदी) शब्द की व्युत्पत्ति इतालवी भाषा के "सॉनेटों" (Sonnetto) शब्द से हुई है ।"²

ऐंसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका के मतानुसार सॉनेट शब्द का मूल अर्थ होता है— A Little Sound or Strain³ - अर्थात् शब्दों की ऐसी रचना जिसे किसी विशिष्ट वाद्यसंयंत्र के सहकार से गाकर प्रस्तुत किया जा सके ।

ऐंसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना में सॉनेटों शब्द का अर्थ - Little Song⁴ अर्थात् "लघु गीत" कहा गया है । इसमें सॉनेट को प्रगीत का एक ऐसा अत्यंत लोकप्रिय भेद माना है जिसमें गम्भीर एवं सार्वभौम संवेदनाओं की सफल अभिव्यक्ति की पूर्ण क्षमता होती है -

"One of the most popular forms of lyric poetry, consisting of fourteen lines of iambic pentameter in English or iambic hexameter in French, Despite its brevity of form the sonnet is capable of presenting deep and universal in - sight."⁵

1. आधुनिक हिन्दी कविता और विदेशी काव्य रूप - डॉ. एस. नारायण, पृ. 46
2. वही
3. ऐंसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका - वॉल्यूम-xxv पृ. 394
4. ऐंसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना
5. ऐंसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना

चतुर्दशपदी कविता के विषय में ऐंसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना के उपर्युक्त प्रतिपाद्य को हम निष्कर्ष रूप में इस तरह से जान सकते हैं -

1. सॉनेट - प्रगीत - काव्य का एक मुख्य प्रभेद है ।
2. सॉनेट चौदह पंक्तियों की कविता होती है ।
3. यह पंक्तियाँ अंग्रेजी कविता में आयाम्बिक पेंटामीटर में होती हैं लेकिन फ्रेंच में आयाम्बिक हैक्सामीटर में ।
4. इसका आकार सीमित होता है ।
5. सॉनेट अपने गम्भीर भावों और सार्वजनीन विचारों को अभिव्यक्त करने में सक्षम होती है ।

"A decasyllabic poem of fourteen lines."¹

अर्थात् चौदह पंक्तियों की ऐसी कविता जिसकी प्रत्येक पंक्ति में 10 सिलेबिल हों, सॉनेट होती है ।

एम.एच.अब्राम्स (M.H.Abrams) ने सॉनेट को ऐसा प्रगीत माना है जिसमें चौदह पंक्तियाँ एक ही बंध में निबद्ध हों और जिसकी प्रत्येक पंक्ति आयाम्बिक पेंटामीटर एवं जटिल तुक बंध से परिपूर्ण हों । एम.एच. अब्राम्स के शब्दों में -

"A lyric poem written in a single stanza, which consists of fourteen iambic pentameter lines, linked by an intricate rhyme scheme."²

अर्थात् उलझाव भरे तुकबंध से शिल्पित चौदह आयाम्बिक पेंटामीटर पंक्तियों में निबद्ध लघु प्रगीत ही चतुर्दशपदी होता है ।

डॉ. ब्रजाधीश प्रसाद ने चतुर्दशपदी को ऐसी लघु कविता कहा है जिसकी चौदह पंक्तियों में एक ही भाव अथवा विचार की अभिव्यक्ति होती है -

1. Popular Oxford Encyclopaedic illustrated Dictionary.
2. A Glossary of Literary Terms - M.H. Abrams, P.159

"Sonnet is a short poem of fourteen lines expressing one single thought or feeling".¹

अंग्रेजी साहित्य में कुछ कविताएं भी सोलह पंक्तियों में लिखी गयी हैं जो जार्ज मेरेडिथ के मॉडर्न लव (Modern Love 1982) नामक संग्रह में संग्रहीत हैं। उनकी यह सभी कविताएं एक निश्चित क्रम में हैं और सोलह पंक्तियों के एक ही छंद में निबद्ध हैं, जो चतुर्दशपदियों की सभी विशेषताओं से अनुस्यूत हैं। इन्हें भी इसी अभिधान से अभिहित किया गया है।²

चतुर्दशपदी के सम्बन्ध में हमने अब तक जितना जाना है, उसके आधार पर निम्नलिखित बातें सामने आती हैं -

1. चतुर्दशपदी प्रगीत काव्य, काव्य का एक भेद होते हुये भी पाश्चात्य साहित्य में अपनी एक अलग विधा के रूप में पहचान बना चुका है।
2. चतुर्दशपदी में एक ही भाव और विचार की अभिव्यक्ति होती है लेकिन अभिव्यक्ति में वैविध्य रहता है।
3. चतुर्दशपदी की संरचना में एक ही छंद - बंध प्रयुक्त होता है जिसके तुक - बंध में जटिलता होती है।

चतुर्दशपदी कविता के विधायक तत्व :-

चतुर्दशपदी कविता में निम्नलिखित स्वरूपाधायक तत्व मुख्य रूप से पाये गये हैं -

1. भावावेग की प्रखरता :-

चतुर्दशपदी कविता में आदि से अन्त तक एक ही भाव अथवा विचार अभिव्यंजित होता है। चतुर्दशपदी में अभिव्यक्ति विचार भी भावपर्यवसित होकर ही गृहीत होता है। विचार को भाव रूप धारण करने के लिये यह अपरीहार्य है कि उसमें, आवेग की प्रखरता और तीव्रता हो। आवेग की प्रखरता और तीव्रता के अभाव

1. A background to the study of English Literature-
Dr. B. Prasad, P. 13
2. A Glossary of Literary Terms-M.H. Abrams, P. 161

में चतुर्दशपदी की संरचना बिगड़ जायेगी । भावावेग की प्रखरता और तीव्रता चतुर्दशपदी का प्रमुख अंग है । इसमें जैसी भाव प्रखरता और तीव्रता होती है वैसी अन्य विधा में मिलना कठिन है । इसलिये डी.जी. रोसेटीने आलोच्य काव्य रूप को "एक क्षण का स्मारक" बताते हुये लिखा है :-

"A sonnet is moments monument memorial from the soul's eternity, to one dead and death-less hour."¹

इस स्मारक की रूप - संरचना में निश्चित आंतरिक एक रूपता के होते हुए भी अंतर्निर्मित मानवीय विचार और अनुभवों के घरातल भाव - प्रखरता के कारण ही सार्वभौमिक महत्व के होते हैं ।

2. भावान्विति :-

चतुर्दशपदी कविता का दूसरा मुख्य तत्त्व भावान्विति है । इसके अभाव में चतुर्दशपदी की कल्पना करना व्यर्थ सा लगता है । यदि भावों और विचारों में एक श्रृंखला नहीं होती, तो कविता तलस्पर्शी और मर्म को छूने वाली नहीं होती है । अतः चतुर्दशपदी में विषय वस्तु के रूप में अभिव्यंजित भाव एवं विचार में एक सूत्रता होनी चाहिए । अतः उसमें भावों की अन्विति अपरिहार्य मानी जाती है । कवि को अपने भावों और विचारों में इतना निमग्न एवं सजग होना चाहिए कि कहीं भी यह टूटने न पाये । इसलिये कवि को इसमें जागरूकता अपनानी चाहिए । इससे कविता का प्रभाव सघन तलस्पर्शी एवं मर्म को छूने वाला बन जाता है ।

3. कलात्मक अभिव्यंजनारूप :-

चतुर्दशपदी कविता का तीसरा प्रमुख तत्त्व कलात्मक अभिव्यंजना है । इसमें कवि को कम शब्दों में बहुत कुछ कहना होता है । चतुर्दशपदी में "गागर में सागर"

1. The collected works of D.G.Rossetti Vol.1 P.173
London, 1890

वाली उक्ति चरितार्थ होती है ।

चतुर्दशपदी कविता अभिव्यंजना का एक ऐसा अनोखा स्वरूप है, जिसके लिये अद्भुत कलात्मक ज्ञान का होना बहुत जरूरी है । इसमें कवि को सूझ - बूझ से काम लेना चाहिए । कवि को अपने भावों और विचारों को बीच में बाधित नहीं होने देना चाहिए । उसे इस प्रकार से एक सूत्र बांधना चाहिए कि वह दो भागों में विभक्त होते हुये भी एक हो और एक ही भाव पूरी चतुर्दशपदी में परिव्याप्त रहे । अतः हम कह सकते हैं कि चतुर्दशपदी की रचना करने के लिए कवि को मानव हृदय का पूर्ण और सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त होना चाहिए ।

4. नियत आकार :-

"चतुर्दशपदी" का चौथा तत्व निश्चित आकार है । एक निश्चित आकार में कवि को सब कुछ कहना होता है । प्रगीत के जो अन्य भेद हैं, कवि उनके माध्यम से अपने भावों और विचारों को स्वतंत्र रूप में प्रकट कर सकता है लेकिन चतुर्दशपदी में कवि को चौदह पंक्तियों में ही सब कुछ कहना होता है । अपने भावों और विचारों को कवि न तो चौदह पंक्तियों से कम में कह सकता है और न चौदह पंक्तियों से अधिक में कह सकता है । कवि को एक निश्चित सीमा में बंध कर ही अपने भावों और विचारों को अभिव्यंजित करना होता है । अतः कवि को एक कठिन अनुशासन में रहना पड़ता है ।

5. साँगीतिकता -

चतुर्दशपदी का अन्तिम और पांचवा तत्व साँगीतिकता है । जैसा कि प्रारम्भ में कहा जा चुका है कि हिन्दी का चतुर्दशपदी शब्द अंग्रेजी के सॉनेट से लिया गया है । इसका निर्माण इतालवी के सॉनेटों से माना जाता है । जिसका मूल अर्थ है - शब्दों की ऐसी रचना जो किसी विशेष प्रकार के वाद्ययंत्र की सहायता से गायी जा सके । इटली में इन गीतों को प्रायः पियानो की संगति से गाया जाता था । अतः साँगीतिकता के अभाव में चतुर्दशपदी की कल्पना करना भी बेमानी सी जान पड़ती है ।

अतः हम कह सकते हैं कि चतुर्दशपदी में यह सभी तत्व होने अनिवार्य हैं। अगर एक भी तत्व कम होगा तो इसका पूरा रूप उभर कर सामने नहीं आ पायेगा और हम इसे पूर्ण रूप में चतुर्दशपदी नहीं कह सकते ।

यदि हम इसके तत्वों को दृष्टिगत करते हुये इसे एक परिभाषा का रूप देना चाहें तो डॉ. एस.नारायण के स्वर में स्वर मिलाते हुये इस प्रकार समझ सकते हैं :-
"चतुर्दशपदी एक ऐसा काव्य - रूप जिसमें एक निश्चित आकार में सभी रचनात्मक प्रतिबन्धों से अनुशासित बंध में केवल एक ही भाव अथवा विचार की अभिव्यंजना की जाती है ।" ¹

चतुर्दशपदी के भेद :-

उसकी आंतरिक संरचना के आधार पर चतुर्दशपदी कविता को हम दो रूपों में विभाजित कर सकते हैं -

1. इतालवी चतुर्दशपदी रूप (Italian Sonnets)
2. आंग्ल चतुर्दशपदी रूप (English Sonnets)

1. इतालवी चतुर्दशपदी रूप (Italian Sonnets) :-

इतालवी चतुर्दशपदी को इटली के महान कवि पेट्रार्क के नाम से भी जाना जाता है । इसलिये इतालवी चतुर्दशपदी में पेट्रार्क के नाम पर "पेट्रार्कन चतुर्दशपदी" के रूप में अभिहित किया गया है । इस नाम से पहचान पाने का मुख्य कारण यह है कि पेट्रार्क ने इस विधा के माध्यम से अपने काव्य का सृजन किया और लोक में इसे ख्याति दिलाई । चतुर्दशपदी का यह रूप यूरोपीय देशों में मॉडल के रूप में अपनाया गया । अतः इसको "क्लासीकल सॉनेट" (Classical Sonnet) भी कहते हैं । इस प्रकार से हम इतालवी चतुर्दशपदी को "पेट्रार्कन", "इतालवी" और "क्लासीकल" तीन नामों से जान सकते हैं । यह तीनों नाम इतालवी चतुर्दशपदी के हैं ।

1. आधुनिक हिन्दी कविता और विदेशी काव्य रूप - डॉ. एस. नारायण,
पृष्ठ 50

इतालवी चतुर्दशपदी की विशेषता यह है कि इसमें जो भाव, विचार और वस्तु का समावेश होता है उसको दो भागों में अभिव्यक्त किया जाता है, अर्थात् चतुर्दशपदी को दो भागों में विभक्त किया जाता है। इसके प्रथम भाग में आठ पंक्तियाँ होती हैं, जिसे अष्टपदी (Octave) तथा दूसरे भाग में छः पंक्तियाँ होती हैं, उसे षटपदी (Sestet) कहते हैं। इतालवी चतुर्दशपदी की प्रथम अष्टपदी को पुनः दो भागों में बांटा जाता है, जिसमें दो चतुष्पदियाँ होती हैं जो एक नियत तुक विधान के अंतः सूत्र में ग्रथित होती हैं। दोनों चतुष्पदियों का तुक विधान एक सा होता है अर्थात् प्रथम चतुष्पदी की प्रथम पंक्ति और अंतिम चौथी पंक्ति का तुक विधान परस्पर एक सा रहता है, साथ ही दूसरी और तीसरी पंक्ति का तुक विधान परस्पर एकसा रहता है। इसी प्रकार से दूसरी चतुष्पदी की प्रथम पंक्ति और चौथी पंक्ति की एक तुक होती है और दूसरी और तीसरी पंक्ति की एक तुक होती है। इतालवी चतुर्दशपदी के अष्टपदी (Octave) के अन्तः संव्यूहन में प्रथम पंक्ति, चतुर्थ पंक्ति, पांचवी पंक्ति और आठवीं पंक्ति परस्पर तुकान्त रहती है, उसकी तुक में एक संगति पाई जाती है। इसी प्रकार से दूसरी, तीसरी, छठी और सातवीं पंक्तियाँ परस्पर तुकान्त पाई जाती हैं। अष्टपदी में पहली, चौथी, पांचवी और आठवीं पंक्तियों की तुक - विधान से दूसरी, तीसरी, छठी और सातवीं पंक्तियों का तुक - विधान अलग प्रकार का होता है, जिसे इस प्रकार से समझा जा सकता है।

	1	-----	
		प्रथम चतुष्पदी	
	--		a
	--		b
	--		b
	--		a
अष्टपदी (Octave)	2	द्वितीय चतुष्पदी	
	--		a
	--		b
	--		b
	--		a

इतालवी चतुर्दशपदी के अंत में जो छः पंक्तियाँ होती हैं उनको षटपदी (Sestet) के नाम से जाना जाता है। इन छः पंक्तियों को भी आंतरिक संरचना के आधार पर 3-3 पंक्तियों के दो भागों में बांट सकते हैं जिन्हें त्रिपदी (Tercet) कहा जाता है। चतुर्दशपदी के इस दूसरे भाग की रचना में साहित्यकारों ने अधिक स्वतंत्रता से काम लिया है। अतः इनकी आन्तरिक संरचना में अधिक विविधता देखने को मिलती है। षटपदी की त्रिपदियों के तुक - विधान के तीन रूप मुख्य रूप से देखने को मिलते हैं - प्रथम प्रकार के तुक - विधान के अन्तर्गत षटपदी की पहली, तीसरी और पाँचवी पंक्ति समान तुक की होती है और दूसरी, चौथी और छठी पंक्तियों परस्पर समान तुक विधान की होती हैं। हम इनको इस प्रकार से समझ सकते हैं -

1. प्रथम प्रकार	1	----- प्रथम त्रिपदी (Tercet) -- c -- d -- c
षटपदी (Sestet)	2	द्वितीय त्रिपदी (Tercet) -- d -- c ----- d

दूसरे प्रकार के तुक विधान के अन्तर्गत षटपदी की प्रथम पंक्ति और चतुर्थ पंक्ति समान तुक वाली होती हैं, दूसरी और पाँचवी समान होती है और तीसरी और छठी समान तुक विधान की होती है, किन्तु इनके मध्य में तुक की भिन्नता रहती है। इसको हम इस प्रकार से समझ सकते हैं -

2.	द्वितीय प्रकार	1	-----	
			प्रथम त्रिपदी (Tercet)	c
			---	d
			---	e
	षटपदी (Sestet)	2	द्वितीय त्रिपदी (Tercet)	
			---	c
			---	d
			-----	e

तीसरे प्रकार के षटपदी की संरचना के अन्तर्गत पहली पंक्ति, तीसरी पंक्ति, चौथी पंक्ति और छठी पंक्ति परस्पर समान तुक विधान की होती हैं । दूसरी पंक्ति और पांचवी पंक्ति आपस में समान तुक विधान की होती हैं जिसे हम इस प्रकार से समझ सकते हैं -

तीसरा प्रकार	1	-----	
		प्रथम त्रिपदी (Tercet)	c
		--	d
		--	c
षटपदी (Sestet)	2	द्वितीय त्रिपदी (Tercet)	
		--	c
		--	d
		-----	c

इस प्रकार से हम देखते हैं कि षटपदी की संरचना के तुक विधान में पूर्ण स्वतंत्रता है ।

इतालवी चतुर्दशपदियों के सम्बन्ध में एक बात विशेष उल्लेखनीय यह है कि इसमें विषय - वस्तु को दो भिन्न मनोभूमियों में बाँटा जा सकता है । प्रथम मनोभूमि को अष्टपदी (Octave) में देखा जा सकता है, जिसमें चतुर्दशपदीकार अपनी किसी समस्या, अपना कोई प्रश्न अथवा अपने किसी भावात्मक संत्रास का खुलासा

करता है, इसके बाद दूसरी मनोभूमि को षटपदी में देखा जा सकता है , जिसमें समस्या का हल, प्रश्न का निराकरण अथवा संत्रास से मुक्ति का मार्ग दिखाया जाता है ।

कभी - कभी इस इतालवी मॉडल पर लिखी गयी चतुर्दशपदियों में ऐसा भी देखने को मिलता है कि चतुर्दशपदीकार अष्टपदी में विचार या भाव का प्रवर्तन करता है और फिर थोड़ी सी विश्रान्ति अर्थात् अल्पठहराव के बाद उसे पौनः पुन्येन एक नये आयाम के साथ विस्तार देता है । भाव प्रवर्तन के बाद की इस विश्रान्ति को दर्शाने के लिये चतुर्दशपदीकार अष्टपदी की समाप्ति पर विराम चिह्न (Full stop) का प्रयोग करता है जिसे पारिभाषिक शब्दावली में सिजरा (Caesura) कहते हैं । इसी प्रकार षटपदी में नई ऊर्जा के साथ प्रस्तुत भाव या विचार - विस्तार को पारिभाषिक शब्दावली में (Volta) कहा जाता है । परन्तु कभी कभी अपवाद के रूप में इस चतुर्दशपदी प्रकार में इस क्रम को अनदेखा भी कर दिया जाता है ।

यहाँ मिल्टन (Milton) की 'When the Assault was Intended to the city' नामक एक चतुर्दशपदी निदर्शन के रूप में प्रस्तुत है, जिसका सृजन इतालवी मॉडल पर हुआ है । इसमें इतालवी सॉनेट - संव्यूहन की उपरिनिर्दिष्ट सभी विशेषताएँ एक साथ देखी जा सकती हैं -

Captain, or colonel, or knight in arms,	a	Quartrain	Octave
Whose chance on these defence less			
doors my seize,	b		
If deed of honour did thee ever please,	b		
Guard them, and him within protect		Quartrain	
from harms,	a		
He can requit thee, for he knows the			
charms,	a		
That call fame on such gentle acts as		Quartrain	
these,	b		
And he can spread thy name o'er			
lands and seas,	b		
Whatever clime the sun's bright circle		Quartrain	
Warms	a		

Lift not thy spear agains' the Muses'		
bower,	c	Tercet
The great Emathian conqueror bid spare	d	
The house of pindarus when temple		
and to wer	c	
Went to ground and the respected air	d	Tercet
Of sad Electra's poet had the power	c	
To save the Athenian walls from		
ruin bare ^l	d	Sestet

प्रस्तुत चतुर्दशपदी में अष्टपदी और षटपदी का विन्यास यथानिर्दिष्ट रूप देखा जा सकता है । अष्टपदी की आठवीं पंक्ति के पश्चात पूर्ण विराम अंकित है, जिसे सिजरा (Caesura) कहते हैं, जो इस बात को निर्दिष्ट करता है कि आगे भाव में एक मोड़ या बदलाव आयेगा । अष्टपदी में महाकवि मिल्टन शाही सेना के कमाण्डर से विनत प्रतिवेदन करता है कि वह उसके असुरक्षित आवास को सुरक्षित छोड़ दे । यदि उसके गरीबखाने को ध्वंस से बचा दिया गया, तो वह उसको इस दयालुता को अमर - काव्य की वाणी प्रदान करेगा । इसके पश्चात षटपदी में वह इतिहास के झरोखे से इसी प्रकार की उदारता और भलमनसाहत का निदर्शन प्रस्तुत करता है । अतः अष्टपदी में कथन और षटपदी में उसका ऐतिहासिक संदर्भ प्रस्तुत हुआ है । दूसरे शब्दों में कहें तो आठवीं पंक्ति के बाद विचार में एक बदलाव की स्थिति दृष्टव्य है ।

1. 'When the Assault was intended to the city'-
John Milton.

डॉ. एस. नारायण की पुस्तक "आधुनि हिन्दी कविता और विदेशी काव्य रूप" पृष्ठ 55 से उद्धृत।

2. बाग्ल चतुर्दशपदी रूप :-

जैसा कि प्रारम्भ में कहा जा चुका है, अंग्रेजी साहित्य में चतुर्दशपदी का सबसे पहले प्रारम्भ 16 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में वायट् और सरे के द्वारा हुआ था । वायट् ने पैट्रार्क के मॉडल पर उसी का अनुकरण करते हुये अंग्रेजी में चतुर्दशपदियों की संरचना की थी । परन्तु सरे के अर्ल हेनरी होवार्ड ने इतालवी मॉडल का अनुकरण नहीं किया अपितु उसमें परिवर्तन और परिवर्द्धन करके उसका सरलीकरण किया और एक नवीन रूप को प्रस्तुत किया । हेनरी होवार्ड ने जिस रूप की संरचना की वहीं अंग्रेजी साहित्य में गृहीत हुआ है ।

आन्तरिक संरचना के आधार पर अंग्रेजी चतुर्दशपदी के भी दो भेद किये जा सकते हैं -

1. शेक्सपीयरी चतुर्दशपदी रूप
2. स्पेन्सरी चतुर्दशपदी रूप

1. शेक्सपीयरी चतुर्दशपदी रूप :-

शेक्सपीयरी चतुर्दशपदी कविता का नामकरण अंग्रेजी साहित्य के महान कवि-नाटककार शेक्सपीयर के नाम पर हुआ है परन्तु उसकी उद्भावना का श्रेय हेनरी होवार्ड को जाता है । प्रारम्भ में अंग्रेजी साहित्य में हेनरी होवार्ड ने इस प्रतिरूप को प्रस्तुत किया था, बाद में शेक्सपीयर ने इसको अपनी कलात्मक प्रतिभा से अंग्रेजी साहित्य में ख्याति दी ।

शेक्सपीयर ने लगभग 154 चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं । जो एक ही मॉडल को आधार मान कर लिखी गयी हैं । इस मॉडल की रचना में तीन चतुर्दशपदियाँ (Quatrains) तथा अंत में एक तुकान्त द्विपदी (Rhyming Couplet) होती है ।

इस प्रकार की चतुर्दशपदियों में कविता का भाव या विचार तीनों चतुष्पदियों में व्यक्त होता हुआ तुकान्त द्विपदी में उसका समापन होता है । यही विशेषता

शेक्सपीयरी चतुर्दशपदी का मुख्य गुण है । शेक्सपीयरी चतुर्दशपदी की संरचना तीन चतुष्पदी और एक द्विपदी को मिला कर की जाती है । अतः इसमें जो अनुभूत भाव या विचार चतुष्पदियों में विकास होता हुआ चलाता है उसका समापन द्विपदी में होता है। शेक्सपीयरी चतुर्दशपदी को हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं -

	-----	a
		b
1. प्रथम चतुष्पदी (1st Quartrain)	--	
		a
	-----	b
	-----	c
		d
2. द्वितीय चतुष्पदी (2nd Quartrain)	--	
		c
	-----	d
	-----	e
		f
3. तृतीय चतुष्पदी (3rd Quartrain)	--	
		e
	-----	f

4. समापक तुकान्त द्विपदी --
(Concluding
Rhyming Couplet)

----- g

----- g

अपने उपर्युक्त प्रकथन को बोध - गम्य बनाने की दृष्टि से शेक्सपीयर की एक चतुर्दशपदी निदर्शन के रूप में दृष्टव्य है, जिसकी चतुष्पदियाँ कवि के अतीत के दुर्भाग्य के विषाद को वाणी प्रदान करती हैं। प्रस्तुत चतुर्दशपदी की प्रथम चतुष्पदी में भौतिक उपलब्धियों का विनाश, द्वितीय में उसके अविस्मरणीय मित्रों की काल-कवलता तथा तृतीय में पूर्वभुक्त वेदना की सशक्त अभिव्यक्ति हुयी है। किन्तु, उद्धृत चतुर्दशपदी में अनुभूत भाव की पराकाष्ठा तुकान्त द्विपदी में ही देखने को मिलती है, जहाँ कवि अपने पाठकों को अपने - अपने वर्तमान में रह कर जो कुछ शेष बचा है, उसी की दुलार - भरी स्मृति के द्वारा क्षतिपूर्ति का आह्वान करता है -

When to the sessions of sweet,		
silent thought	a	
I summon up remembrance of things,		
Part,	b	
I sigh the lack of many a thing I		
sought,	a	
And with old woes new wail my		
dear time's waste	b	
		1st Quartrain
Then can I drown an eye, unused to		
flow,	c	
For precious friends hid in death's		
dateless night	d	
And weep a fresh love's long-since-		
cancelled woe,	c	
And moan the expense of many a		
Vanish'd sight,	d	
		2nd Quartrain

Then can I grieve at grievances foregone,	e	3rd Quartrain
And heavily from woe to woe tell		
o'er	f	
The sad account of fore-bemoaned		
moan	e	3rd Quartrain
Which I now pay as if not paid		
before	f	Rhyming Couplet
But if the while I think on thee,		
dear friend,	g	
All losses are restored, and sorrows		
end ¹ .	g	

निदर्शन के रूप में शेक्सपीयर की उपर्युक्त चतुर्दशपदी के सूक्ष्म अवलोकन से यह बात भली - भाँति स्पष्ट हो जाती है, फिर संरचनात्मक दृष्टि से इन चतुर्दशपदियों की चतुष्पदियों में कोई तुकान्त अंतर्ग्रन्थन नहीं होता। प्रत्येक चतुष्पदी का तुकबंध दूसरे से भिन्न, स्वतंत्र एवं एकान्तरात्मक होता है इनमें रचनात्मक संव्यूहन की दृष्टि से परस्पर कोई अंतः - सम्बन्ध नहीं होता। ये वस्तुतः तत्त्व की दृष्टि से एक सूत्र में पिरोयी हुयी एवं परस्पर गहरे संपृक्त होती है। अतः कहना होगा कि शेक्सपीयर की चतुर्दशपदियों की चतुष्पदियों का ऐक्य एवं संघनन भावामात्मक है, संरचनात्मक नहीं।

2. स्पैन्सरी चतुर्दशपदी रूप :-

अंग्रेजी चतुर्दशपदियों को दो भागों में बांटा गया है। जिसका पहला रूप शेक्सपीयरी चतुर्दशपदी का था और दूसरा रूप स्पैन्सरी चतुर्दशपदी का। अतः

1. 'Remembrance' - William Shakespeare.

डॉ. एस. नारायण की पुस्तक "आधुनिक हिन्दी कविता और विदेशी काव्य-रूप" पृष्ठ 58 से उद्धृत।

चतुर्दशपदी का एक स्वतंत्र और भिन्न तुकबंध वाला रूप है । प्रस्तुत चतुर्दशपदी में भी शेक्सपीयरी चतुर्दशपदी की भाँति तीन चतुष्पदी और एक तुकान्त द्विपदी होती है। परन्तु फिर भी उनका आन्तरिक रूप – कुछ भिन्न प्रकार का होता है। स्पैन्सरी चतुर्दशपदियों की चतुष्पदियाँ संरचनात्मक दृष्टि से परस्पर सम्बद्ध होती हैं । उन्होंने अपनी चतुर्दशपदियों में ऐसी रचना की है जिसमें पहली चतुष्पदी की दूसरी तुक और दूसरी चतुष्पदी की पहली तुक आपस में मिलती हैं । और इसी प्रकार से दूसरी चतुष्पदी की दूसरी तुक, तीसरी चतुष्पदी की पहली तुक आपस में मिलती हैं और अंत एक ऐसी द्विपदी पर होता है जिसकी तुक पहली तुक विधानों से सर्वथा अलग होता है। स्पैन्सरी चतुर्दशपदी को हम निम्न प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं –

	-----	a
		b
1. पहली चतुष्पदी (Ist Quartrain)	--	
		a
	-----	b
	-----	b
		c
2. दूसरी चतुष्पदी (2nd Quartrain)	--	
		b
	-----	c
	-----	c
		d
3. तीसरी चतुष्पदी (3rd Quartrain)	--	
		c
	-----	d

- e

Ye tradeful merchants, that, with weary to it,	a	Ist Quartrain
Do seek most precious things to make your		
gains,	b	
And both the Indias of their treasure spoil,	a	
What needeth you to seek so far in vain?	b	
For to, my love doth in herself contain	b	2nd Quartrain
All this world's riches that may for be		
bound.	c	
If sapphires, Lo her eyes be sapphires plain	b	3rd Quartrain
If rubies, Lo her lips be rubies sound.	c	
If pearls, her teeth be pearls, both pure		4th Quartrain
8 round,	c	
If ivory, her forehead ivory ween	d	5th Quartrain
If gold, her locks are finest gold on		
ground	c	
If silver , her fair hand are silver sheen.	d	
But that which fairest is, but few behold,	e	Rhyming Couplet
Her mind adorned with virtues manifold. ¹	e	

1. 'Sonnet' spenser Quoted from 'A Background to the study of English Literature' by B. Prasad, P. 17

स्पेंसर की उपर्युक्त चतुर्दशपदी की गवेषणा से स्पष्ट है कि उनकी चतुर्दशपदी में जहाँ अंतः संव्यूहन के स्तर पर सम्पृक्ति पाई जाती है, वहाँ वस्तु-भाव या विचार के धरातल पर भी उनमें कहीं असम्पृक्ति देखने को नहीं मिलती । उनकी चतुष्पदियाँ एक ही भाव या विचार के सूत्र में बँधी रहती हैं, जिसका निष्कर्ष तुकान्त द्विपदी में देखा जा सकता है । संदर्भगत चतुर्दशपदी में गृहीत भाव पर विचार करें , तो कह सकते हैं कि पहली चतुष्पदी में कवि व्यापारियों के बहुमूल्य पदार्थों की खोज में देश - विदेश भटकने के श्रम की असार्थकता व्यक्त करता है, उसके पश्चात दूसरी और तीसरी चतुष्पदियों में क्रमशः वह अपनी प्रियतमा के सुन्दर अवयवों - अंगों - उपांगों - में विविध रत्नों की सार्थकता व्यक्त करता है और अंत में उसकी आभ्यन्तरिक क्षमताओं का उद्घाटन करता है ।

चतुर्दशपदी कविता की रचना और स्वरूप एवं वर्गीकरण कर विवेचन करने से ज्ञात होता है कि इसका उदय प्रेम कविता से हुआ है । चतुर्दशपदी कविता के जनक पेट्रार्क ने अपनी प्रियतमा को इसी चतुर्दशपदी कविता के माध्यम से अपने प्रेम से अवगत कराया था । पेट्रार्क की 317 चतुर्दशपदियों का संग्रह *Canzoniere* भी उनकी प्रेमास्पद को ही समर्पित हुआ है । इस कविता का पूरा रूप स्वरूप प्रेम पर ही आधारित है, अतः इसके लिये कुछ मुख्य बातें ध्यान में रखी गयी हैं जो इसके लिये आवश्यक हैं जो इस कविता के मूल भूत रूप को प्रभावित करती हैं ।

भाव - संघनन तथा अन्विति किसी भी कविता की मूल अपेक्षा होती है, किन्तु प्रेम कविता का तो वह प्राण ही है । अतः हम कह सकते हैं कि चतुर्दशपदी की कविता का स्वरूपाधायक तत्व अभिव्यक्त भाव की संघनता और अन्विति में निहित होता है । पूरी की पूरी कविता में एक ही भाव निहित रहता है, जो बाद में सुचिन्तित विचार में ढलने लगता है ।

चतुर्दशपदी की दूसरी महत्वपूर्ण बात इसके तर्क संगत बुनावट या अतः सरंचना की तर्क संगति में निहित है ।

चतुर्दशपदी कविता का चाहे इतालवी रूप हो, चाहे अंग्रेजी कोई भी क्यों न हो उसमें भाव की एक निर्धारित सारणि, एक निश्चित ताल और भाव के साथ विद्यमान रहती है, जिसे निम्न प्रकार से समझ सकते हैं -

इतालवी चतुर्दशपदियों में -

भाव व्यंजना (अष्टपदी की प्रथम चतुष्पदी) - भाव स्पष्टता एवं भाव परिवर्तन (अष्टपदी की द्वितीय चतुष्पदी) - परिवर्तित भाव की नवीन अभिव्यंजना (षट्पदी की प्रथम त्रिपदी) - भाव - भव्यता के साथ वैचारिकी (षट्पदी की द्वितीय त्रिपदी) ।

अंग्रेजी चतुर्दशपदियों में -

भाव व्यंजना (प्रथम चतुष्पदी) - भाव विस्तार और भाव - स्पष्टता (द्वितीय चतुष्पदी तथा तृतीय चतुष्पदी) - भाव - भव्यता (तुक्रान्त द्विपदी) ।

इस प्रकार से कह सकते हैं कि इस कविता का प्रारम्भ का भाग एकल रूप से भावश्रित होता है जबकि उसका अंत का भाव - भाव - भव्यता में वैचारिकी से अनुप्राणित देखा जा सकता है ।

चतुर्दशपदी के संदर्भ में तीसरी बात यह है कि इसका अंत भी इसके प्रारम्भ के समान ही ओज पूर्ण होता है । दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि रचना का निर्वचन जिस मूड या मानसिकता के साथ होता है, उसका पर्यवसान भी उसी मनः स्थिति या मूड में होता है और यह प्रायः ओज एवं उल्लास का हुआ करता है ।

चतुर्दशपदी की रचना करना एक बहुत ही कठिन काम है - तलवार की धार पर चलना । क्योंकि इसमें कवि को बहुत ही कम शब्दों में बहुत कुछ कहना होता है अर्थात् यहाँ पर गागर में सागर भरने वाली उक्ति अधिक ठीक बैठती है । अतः यह रचना बहुत ही कलात्मक एवं उत्कृष्ट कोटि की होती है । इसमें रचनाकार को शब्दों का अच्छा ज्ञाता होना चाहिए ।

चतुर्दशपदी चौदह पंक्तियों में सीमित होती है । इसकी अन्तिम सीमा चौदह पंक्तियाँ होती हैं । यह एक पैटर्न है और इसकी पंक्ति सीमा में शैथिल्य भी असम्भव नहीं कहा जा सकता ।

पाश्चात्य साहित्य में चतुर्दशपदी कविता : एक विहंगम दृष्टि :-

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, हिन्दी में सॉनेट अंग्रेजी परम्परा से आया है । अंग्रेजी में इसका इतिहास कई शताब्दियों का इतिहास है । चतुर्दशपदी का प्रसार इटली में हुआ । इसका प्रचार इस प्रकार से हुआ - अरबों ने शेखों पर हमला किया। हमला करने के बाद जैसा करते हैं, पुस्तकालयों और भण्डारों को नष्ट कर दिया और विशाल क्षेत्र में बहुत लम्बे समय तक उनका राज्य रहा । पहले वहाँ पर ईसाइयों का ज्यादा प्रभाव था । वहाँ के विद्वानों, लेखकों, कवियों, वैज्ञानिकों आदि ने जान बचाने के लिये बहुत से कार्य किये । और तब तक इटली में अरबी पढ़ाई जाने लगी थी। अरबी काव्य का असर स्पेन में भी हुआ । गजलें लिखी जाने लगी थीं । सात शेरों में गजलें लिखी जाती तो 14 पंक्ति होती थीं । चौदह पंक्ति की कविता का एक प्रारूप मान लिया गया । कुछ विद्वानों ने चौदह पंक्ति को छः पंक्तियों में बांट दिया । जिसका जैसा जी चाहा वैसा ही लिखा । इस तरह यह प्रारूप इंग्लैण्ड पहुंचा । ¹

1535 में भी इंग्लैण्ड में एक कवि हुये, परन्तु उनकी चर्चा बहुत कम हुयी। "सॉनेट" अंग्रेजी भाषा के साथ समृद्ध होने लगा । अंग्रेजी में चार हजार सॉनेट लिखे जाने वाले कवि भी हुये । लेकिन वे बहुत बड़े कवि नहीं हैं । असल में सॉनेट का महत्व नहीं है । महत्व है काव्य का। सॉनेट में उसके एक रूप में अठ या छः पंक्तियों के बाद नया, पैरा प्रारम्भ करने की पाबन्दी नहीं है ।²

चतुर्दशपदी का उत्स इतालवी साहित्यकार पेद्रार्क की प्रेम कविता में देखा जा सकता है । पेद्रार्क ने लगभग 317 चतुर्दशपदियों की रचना की, जिसके माध्यम से उन्होंने अपनी प्रियतमा को अपनी प्रेम से परिपूर्ण भावनाओं से परिचित कराया । 16

1. सापेक्ष - पृष्ठ - 252

2 सापेक्ष - पृष्ठ - 252

वीं शती के पूर्वार्द्ध में वायट ने पेट्रार्क की ही कविताओं के समान उन्हीं के पद चिन्हों पर चलकर वैयक्तिक अनुभूतियों के साथ इसी मार्ग का अनुगमन किया। हेनरी होवार्ड ने भी अपने काल्पनिक प्रणय को अभिव्यक्त करने के लिये चतुर्दशपदी को ही अपनाया। "मिल्टन" ने भी 22 सुन्दर सॉनेट लिखे पर 8 या 6 पंक्तियों की पाबन्दी उन्होंने नहीं मानी। 8 वीं और 9 वीं पंक्ति भी जोड़ी। अंग्रेजी में भी वर्डस्वर्थ के सॉनेट 530 हैं।

महारानी ऐलिजावेथ के युग में सर फिलिप सिडनी स्पेन्सर और विलियम शेक्सपीयर ने भी चतुर्दशपदी के पथ पर चलते हुये बहुत ही उच्च कोटि की चतुर्दशपदियों की रचना की है। स्पेन्सर की अपनी चतुर्दशपदियों का वर्ण्य विषय प्रेम ही है, किन्तु तुक विधान में कहीं – कहीं विशृंखलता अवश्य देखने को आती है। इस युग के सबसे महान, समर्थ एवं प्रतिभावान चतुर्दशपदीकार विश्व के महान नाटककार विलियम शेक्सपीयर हैं। उनका कवि हृदय उनके लोक – विश्रुत नाटकों के अतिरिक्त कविताओं में भी अभिव्यक्त हुआ है। कविताओं में चतुर्दशपदी का मुख्य स्थान है। शेक्सपीयर ने अंग्रेजी भाषा में पूरी समृद्धि के साथ चतुर्दशपदी लिखे हैं। उन्होंने कुल मिलाकर 154 चतुर्दशपदियों की संरचना की है जो उनके एक घनिष्ठ मित्र डब्लू.एच. (W.H.) तथा किसी अनाम महिला (Dark Lady) के नाम है। ये सभी चतुर्दशपदियाँ शृंखलाबद्ध हैं।

शेक्सपीयर की चतुर्दशपदियों में यह विशेषता रही है कि अनुप्रास एक ही बार आता है। अन्त्यानुप्रास उस चतुर्दशपदी में दुबारा न आये यह उसकी शर्त है। परन्तु शेक्सपीयर स्वयं इस शर्त का निर्वाह नहीं कर सके।

शेक्सपीयर की चतुर्दशपदियों का मूल विषय प्रेम ही है परन्तु प्रारम्भ से ही उनमें बाह्य एवं आन्तर्किर प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण की अप्रतिम प्रतिभा तथा सामर्थ्य प्राप्त थी। यही कारण है कि मानवीय भावानुभूति की जैसी सच्ची अभिव्यक्ति उनके चतुर्दशपदी काव्य जगत में देखने को मिलती है, वैसी अंग्रेजी साहित्य में कहीं भी देखने को नहीं मिलती।

शेक्सपीयर के चतुर्दशपदियों में प्रेम के विभिन्न रूप - रंगों का विभिन्न प्रकार से वर्णन हुआ है। इसमें कहीं - कहीं प्रणयजनित बेवफाई पर वेदना की चुभन कसकती है जिससे अभिव्यक्ति में एक अनूठा माधुर्य फूट पड़ता है ।

सम्भवतः वेदन की इसी टीस को लक्ष्य करके विलियम वर्ड्सवर्थ ने लिखा है -

"..... With the same Key
Shakespeare unlocked his heart"¹

यह उनकी चतुर्दशपदी शृंखला में 116 वीं चतुर्दशपदी है, जिसमें उनके उदात्त भाव कलात्मक अभिव्यक्ति का संस्पर्श पाकर जीवन्त रूप में मूर्त हुये हैं -

Let me not to the marriage of true minds
Admit impediments, Love is not love
Which alters when it alteration finds
Or bends with the remover to remove;

O, not it is an ever - fixed - mark,
That looks on tempests, and is never
shaken;

It is the star to every wandering bark,
Whose worth is unknown, although his
height be taken.

Love's not Time's fool, though rosy lips
and cheeks

Within his bending sickle's compass come;
Love alters not with his brief hours
and weeks,

But bears it out ev'ns to the edge of doom

1. 'Sonnet on Sonnet' - William Wordsworth.

It this be error, and upon me prov'd
I never writ, nor no man every lov'd.¹

उपर्युक्त चतुर्दशपदी में शेक्सपीयर ने प्रतिपादित किया है कि सच्चे प्रेमियों के मार्ग में भौतिक विघ्न - बाधाएँ और कठिनाइयाँ कभी रोड़ा नहीं बनती। सच्चा प्रेम जीवन के बाह्य विवर्तनों एवं परिवर्तनों से सदा अछूता और अप्रभावित रहता है। समय की अवधि भी इसे नष्ट नहीं कर पाती। काल - चक्र के क्रूर हाथ भी वहाँ नहीं पहुँच पाते। प्रारब्ध की प्रत्येक यातना को यह सहन करता है।

आगे चलकर अंग्रेजी चतुर्दशपदी कविताओं के विषयों में बदलाव आता है। शेक्सपीयर के समय तक सिर्फ "प्रेम" ही इसका मुख्य विषय रहा था किन्तु शेक्सपीयर युग के बाद में इसका विषय क्षेत्र धीरे - धीरे व्यापक एवं विस्तार पाता गया। 17 वीं शती के पूर्वार्द्ध में जॉन डन (John Donne) ने धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषयों को चतुर्दशपदी का वर्ण्य - विषय बनाया। जॉन मिल्टन (John Milton) ने इस क्षेत्र में सबसे अधिक सफल यात्रायें कीं। उनका इस क्षेत्र में योगदान बहुत अधिक है।

ऐलिजाबेथ युग के अधिकांश चतुर्दशपदीकारों ने इसको एक छंद अथवा वृत्त के रूप में प्रयोग किया है। किन्तु मिल्टन ने इस एक काव्य - विधा का महत्त्व प्रदान करते हुये स्वतंत्र कविता के रूप में चतुर्दशपदियों का सृजन किया। इसके लिये मिल्टन को पेट्रार्कन तकनीक अधिक उचित लगी। उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में पहली बार ऐलिजाबेथ युग के रचनाकारों की परम्परा से हटकर प्रस्तुत विधा को एक व्यापक लक्ष्य का वाहक बनाया। वड्सवर्थ ने मिल्टन की प्रशस्ति में उचित ही कहा है -

" In his hand
The thing became a trumpet, whence he blew
Soul animating strains alas, too few!²

1. 'Let me not to the marriage of true minds, admit impediments - William Shakespeare.
2. "Sonnet on Sonnet" - William Wordsworth.

मिल्टन ने चतुर्दशपदी के प्रणयन में पेट्रार्क की तकनीक को अपनाने के साथ – साथ अपनी अभूतपूर्व कवि – प्रतिभा के द्वारा इसे और अधिक प्रांजल एवं उत्कृष्ट स्वरूप प्रदान किया, किन्तु उन्होंने विषय – वस्तु के क्षेत्र में पेट्रार्क का अनुगमन नहीं किया । मिल्टन ने केवल 18 चतुर्दशपदियों की ही रचना की, किन्तु वे अभिव्यंजना एवं शिल्प की दृष्टि से अंग्रेजी साहित्य में बेजोड़ हैं । स्टॉपफोर्ड एब्रुक ने मिल्टन की चतुर्दशपदियों को तीन भागों में बांटा है – *The Controversial, the Personal और the Political.*

मिल्टन की प्रथम प्रकार की चतुर्दशपदियाँ धर्म, राजनीति, युद्ध आस्था आदि विषयों पर लिखी गयीं चतुर्दशपदियाँ सम्मिलित हैं । 'When the Assault was intended to the city' तथा 'On the late Massacre in Piedmont' इसी प्रकार की कविताएँ हैं । मिल्टन की कुछ चतुर्दशपदियाँ ऐसी हैं जिनमें नारीत्व के आदर्शों को प्रमुखता दी है ।

मिल्टन एक धार्मिक व्यक्ति थे । उनका धर्म और उसके उच्च आदर्शों में अटूट विश्वास था । 'On His Blindness' मिल्टन की एक ऐसी चतुर्दशपदी है, जिसमें उनकी व्यक्तिकवेदना उभरी है । मिल्टन असमय में ही अंधे हो गये थे । अतः उन्हें अपनी कवि प्रतिभा को सुण्टु प्रयोग न कर सकने का दुःख था । प्रारम्भ में ईश्वर के ईशत्व के प्रति उनके मन में एक प्रश्न चिह्न उभरता है । किन्तु उनकी चेतना दूसरे ही क्षण में उन्हें ईश्वरीय सत्ता की अपरिमित उदारता से आश्चस्त करती है कि ईश्वर मानवी सेवा का इच्छुक नहीं है । ईश्वर में विश्वास रखकर उसकी उदारता की प्रतीक्षा भी उसकी सेवा और प्रेम की पात्र है –

'They also serve who only stand and
wait.'¹

मिल्टन के बाद अंग्रेजी साहित्य में चतुर्दशपदी काव्य रूप के क्षेत्र में प्रकृति के प्रेमी कवि "विलियम वर्ड्सवर्थ" का योगदान गुण और परिमाण – दोनों दृष्टियों से बहुत उल्लेखनीय है । मिल्टन की 'On His Blindness' के शिल्प – विधान की परम्परा का अनुगमन करते हुये विलियम वर्ड्सवर्थ ने कुल मिलाकर 500

1. 'On His Blindness' – John Milton.

चतुर्दशपदियों की रचना की है । उनकी चतुर्दशपदियों का मुख्य विषय सामाजिक विसंगतियों, नैतिक मूल्यों एवं राजनीतिक विषयों की जटिलताओं तक के व्यापक विस्तार को अपने आभोग में समेटता हुआ चलता है । इनकी चतुर्दशपदियाँ कहीं कहीं बड़ी व्यंग्यात्मक, मार्मिक एवं चुटीली हो जाती हैं । 'The World is too Much with us' वर्ड्सवर्थ की इसी प्रकार की चतुर्दशपदी है जिसमें कवि ने मुठ्ठी भर सोने - चाँदी के ठीकरों को जुटाने के लिये अपनी आत्मा को बेच देने वाले आधुनिक भौतिकतावादी मानव के नैतिक और आध्यात्मिक पतन पर करारा व्यंग्य किया है ।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि हृदय की छटपटाहट और आहत चीत्कार को देखा जा सकता है -

The world is too much with us; Late & soon,
Getting & spending, We lay waste our powers,
Little we see in nature, that is ours
We have given our hearts away to a Sordid
d boon; ¹

वर्ड्सवर्थ के पश्चात् रोमांटिक युग के रचनाकारों में जॉन कीट्स (John Keets) का नाम आता है । जॉन कीट्स ने 65 चतुर्दशपदियों की रचना की । इसके अतिरिक्त "रोनसार्द" (Ronasord) की एक चतुर्दशपदी "कासानद्रा" (Cassanadra) का मुक्त रूप से अनुवाद किया । कीट्स की एक चतुर्दशपदी - द होमर सॉनेट - को अपवाद के रूप में छोड़ दें, तो इनकी प्रारम्भिक 44 चतुर्दशपदियाँ पेट्रार्कीय परम्परा की हैं, जिनमें से 27 की षटपदी का तुक विधान cd, cd, cd - दो तुक वाला है । शेष चतुर्दशपदियों की संरचना में कीट्स ने शेक्सपीयरी परम्परा का अनुकरण किया है । कीट्स ने कुछ चतुर्दशपदियों में एक नवीन प्रयोग किया है , जिसमें पहली आठ पंक्तियों का विन्यास पेट्रार्कीय है, किन्तु अंतिम 6 पंक्तियों की रचना में शेक्सपीयरी परम्परा के अनुसार एक चतुषपदी और अंत

1. 'The word is too much with us'-William Wordsworth.

में तुकान्त द्विपदी की योजना की गयी है। इसका अंतः संव्यूहन cd,cd,ee के रूप में किया गया है। पेट्रार्कीस परम्परा कीट्स को मिल्टन और वर्ड्सवर्थ से प्राप्त हुयी, किन्तु यह शेक्सपीयर की प्रतिभा से बहुत अधिक प्रभावित थी। कीट्स की चतुर्दशपदियाँ अभिव्यंजना और शिल्प दोनों ही दृष्टियों में बहुत अधिक महत्वपूर्ण हैं। सच तो यह है कि उनकी ओड्स (Odes) के समान चतुर्दशपदियों में भी कीट्स का काव्य – वैभव निखरकर आया है।

अंग्रेजी साहित्य के विक्टोरियन काल में ऐलिजावेथ बैरिट ब्राउनिंग (Elizabeth Berrette Browning) की चतुर्दशपदियों के साथ एक बार फिर से प्रस्तुत विद्या की विषय – वस्तु पीछे लौटती दिखाई देती है। लेडी ब्राउनिंग की चतुर्दशपदियों का संग्रह 'Sonnets from the Portuguese' 1850 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में उनकी चतुर्दशपदियाँ 'सीरीज' के रूप में संकलित हैं जिनमें रॉबर्ट ब्राउनिंग (Robert Browning) के प्रति उनके प्रणय की अभिव्यंजना हुयी है। बाद में इस युगल प्रेम की प्रणय कथा को 'Barretts of the Wimpole Street' नाम से फिल्माया भी गया।

लेडी ब्राउनिंग ने इतालवी पद्धति को अपने शिल्प के रूप में स्वीकार किया जो उन्हें मिल्टन वर्ड्सवर्थ आदि से प्राप्त हुआ। उनकी चतुर्दशपदियों का संरचनात्मक ढांचा भी abba,abba,cdc,dcd है। किन्तु जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, उन्होंने वस्तु के धरातल पर शेक्सपीयरी तर्ज पर प्रणय को वर्ण्य – विषय बनाया है। निदर्शन के तौर पर लेडी ब्राउनिंग ने अपने काव्य संग्रह की 14 वीं चतुर्दशपदी 'If Thou Must Love Me, Let It Be for Naught' में अपने प्रेमास्पद से कहा है कि प्रेम का आधार सिर्फ प्रेम ही होना चाहिए तभी प्रेम स्थाई, शुद्ध तथा शाश्वत बना रह सकता है। अन्य संसारी आधारों पर आघृत प्रेम अस्थायी और नश्वर ही होगा, क्योंकि यह आधार ही अस्थायी और क्षणिक होते हैं –

If thou must love me, let it be for naught
Except for love's sake only. Do not say

'I love her for her smile - her look - her way
Of speaking gently - for a trick of thought
That falls in well with mine

..... Neither love me for
Thine own dear pitys, wiping my cheeks dry
A creature might - forget to weep , whe bore,
Thy comfort long, and lose thy love thereby,
But love me for love's sake, that evermore,
Thou mayst love me, through love's eternity.¹

अंग्रेजी कवि समीक्षक मैथ्यू आर्नल्ड (Mathew Arnold) ने कम
चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं । इनकी चतुर्दशपदियों में 'Shakespeare' 'To a Rep-
ublican Friend' और 'Worldly Piece' उल्लेखनीय है । 'शेक्सपीयर' नामक
चतुर्दशपदी में रचनाकार ने विश्व के महान नाटककार शेक्सपीयर की प्रशंसा में कहा है-

'Others abide our question - Thou art free !
We ask and ask - Thou similest & art still,
out topping knowledge -
All pains the immortal spirit must endure-
All weakness which impairs, all griefs which bow,
Find their sole voice in that victorious vow.'²

मैथ्यू आर्नल्ड की प्रशस्ति नाटककार तथा उसके साहित्य के लिये एक अमर
अभिलेख तथा आदर्श दस्तावेज के रूप में प्रतिष्ठित है । इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि
अंग्रेजी चतुर्दशपदी रचना के क्षेत्र में कम लिखते हुये भी मैथ्यू आर्नल्ड इतालवी परम्परा
के अंग्रेजी रचनाकारों में स्मरणीय हैं ।

-
1. If thou must love me, let it be for naught'-
Elizabeth Barret Browning)
 2. 'Shakespeare' - Matthew Arnold.

उत्तरवर्ती अंग्रेजी साहित्य के चतुर्दशपदीकारों में डी.जी.रोसेटी (D.G.Rossettee) रूपर्ट ब्रुक (Rupert Brook) साहित्यिकों का नाम उल्लेख्य है ।

अंग्रेजी साहित्य में चतुर्दशपदी के उपर्युक्त सर्वेक्षण के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि इस प्रकार की कविता के लिये कोई विषय - वस्तु के अनुशासन की आवश्यकता नहीं है । प्रारम्भ की चतुर्दशपदियों का वर्ण्य - विषय प्रेम तत्त्व ही रहा, परन्तु बाद में इसका महत्व कम होता चला गया और जीवन तथा जगत अन्यान्य आयाम जैसे - मृत्यु, मिलन, धर्म, युद्ध, राजनीति , नैतिक - आध्यात्मिक मूल्य, प्रकृति सौन्दर्य, अलौकिकता, ग्राम्य जीवन इसके आभोग में फलते - फूलते चले गये । कहने का सारांश यह है कि मानवीय भावानुभूति व्यापक फलक पर इस विधा के माध्यम से उँकेरी जाने लगी ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में चतुर्दशपदी काव्य रूप : एक सर्वेक्षण :-

यह तथ्य बिना किसी पूर्वग्रह के स्वीकार किया जाना चाहिए कि आधुनिक काल का हिन्दी साहित्य पाश्चात्य साहित्य के गहरे प्रभाव में विकसित हुआ है । जब आज का साहित्यकार पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव से बचा नहीं है तो काव्य क्षेत्र भला उससे अछूता एवं अप्रभावी कैसे रह सकता है ? यह प्रभाव हमारे सोच, सम्वेदना एवं शिल्प पर अनेक रूपों में देखा जा सकता है । कहना न होगा कि हिन्दी काव्य जगत में चतुर्दशपदी की रचना कोई मात्र संयोग की बात नहीं, अपितु पाश्चात्य साहित्य - शैली एवं उसकी विविध विधाओं का हिन्दी पर प्रभाव का एक सजग निदर्शन है ।

हिन्दी साहित्य जगत में चतुर्दशपदी की रचना का प्रादुर्भाव बंगला के माध्यम से हुआ था । बंगला के साहित्यकारों में "माइकेल मधुसूदन दत्त" बहुत पहले ही पाश्चात्य साहित्य एवं शैली से प्रभावित हो चुके थे । जब मधुसूदन यूरोप में थे, उसी दौरान उन्होंने देशभक्ति एवं राष्ट्र प्रेम से सराबोर अनेक चतुर्दशपदियों का सफल - प्रणयन किया था । उन्हीं से यह परम्परा बंगला के अन्य कवि - साहित्यकारों से होती

हुयी हिन्दी कवियों तक आ पहुँची । द्विवेदी युगीन हिन्दी कविता में अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" जैसे साहित्यकारों ने कतिपय चतुर्दशपदियों का प्रणयन कर इस विद्या के बीज - वपन का कार्य किया है ।

आधुनिक काल की हिन्दी कविता में छायावाद युग मूलतः प्रगीत का युग माना जाता है । इस युग में कामायनी एवं लोकायतन जैसे मुख्य प्रबन्ध काव्यों की रचना भले ही हुयी सही, पर इसकी मूल चेतना लिरिक के उच्छवास भीने रस-रंग में ही रमी। यही कारण है, कि इस युग में भावाश्रित प्रगीतों के साथ - साथ शिल्पाश्रित प्रगीतों की सृजना भी गतिमान रही । चतुर्दशपदी की रचना में प्रसाद, पंत एवं निराला ने खूब रुचि दिखाई । सृष्टि के कण - कण में अपने प्रेमास्पद प्रियतम की परोक्षसत्ता का आभास पाने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी महाकवि जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी कविता में एक नये युग का द्वार खोला । वे चतुर्दशपदी काव्य धारा के प्रवर्तक एवं अन्यतम कवि हैं । उन्होंने अपनी वेदनानुभूति, भावप्रवणता एवं अभिव्यक्ति की मंजुलता से छायावादी काव्य जगत में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है । उनके काव्य में रस और भावों की ऐसी धारा वही है, जो जन - मन को रस से सराबोर कर देती है । प्रसाद जी ने अपनी नवीन प्रतिभा से आंग्लसाहित्य के प्रभाव को भी भारतीयता के परिवेश में ढाल कर ग्रहण किया है । यहाँ हम उनकी कविता में चतुर्दशपदी रूप का संक्षेप में एक विहंगम दृष्टि से विचार करेंगे ।

वैसे तो प्रसाद जी की चतुर्दशपदियों का प्रकाशन समय - समय पर "इन्दु" में होता रहा, एकाध इधर - उधर भी प्रकाशित हुयी किन्तु पुस्तकाकार रूप में उनकी चतुर्दशपदियों का प्रकाशन बाद में उनके नाटकों के समस्त गीतों के साथ "प्रसाद संगीत नाम संग्रह" में हुआ । प्रसाद जी ने कुल मिलाकर 27 चतुर्दशपदियों की रचना की है, जिनमें 5 चतुर्दशपदियाँ उनके नाटकों के गीतों में "अजातशत्रु" में दो, "स्कन्दगुप्त" में दो और "चन्द्रगुप्त" में एक सम्मिलित है । शेष 22 चतुर्दशपदियाँ स्वतंत्र रूप से लिखी एवं प्रकाशित हुयी हैं ।

"प्रसाद संगीत" में संकलित उनकी चतुर्दशपदी को देखने से पता चलता है, कि उनकी चतुर्दशपदियों में अष्टपदी एवं षटपदी जैसा कोई विभाजन नहीं है । शेक्सपीयर की चतुर्दशपदियों के समान ही उनकी चतुर्दशपदी का सारा सार अन्तिम द्विपदी में ही होता है, दूसरे उनका छंद भी भिन्न नहीं होता, उनकी चतुर्दशपदियों का अत्यानुप्रास क्रम भी शेक्सपीयर से भिन्न है । प्रसाद की चतुर्दशपदियों की तीसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि उसमें शब्दों का चमत्कार भी इतना नहीं है किन्तु उनमें भाव-गंभीर्य, अर्थ - विच्छित्ति और उनकी अन्विति अधिक है। इस दृष्टि से प्रसाद इस काव्य - विधा में अन्य हिन्दी कवियों से आगे है । निदर्शन के रूप में यहाँ पर प्रसाद की एक चतुर्दशपदी प्रस्तुत है -

क्यों जीवनधन : ऐसा ही न्याय तुम्हारा क्या सर्वत्र ?
 लिखते हुये लेखनी हिलती कर्पता जाता है यह पत्र ।
 औरों के प्रति प्रेम तुम्हारा, इसका मुझको दुःख नहीं,
 जिसके तुम हो एक सहारा उसको भूल न जाव कहीं ।
 निर्दय होकर अपने प्रति अपने को तुमको सौंप दिया,
 प्रेम नहीं करूणा करने को क्षण भर तुमने समय दिया ।
 अब से भी तो अच्छा है, अब और न मुझे करो बदनाम,
 क्रीड़ा तो हो चुकी तुम्हारी मेरा क्या होता है काम ?
 स्मृति को लिये हुये अन्तर में जीवन कर देंगे निःशेष,
 छोड़ो अब भी दिखलाओं मत मिलजाने का लोभ विशेष ।
 कुछ भी मत दो, अपना ही मुझ बना लो यही करो,
 रखो जब तक आँखों में फिर और द्वार पर नहीं ढरो ।
 कौर बरोनी का न लगे हों, इस कोमल मन को मेरे,
 पुतली बन कर रहें चमकते , प्रियतम । हम दृग में तेरे । ¹

1. "प्रियतम" - "प्रसाद संगीत" जयशंकर प्रसाद पृष्ठ 140, इन्दु, सितम्बर - 1914 में प्रथमवार प्रकाशित ।

क्रान्तिकारी कवि "निराला" हिन्दी में स्वच्छन्दतावाद के समर्थक कवि हैं । उन्होंने न केवल छंदों के बंधों को तोड़ा है, अपितु इस दिशा में नई और सफल यात्रायें भी की हैं । निराला जी ने 15 चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं जो "निराला ग्रन्थावली" के तीसरे संस्करण (वोल्यूम) में संकलित हैं । निराला जी की चतुर्दशपदियों के वर्ण्य विषय बहुत विस्तृत हैं । उन्होंने अपनी चतुर्दशपदियों के विषय प्रेम, प्रकृति – सौन्दर्य एवं देशभक्ति आदि को बनाया है । किन्तु उन्होंने इस विधा के रचना विधान में एक अभिनव प्रयोग किया है और यह है अंग्रेजी चतुर्दशपदी का भारतीय गीत की शैली में ढलाव । निराला जी की चतुर्दशपदियों में प्रारम्भ में एक तुकान्त द्विपदी होती है, इसके बाद तीन चतुष्पदियों की योजना जिनकी अंतिम पंक्ति परस्पर तुकान्त होने के साथ-साथ प्रारम्भिक द्विपदी से भी तुकान्त होती है । यह है निराला जी का निराला चतुर्दशपदी का विधान ।

सुभद्राकुमारी चौहान के "मुकुल तथा अन्य कविताएं" नामक संग्रह में उनकी तीन चतुर्दशपदियाँ – "जीवन फूल", "आराधना" तथा "आगमन" संग्रहीत हैं । "जीवन फूल" नामक चतुर्दशपदी का वर्ण्य विषय प्रेम है । प्रखर पवित्र प्रेम के उपहास से उत्पन्न वेदना की मर्मान्तक अभिव्यक्ति नियति से समझौता एवं समर्पण इस चतुर्दशपदी की भावाभिव्यंजना है । "आराधना" सफल – प्रेम की अभिव्यक्ति है, जबकि "आगमन" में जीवन की सुख – दुख की धूप – छांव की दार्शनिक अभिव्यक्ति हुयी है। सुभद्राकुमारी चौहान ने अपनी चतुर्दशपदियों की रचना स्वतंत्र रूप से की है, जिसमें सात द्विपदियें हैं, परन्तु उनका एकल भाव सम्वेदन शेक्सपीयर की तरह अन्तिम द्विपदी में उत्कृष्टता के साथ समाप्त होता है । यहाँ पर सुभद्रा कुमारी चौहान की एक चतुर्दशपदी प्रस्तुत है –

"मेरे भोले हृदय ने कभी न इस पर किया विचार।

विधि ने लिखी भाल पर मेरे सुख की घड़ियाँ दो ही चार ।।

छलती रही सदा ही मृगतृष्णा – सी आशा मतवाली ।

सदा लुभाया जीवन साकी ने दिखाला दी थी प्याली ।।

मेरी कलित कामनाओं की ललित लालसाओं की धूल ।
 आँखों के आगे उड़-उड़ करती है व्यथित हृदय में शूल ॥
 उन चरणों की भक्ति भावना मेरे लिए हुई अपराध ।
 कभी न पूरी हुई अभागे जीवन की भोली सी साध ॥
 मेरी एक - एक अभिलाषाओं का कैसा ह्रास हुआ ।
 मेरे प्रखर पवित्र प्रेम का किस प्रकार उपहास हुआ ॥
 मुझे न दुःख है जो कुछ होता हो उसको हो जाने दो ।
 निठुर निराशा के झोंकों को मनमानी कर जाने दो ॥
 हे विधि, इतनी दया दिखाना मेरी इच्छा के अनुकूल ।
 उनके ही चरणों पर विखरा देना मेरा जीवन - फूल ॥¹

छायावादोत्तर युग की हिन्दी कविता में प्रस्तुत विधा की सृजना की दिशा में बहुत से कवियों ने उत्साह दिखाया है । इस युग के अनेक कवियों ने चतुर्दशपदी काव्य में अपना योगदान दिया है । किन्तु हम यहाँ पर विस्तार भय से कवियों के प्रदेय पर समीक्षात्मक दृष्टि से अत्यंत संक्षेप में विचार करेंगे ।

डॉ. रामविलास शर्मा इस दृष्टि से महत्वपूर्ण कवि हैं । वे प्रकृतिवादी तर्ज के रचनाकार हैं । शर्मा जी पहले समालोचक हैं, और बाद में कवि हैं । इनकी चतुर्दशपदियाँ उनके प्रगीतात्मक संग्रह "रूपतरंग" में संग्रहीत हैं । दो चतुष्पदियाँ "तार सप्तक" में भी हैं । उन्होंने अपनी चतुर्दशपदियों में पेट्रार्क मॉडल को अपनाया है । "महाबलीपुरम" का समुद्रतट चतुर्दशपदी में शर्मा जी ने इसे उत्तर तथा दक्षिण की संस्कृति का सेतु बताया है । तार सप्तक में "परिणति" और "सिलहार" ये दो चतुर्दशपदियाँ हैं । "सिलहार" में फसल कटाई के बाद सिला बीनने वाली महिलाओं का बड़ा मार्मिक एवं यथार्थपरक चित्रण है । इसी प्रकार अन्य चतुर्दशपदियों का वर्ण्य विषय प्रणय, ऋतु तथा जन - जन को सुखद लगने वाले तम आदि हैं । कुल मिलाकर इनकी चतुर्दशपदियों की भाव - भूमि बहुत विस्तृत है ।

1. जीवन फूल - "मुकुल तथा अन्य कविताएं" - सुभद्राकुमारी चौहान

डॉ. प्रभाकर माचवे भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय कवि हैं। अकेले "तार सप्तक" में उनकी चतुर्दशपदियाँ "रेखाचित्र" सोवियत यूनियन जिन्दाबाद, "डरू संस्कृति" तथा "मैं और खाली चा की प्याली" नामक चतुर्दशपदियाँ हैं। उनकी अन्तिम चतुर्दशपदी "मैं और खाली चा की प्याली" शीर्षक के अन्तर्गत उनकी तीन चतुर्दशपदी हैं। माचवे जी ने तीन चतुष्पदी और एक द्विपदी का विधान अपनाया है। इनकी चतुर्दशपदियों में कथ्य का सार द्विपदी में उत्कृष्टता को पहुँचता है। माचवे जी ने पेट्रार्क तथा शेक्सपीयर मॉडल को अपने तरीके से काट - छोट कर अपने अनुकूल बनाया है।

नरेन्द्र शर्मा की चतुर्दशपदियों में एक ही भाव अथवा एक ही विचार मिलता है, जो अपने में पूर्ण होता है। यहाँ पर हम नरेन्द्र शर्मा की एक चतुर्दशपदी प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसमें कवि ने प्रतिपादित किया है, कि मानव का मानवत्व पार्थिव संघर्ष में सहर्ष कूदकर उससे इस प्रकार बाहर निकलने में विद्यमान रहता है कि उसके मुख से आह भी न फूटे, तभी वह मनु का सच्चा वंशज भी प्रमाणित होता है। आज मानव दानव बनता जा रहा है। यही बड़ी त्रासद स्थिति है। कवि के संघर्ष का भार अंतिम द्विपदी में उत्कर्ष को छूकर अभिव्यंजित हुआ है -

अग्नि का कर आचमन, संकल्प कर मानव
तम अनल के सिंघु, भी बढ़ता चलेगा तू।
तू नहीं वह चीज जो जल राख हो जाए,
नित्य निखरेगा मुनज जितना जलेगा तू।
मिश्र, चीन, सुमेरू, बाबुल बुलबुल तेरे,
सम्यता के स्रोत मनु। कैसे रुकेगा तू।
विघ्न बाधा देख अब कैसे झुकेगा तू
बहुत सी मंजिल हुयी हैं पार, देख
बहुत से वटमार, फिर उनसे लड़ेगा तू

चेतना हो मूर्त तुझमें संवरने आयी
 क्या न मिट्टी से कनक - प्रतिमा गढ़ेगा तू
 यहाँ कौन अयुद्ध है कटिबद्ध हो मानव
 अब मनुज ही देव मेरा मनुज ही दानव।¹

छायावादोत्तर युग के हिन्दी कवियों में चतुर्दशपदी - काव्य - विद्या की दृष्टि से त्रिलोचन शास्त्री सर्वाधिक गौरव के अधिकारी हैं। हिन्दी सॉनेटों का अपना विशेष स्वाद पहली बार त्रिलोचन ने ही दिया है। उन्होंने इस दिशा में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सॉनेट के वह पहले समर्थ कवि हैं। यहाँ तक कि त्रिलोचन और सॉनेट एक दूसरे के पर्याय बन गये हैं। शायद ही कोई कवि ऐसा होगा, जिसका छंद या काव्य रूप उसका पर्याय बन जाये। शास्त्री मार्क्सवादी कवि होते हुये भी एक विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्होंने अपनी रचना - धर्मिता को पार्टी प्रोपेगन्डा के कुचक्र से सावधानी पूर्वक बचाया है। त्रिलोचन जी का सृजन कहीं भी सिद्धांत की व्याख्या का न तो हथियार ही बनता है और प्रकट रूप से अपने में कहीं सिद्धांतों को मुखरित ही होने देता है। यही कारण है कि उनकी कविताएं काव्यत्व की कसौटी पर आस्वाद्य ठहरती हैं। त्रिलोचन जी का कवि व्यक्तित्व परम्परा के विनत स्वीकार के साथ - साथ प्रयोगों के लिये कभी अनुदार नहीं बना है, अपितु उसमें सर्वदा एक उदार अवकाश बना रहा है। त्रिलोचन ने सॉनेट के विभिन्न रूपों का अध्ययन यांत्रिक ढंग से नहीं किया, बल्कि उसमें वस्तु और रूप की अन्विति के तर्क का अध्ययन किया है। रचना - विधान के इसी सूक्ष्म अध्ययन के कारण त्रिलोचन के सॉनेटों में विविधता आ सकी है। उनके काव्य में चतुर्दशपदी की सफल यात्रा इसका भव्य निदर्शन है।

हिन्दी कविता में "दिगन्त" के प्रकाशन के साथ शास्त्री जी ने "सॉनेट" को अपनी भावाभिव्यंजना का सफल वाहक बनाया है। "दिगन्त" खालिस उनकी चतुर्दशपदियों का ही संग्रह है। इसके बाद "उस जनपद का कवि हूँ", "अनकहनी भी

1. हंस मई - 1942, पृष्ठ 834

कुछ कहनी है" यह दोनों भी उनके चतुर्दशपदियों के ही संकलन हैं । "तुम्हें सौंपता हूँ" नामक काव्य संग्रह में भी त्रिलोचन जी की 31 चतुर्दशपदियाँ संग्रहीत हैं ।

सॉनेट में त्रिलोचन ने अधिकांश उपलब्ध रूपों का प्रयोग किया है। किंवदन्ती की तरह यह बात प्रचलित रही है कि उन्होंने वर्ड्सवर्थ से भी ज्यादा सॉनेट लिखे हैं। यहाँ एक सांश्लिष्ट और थोड़ा बड़ा काव्य रूप है । त्रिलोचन जी ने प्रस्तुत विधा के प्रणयन में अंग्रेजी परम्परा के दोनों रूपों – पेट्रार्कन और शेक्सपीरियन – का न केवल सफलता पूर्वक प्रयोग किया है, अपितु मूलतः अंग्रेजी कविता से प्रभावित इस काव्य रूप को उन्होंने अपने ढंग से मोड़कर इसे विशुद्ध जातीय एवं भारतीय रूप प्रदान किया है। वे हिन्दी चतुर्दशपदी के ऐसे पर्याय बन गये हैं कि उनमें विदेशीपन की गंध तो कहीं छू तक नहीं गयी । हिन्दी के चतुर्दशपदियों की रचना में जैसा साफ सुथरापन एवं दुस्स्त बनावट और कसावट त्रिलोचन में है, वैसी किसी और कवि में नहीं । जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, कि त्रिलोचन जी का व्यक्तित्व बड़ा लचीला एवं आग्रह मुक्त है । उनमें परम्परा के विनत स्वीकार के साथ प्रयोगों के लिये पूर्ण सावकाशता है । यही कारण है कि त्रिलोचन जी ने न केवल परम्परागत चतुर्दशपदियों की सफल रचना की है, अपितु प्रयोगों को नवीनता का जीवंत संस्पर्श देकर उन्हें प्राणवान एवं धारदार भी बनाया है । कदाचित यह कहा जाये कि हिन्दी में वे अप्रियतम तथा बेजोड़ हैं तो कोई अतिशयोक्ति न होगी । त्रिलोचन जी ने अंग्रेजी के प्रस्तुत काव्य रूप का हिन्दी में उसी निपुणता तथा विदग्धता के साथ प्रयोग किया है जितना शमशेर ने हिन्दी में ग़ज़ल का । डॉ. केदारनाथ सिंह के शब्दों में कहें तो "हिन्दी भाषी जाति के साथ त्रिलोचन के सम्बन्ध में जिस अभिन्नता की बात बार – बार कही जाती है उसका एक विशिष्ट रूप उनके सॉनेटों में दिखाई देता है।" सॉनेट जैसा कि सब जानते हैं – हिन्दी में अंग्रेजी कविता के प्रभाव से आया है । पर त्रिलोचन ने रोलान्ड के मात्रिक संगीत में ढालकर इसका एक अलग सांचा तैयार किया है, जो पूरी तरह हिन्दी की आंतरिक लय से मेल खाता है । सॉनेट के लिये इस विशिष्ट छंद में निहित सम्भावनाओं की खोज त्रिलोचन की हिन्दी भाषा की प्रकृति की पहचान का एक और उदाहरण है ।

इनके अतिरिक्त छायावादोत्तर हिन्दी कविता में नेमीचन्द्र जैन, भारत भूषण अग्रवाल, डॉ. केदारनाथ सिंह, रामइकबाल सिंह राकेश, बालकृष्ण राव प्रभृति कवि साहित्यिकों ने इस विधा के सृजन में पर्याप्त स्वतंत्रता के साथ अपना अमूल्य योगदान किया है। हिन्दी के चतुर्दशपदी काव्य का एक विहंगम दृष्टि से सर्वेक्षण करने के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि हिन्दी कवियों ने आलोच्य विधा की सृजना में पर्याप्त परिष्कार के साथ परिवर्तन एवं परिवर्धन किये हैं। चतुर्दशपदियों की पंक्ति के योग की योजनाओं में – जैसे अष्टपदी, षटपदी, तीन चतुष्पदी और एक द्विपदी, एक चतुष्पदी और एक दस पदी और सात द्विपदियाँ – अन्तर होते हुये भी सब में एक ही भाव और एक ही विचार की अन्विति कहीं भी विच्छिन्न नहीं होने पाती। कुल मिलाकर अंग्रेजी के इस काव्य रूप का हिन्दी में कोई उन्नत विकास तो नहीं हुआ, पर जितना भी इसका ग्रहण हुआ है, वह निर्दुष्ट है।

अध्याय - 3

त्रिलोचन का चतुर्दशपदी
काव्य-वस्तु परीक्षण

अध्याय - 3

त्रिलोचन का चतुर्दशपदी काव्य - वस्तु परीक्षण

छायावाद के बाद वाली पीढ़ी के कवियों में त्रिलोचन शास्त्री का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रगतिवाद काव्य - धारा के कुछ चुने हुये कवियों में उनका नाम निःसंकोच लिया जा सकता है। त्रिलोचन प्रगतिवादी धारा के सशक्त हस्ताक्षर हैं। शास्त्री जी निराला के बाद और उन्हीं की परम्परा में आने वाले बहुत ही समर्थ कवि हैं।

त्रिलोचन की कविताओं में एक ओर सादगी विद्यमान है, तो दूसरी ओर अपनी मिट्टी की सोंधी - सोंधी गन्ध भी है। उनकी कविता कहीं भी अपने औसत धरातल से नीचे नहीं उतरी है। इनकी कविता आकार में छोटी है, परन्तु प्रभाव में तीव्र है। जैसा कि हम अन्यत्र देख चुके हैं, त्रिलोचन ने व्यवहारिक जीवन में स्वयं बहुत संघर्ष किया है, इसलिए उनकी कविताओं में दैन्य अभाव और संघर्ष का यथार्थ चित्रण हुआ है। इनकी कविताएं संघर्षजन, अटूट विजय-भाव और शक्ति से परिपूर्ण हैं। त्रिलोचन की कविता एक ठेठ - भारतीय जन की कविता है। कवि ने अपनी कविताओं में स्वानुभूत जीवन रूपायित किया है। कवि ने मानव के रागात्मक पक्ष का बराबर ध्यान रखा है, पर कहीं - कहीं उनकी कविता बौद्धिकता के आधिक्य के कारण रूखी और वेगहीन भी हो गयी है।

त्रिलोचन शास्त्री ने अपनी कविताओं में चतुर्दशपदी (सॉनेट) काव्य रूप का सबसे अधिक प्रयोग किया है। उन्होंने इस दिशा में सर्वाधिक सफल यात्राएं की हैं। सॉनेट में जैसे कवि त्रिलोचन के प्राण ही बसते हैं। उसी की बरकत जैसे त्रिलोचन का कवि जीवित रहेगा। त्रिलोचन सॉनेट के पहले समर्थ कवि हैं। शायद ही कोई ऐसा कवि होगा, जिसका कोई छंद या काव्य रूप उनका पर्याय बना हो। सॉनेट में त्रिलोचन ने अधिकांश उपलब्ध काव्य - रूपों का प्रयोग किया है। पैटार्कीय सॉनेट भी उन्होंने लिखे और शेक्सपीयर - सारिणी के सॉनेट भी, बल्कि उनमें कहीं - कहीं इन्होंने स्पेन्सर और सरे - दोनों की तुक योजनाओं का प्रयोग भी किया है। शास्त्री जी मार्क्सवादी कवि होते हुये भी एक विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी हैं। पर यहाँ हमें त्रिलोचन के काव्य - जगत में चतुर्दशपदी रूप के वस्तु - परीक्षण तक ही

अपने को सीमित रखकर उनका विवेचन - विश्लेषण अभीष्ट है ।

त्रिलोचन जी का कवि - कर्म एक दीर्घकाल का साक्षी रहा है । एक लम्बे अंतराल में प्रणीत इनकी इनकी चतुर्दशपदियों में हमें उनके रचनात्मक विकास के अनेक पड़ावों से साक्षात्कार होता है । त्रिलोचन जी के चतुर्दशपदी कवि - कर्म के प्रतिपाद्य पर अवधान केन्द्रित करने से पता चलता है कि उनका वर्ण्य - विषय व्यापकता एवं विविधता लिये हुये है । वर्ण्य - विषय के आधार पर हम उनकी चतुर्दशपदियों को अधोलिखित वर्गों में विभक्त कर सकते हैं ।

1. प्रेम भावना सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ ।
2. प्राकृतिक सौन्दर्य सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ ।
3. सामाजिक चेतना सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ ।
4. ग्रामीण जीवन की विविधता को चित्रित करने वाली चतुर्दशपदियाँ ।
5. व्यंग्यात्मक भाव की चतुर्दशपदियाँ ।
6. राजनीति सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ ।
7. आत्म - चित्रण प्रधान चतुर्दशपदियाँ ।
8. नागार्जुन के बारे में चतुर्दशपदियाँ ।
9. यथार्थवादी चतुर्दशपदियाँ ।

1. प्रेम भावन सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ :-

त्रिलोचन जी ने प्रेम - भावना का चित्रण अनेक कोणों से किया है । उनके प्रेम चित्रण को इन विविध कोणों के आधार पर निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है -

1. साहचर्य पर आधारित प्रेम ।
2. श्रम पर आधारित प्रेम ।
3. रूप और सौन्दर्य पर आधारित ।
4. गार्हस्थिक प्रेम ।
5. आत्मिक प्रेम

त्रिलोचन शास्त्री की आरम्भिक चतुर्दशपदियों प्रेम परक हैं । उनकी सबसे अधिक चतुर्दशपदियों प्रेम पर आधारित हैं । त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में अत्याधिक मात्रा में प्रेम की भावना निहित है । अन्य कवियों की प्रेम सम्बन्धी रचनाओं में जिस मानसिक वेदना, निराशा और विषाद के चित्र मिलते हैं, उनका त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में अंश मात्र भी उल्लेख नहीं हुआ है । त्रिलोचन की प्रेम - परक चतुर्दशपदियों में उनका अपना वैशिष्ट्य है ।

त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में अभिव्यंजित प्रेम हर प्रकार की रूढ़ि और रीति से मुक्त प्रेम में लय पैदा करता है, जगत को जीवन का प्रेमी बनाता है । प्रेम के बारे में उनकी दृष्टि एकदम साफ और स्पष्ट है, इस दृष्टिकोण में रोमांटिक कवियों जैसी चेतना है, परन्तु त्रिलोचन के यहाँ प्रेम कल्पना में नहीं यथार्थ के घरातल पर विकसित होता है । त्रिलोचन का यह प्रेम जीवन और जगत् से दूर एकांत में नहीं ले जाता है ।

"बदल गया हूँ इसी लिए मैं आज नघीने,
तट जैसे लहरों को पीकर बदल गया हो,
मधु ऋतु में दल - दल पीपल हो गया हो,
जैसे स्वप्न अपूर्व आ गये मन में जीने,
कण - कण अन्वेषण कर मैंने तुमको पाया,
क्षण - क्षण गीतों में तुम आई, मैंने गाया¹"

त्रिलोचन के नजदीक प्रेम शौक नहीं है, वह जीवन की अनिवार्यता है -

"हम तुम दोनों आज दूर हैं, चाहें भी तो
पास नहीं आ सकते, वैसे कहने को
कुछ भी कह लें, मन समझा लें, पर रहने को
साथ अजी छोड़ो भी, अपने मन की भी तो
सुननी पड़ती है, फिर बाधाएँ भी तो
एक - एक से बढ़कर हैं"²

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 11

2. अनकहनी भी कुछ कहनी है - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 74

इन प्रेम सम्बन्धी चतुर्दशपदियों में जीवन की लय में मानव मन की मुक्ति का राग मुखरित होता है । त्रिलोचन की दृष्टि में प्रेम की सफलता व्यक्ति का समाज में रागमय समर्पण करा देने में है ।

त्रिलोचन शास्त्री ने प्रेम के विभिन्न रथों पर चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं जो इस प्रकार से हैं -

1. साहचर्य पर आधारित प्रेम :-

त्रिलोचन ने प्रेम को विषय बनाकर प्रभूत चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं । परन्तु यह प्रेम न तो मात्र रूप लिप्सा पर ही आधारित है और न केवल ऐन्द्रिकता तथा अतृप्ति पर ही। त्रिलोचन के काव्य में हिन्दी में पहली बार सामाजिक प्रेम का चित्रण हुआ है, जिसमें प्रेम विलासिता और शारीरिक भूख से परिचालित न होकर साहचर्य पर आधारित है -

"धन की उतनी नहीं मुझे जन की परवा है
जितनी । जो मुझसे खुलकर मन से मिलता है
में उसका वशवर्ती हूँ । इसी से खिलता है
मेरे प्राणों का शतदल । एक ही दवा है

.....

जीवन के सौ रोगों की, चाहो तो ले लो

.....

अपनापन सब पर, पसार दे खलकर खेलो"¹

इस प्रकार से त्रिलोचन के चतुर्दशपदी काव्य में साहचर्य पर आधारित प्रेम चित्रण के अकूत उदाहरण पदे - पदे देखे जा सकते हैं ।

2. श्रम पर आधारित प्रेम :-

त्रिलोचन जी का श्रम पर आधारित प्रेम असामयिक नहीं है । यह प्रेम का किसानी रूप है । प्रेम और श्रम की यह मिश्रित चेतना हिन्दी काव्य के लिये बिलकुल नई है । हास्यावादी कवि का प्रेम हवाई और काल्पनिक था । उसे बुलबुल वृक्ष

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 17

की डाली पर से ही यौवन का संगीत सुना देती थी परन्तु त्रिलोचन का प्रेम सहयोग की भूमि पर आधारित होकर श्रम - सम्बन्ध भावना से उत्पन्न होता है ।

"श्रम को फलीभूत करने में स्वयं निचोड़ी
अपनी रग - रग जिसने और पसीना ढाला,
क्षेत्र किया तैयार, भले ही खूब चिचोड़ी
चिताओं ने उसकी काया, पहले वाला
रह न जाय बल, इस से क्या"¹

अथवा

"..... पथिकों के साथी
भूमि, वायु, नभ है, रवि - शशि न बंध तुड़ाए
ठहरा कौन, चली जब जब गर्मी की भाथी,
हम तुम समय नहीं मुहूर्त को देख चले थे,
पंखे लू के मारुत ने अविराम झले थे"²

3. रूप और सौन्दर्य पर आधारित प्रेम :-

त्रिलोचन शास्त्री की अधिकतर चतुर्दशपदियाँ प्रेम पर आधारित हैं, जिससे रूप और सौन्दर्य पर त्रिलोचन जी ने अधिक चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं । त्रिलोचन जी रूप और सौन्दर्य पर आधारित प्रेम परक चतुर्दशपदियों में उनका अपना वैशिष्ट्य है । रूप चित्रण में भी गति रखते हैं । एक उदाहरण दृष्टव्य है -

"देख रहा हूँ मैं तुम को मानव काया में
अपने से अभिन्न, लेकिन विश्वास न होता
तुम भी पृथ्वी की पुत्री हो, स्वर्ग न खोता
तुम को तो नभ की नीरव सुनील छाया में,"³
इस चतुर्दशपदी में कवि ने अपने काव्य सामर्थ्य का परिचय दिया है ।

1. उस जनपद का कवि हूँ - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 89
2. उस जनपद का कवि हूँ - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 67
3. अनकहनी भी कुछ कहनी है - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 12

4. गार्हस्थिक प्रेम :-

यह प्रेम कवि के जीवन में शक्ति और प्रेरणा बनकर आया है । यह असामाजिक या तथाकथित प्रेम नहीं है, बल्कि जीवन के उत्तरदायित्वों को वहन करने वाला गार्हस्थ प्रेम है जिसकी परम्परा हिन्दी में मिट सी गयी है ।

"सचमुच, इधर तुम्हारी याद तो नहीं आई,
झूठ क्या कहूँ । पूरे दिन षष्ठीन पर खटना,
बासे पर आकर पड़ जाना और कमाई
का हिसाब जोड़ना, बराबर चित्त उचटना ।
इस उस पर मन दौड़ाना । फिर उठ कर रोटी
करना । कभी नमक से, कभी साग से खाना।"¹
कवि ने गार्हस्थ जीवन को अत्याधिक मूल्यवान माना है ।

5. आत्मिक स्तर पर प्रेम :-

त्रिलोचन प्रेम को आत्मिक स्तर पर स्वीकार करते हैं । मात्र कृत्रिम प्रणयाभिनय त्रिलोचन जी को प्रिय नहीं है । वे प्रेम को मधुर युगल गीत की कड़ी समझते हैं ।

"याद तुम्हारी आई है, गम्भीर उदासी
पकड़ रही है मुझे, करूँ क्या , लाचारी है
जीवनकी कल्पना सत्य से जो हारी है
नया नहीं है, कौन वृत्ति थी मन में प्यासी"²

2. प्राकृतिक सौन्दर्य सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ :-

सौन्दर्य की चेतना जैसे कवि के हृदय पर स्थाई रूप से छा गयी है । उसने प्रकृति में एक सौन्दर्य अनुभव किया है । त्रिलोचन के काव्य में प्रकृति चित्रण - सम्बन्धी चतुर्दशपदियों की कमी नहीं है । इसे कवि ने प्रेरणा के रूप में ग्रहण किया है।

1. उस जनपद का कवि हूँ - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 46

2. अनकहनी भी कुछ कहनी है - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 20

इन चतुर्दशपदियों में प्रकृति के अनेक रूपों और मुद्राओं का अंकन हुआ है ।

1. प्रकृति का निर्मल रूप ।
2. नये प्रभात पर आधारित ।
3. प्रकृति के रूप और प्रभाव पर आधारित ।
4. मौसम सम्बन्धी।
5. प्रकृति और मनुष्य ।

1. प्रकृति का निर्मल रूप :-

त्रिलोचन शास्त्री के हृदय पर सौन्दर्य की चेतना स्थाई रूप से छा गयी है । उन्होंने प्रकृति में एक सौन्दर्य अनुभव किया है । त्रिलोचन के काव्य में प्रकृति का निर्मल रूप भी देखने को मिलता है । जिसका एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है -

" सकल नया है

साज सिंगार प्रकृति के तन पर अब उनया है

मेघों का दल श्याम नहीं खंजन आए हैं

दूर देश से नीड़ बनाने लगी बया है

पुरइन के पत्तों पर सरसिज मुस्काए हैं,

सर शोभित हैं और कुई के दिन आए हैं"¹

जिस चतुर्दशपदीकार के हृदय में मानव के इस निर्मल रूप को पाने की चेतना होगी, वह उस रूप को सौन्दर्य और निर्मलता प्रदान करने के लिये न केवल सोचता रहेगा, बल्कि उसके लिये संघर्ष करेगा ।

2. नये प्रभात पर आधारित :-

नये प्रभात की किरणों से चतुर्दशपदीकार त्रिलोचन का काव्य भरा पड़ा है । प्रभात चतुर्दशपदीकार को पुकारता है, कभी वह उसके पास आता है ।

"प्रातः हुआ, पास ही बैठा कोई कागा

रहता है, उस की इन ध्वनियों को प्रत्युत्तर

जरा दूर से देता है दूसरा न जागा
है संगीत - खगों में कोई मुर्ग का स्वर
नहीं सुन पडा है अब तक, पर-वाणी का वर"¹

2. प्रकृति के रूप और प्रभाव पर आधारित :-

त्रिलोचन ने प्रकृति के रूप और प्रभाव दोनों का विशेष ध्यान रखा है, इसलिए उनकी प्राकृतिकसौन्दर्य प्रधान चतुर्दशपदियाँ कहीं भी अपने मानवीय संदर्भ से कटी नहीं हैं। ऐसी चतुर्दशपदियों में जातीय जीवन के प्राकृतिक परिवेश का बोध प्रकट होता है। उनकी प्रकृति सम्बन्धी चतुर्दशपदियों में रूप, रस, गन्ध और ध्वनि का संसार कितना समृद्ध है - यह तथ्य अधस्तनः अंकित उदाहरण से प्रदत्त है।

"रजनी गंधा से वातावरण गमकता है
शीतल बयार ले कर विचार आई नव नव
यह दूरी, केवल स्थान की नहीं मन की है,
विह्वल अधीरता क्षण क्षण की कण कण की है" ²

4. मौसम सम्बन्धी :-

त्रिलोचन शास्त्री के काव्य में मौसम सम्बन्धी चित्र भरे पड़े हैं।

"झाँयें झाँयें करती दुपहरिया नाच रही थी
जलती हुई भार - सी गर्मी की पगडंडी
मुझे ले गई आमों की बारी में की
नहीं अधिक की आशा पाकर छाया ठंडी"³

प्रकृति का प्रयोग उनकी चतुर्दशपदियों में अलग अलग रूप में किया गया है -

"स्वागत है, स्वागत वसन्त प्रिय, आओ आओ
शिशिर काल के कुहरे पर जब चित्र सुनहले

1. उस जनपद का कवि हूँ - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 75
2. उस जनपद का कवि हूँ, पृष्ठ 47
3. उस जनपद का कवि हूँ, पृष्ठ 57

रवि अपने कर से लिखता है, तब तुम पहले
विहगों को नूतन - स्वर दो, फिर मिल कर गाओ" ¹

"पीपल के पत्ते ने ज्यों मुँह खोला - खोला
त्यों चटाक से लगा तमाचा आकर लू का
झेल गया वह भी आखिर बच्चा था भू का" ²

• त्रिलोचन के मुख्य विषय प्रकृति ही हैं ।

5. प्रकृति और मनुष्य का आदिम सम्बन्ध :-

त्रिलोचन के काव्य में गांव और शहर का द्वन्द है । किन्तु द्वन्द में मनुष्य और प्रकृति के बीच जैसे खून का रिश्ता है । इसलिये प्रकृति सम्बन्धी उनकी श्रेष्ठ चतुर्दशपदियाँ काशी की गंगा के इर्द-गिर्द ही लिखी गयी हैं ।

"देख रहा हूँ गंगा के उस पार धूल की
धारा बहती चली जा रही है, चढ़ - चढ़कर
वायु तरंगों पर अपने बल से बढ़ - बढ़कर
धूसर करती हुई क्षितिज को, वृक्ष - मूल की" ³

इस चित्र में एक अनुभव है । ऐसा अनुभव जिसमें प्रकृति से मनुष्य अलग नहीं है ।

त्रिलोचन की प्रकृति सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ आभास देती हैं आदिम संवेदना का लेकिन चित्रों के मूल में दृष्टि है आधुनिक । यह दृष्टि प्रायः अपने आस पास के अतिपरिचित और साधारण दृश्यों पर टिकती है और रमती भी है ।

जीवन के प्रेमी त्रिलोचन प्रकृति में भी जीवन ही देखते हैं, बल्कि प्रकृति में उनकी दृष्टि वहीं जाती है जहाँ जीवन दिखता है ।

1. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ 224
यह उद्धरण त्रिलोचन की कृति - "फूल नाम है एक" से है ।
2. वही ।
3. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसार, पृष्ठ 84
यह उद्धरण त्रिलोचन के कृति - शब्द से है पृष्ठ 11

3. सामाजिक चेतना सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ :-

त्रिलोचन शास्त्री ने सामाजिक जीवन की अनेक विविधताओं को प्रस्तुत किया है जिनको हम इस प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं -

1. महानगरीय सभ्यता पर आधारित ।
2. मध्यवर्गीय परिवार पर आधारित ।
3. अकेलेपन पर आधारित ।
4. संघर्षजन्य चतुर्दशपदियाँ ।
5. जनशक्ति पर आधारित ।
6. अवसाद करुणा सम्बन्धी ।
7. अटूट - विजय भाव सम्बन्धी ।
8. शोषण सम्बन्धी ।
9. कर्मठता सम्बन्धी ।
10. वेदना सम्बन्धी ।

त्रिलोचन जी की चतुर्दशपदियाँ हमारे विराट सामाजिक जीवन के बहुल विविधताओं की चतुर्दशपदियाँ हैं । चतुर्दशपदीकार ने सामाजिक जीवन को सीधे और सपाट ढंग से अभिव्यक्त किया है । त्रिलोचन जी की चतुर्दशपदियों में सामाजिक घटनाओं का वर्णन बहुत कम है । मानव जीवन की दशाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति अधिक है । वे मानवीय अनुभवों और जीवन की विभिन्न दशाओं की अभिव्यक्ति करते हुये संघर्ष, आस्था, जिजीविषा, प्रेम, न्याय और स्वतंत्रता जैसे जीवन मूल्यों की व्यंजना करते हैं । त्रिलोचन के सॉनेट संग्रह "अरघान" में गनह सामाजिकता वाले महाकुंभ सम्बन्धी सॉनेट हैं -

"आदमियों की वह मद्देह, वह भीड़ ठसाठस,
उठती हुई गनगनाहट, आगे का रेला,
पीछे का दबाव, चारों ओर की कसाकस
आदमियों के सिर ही सिर, ऐसा था मेला।"¹

1. अरघान - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 56

1. महानगरीय सभ्यता:-

छोटे शहर के चित्र को त्रिलोचन शास्त्री ने बड़ी कुशलता से कम से कम शब्दों में प्रस्तुत किया है ।

"सरसों छींटो भूमि तक न जाये वह ठेला -

ठेली थी, आँखें कुछ देख नहीं पाती थीं,

कान सुन नहीं पाते थे, मिट्टी का ढेला

ही मनुष्य था यदि साँसे बाहर जाती थीं।" ¹

2. मध्यवर्गीय परिवार :-

त्रिलोचन ने "दिगन्त" के सॉनेट में कलकत्ते के बंगाली परिवार के माध्यम से शहरी जीवन के मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण किया है कि वहाँ का गरीब और अभावमय जीवन कैसा है ।

साधारण जन के प्रति कवि के उत्कट प्रेम की अभिव्यक्ति उसकी अनुलिखित पंक्तियों से स्पष्ट है -

नये युग के उदगाता

वे हैं जो हैं निपट निरन्तर लेकिन जिनके

प्राणों की ललकार जानती कभी न रुकना,

जिनका आहत - मान जानता नेक न झुकना ।" ²

3. अकेलापन :-

चतुर्दशपदीकार त्रिलोचन समाज से विलग पल भर के लिए नहीं रह सकते । एकाकीपन कवि के लिए असह्य है ।

अकेलेपन की ऐसी समाज सापेक्ष बैचेनी कहीं - कहीं दिखाई नहीं देती - जैसी त्रिलोचन की इस चतुर्दशपदी में है -

"सचमुच इधर तुम्हारी याद तो नहीं आई,

झूठ क्या कहूँ । पूरे दिन मशीन पर खटना,

1. अरघान - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 56

2. हंस - फरवरी 1952, पृष्ठ - 347

बासे पर आकर पड़ जाना और कमाई
का हिसाब जोड़ना, बराबर चित्त उचटना ।
इस उस पर मन दौड़ाना । फिर उठ कर रोटी
करना । कभी नमक से कभी साग से खाना ।" ¹

समस्त चतुर्दशपदियों का एक तिहाई से भी अधिक चतुर्दशपदी ऐसी हैं जिनमें अकेलेपन का अनुभव ही संलाप की लय में पर्यवासित हो कर आता है । त्रिलोचन की ज्यादातर चतुर्दशपदियों की मूल प्रकृति बातें करने जैसी है । अपने आप से संवाद करने जैसी है । अकेलेपन का भाव इस चतुर्दशपदी में है -

"अपना बस क्या, जीवन है दुनिया का सपना
जब तक आँखों में है तब तक ज्योति बना है,
अलग हुआ तो आँसू है या तिमिर घना है,
बने ठीकरा तो भी मिट्टी को है तपना ।" ²

4. संघर्ष जन्य चतुर्दशपदियाँ :-

त्रिलोचन जीवन संघर्ष के अप्रतिम चतुर्दशपदीकार हैं । उनकी चतुर्दशपदियों में चित्रित संघर्ष उनका ही नहीं, बल्कि उस हिन्दी भाषी जाति का संघर्ष है । त्रिलोचन का मुख्य विषय संघर्षशील मनुष्य है । त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में संघर्षशील मानव की चिन्ता दुनिया में घटित होने वाली घटना भी है । त्रिलोचन का कवि आत्मकेन्द्रित नहीं है, वरन् सजग भी है । सजगता के भावातिरेक में वह चतुर्दशपदी की सीमाएँ लाघंकर युद्ध-भूमि में नहीं लड़ता, वह अपने कर्म के प्रति सचेत रहता है । एक चतुर्दशपदी का अंश -

"हिन्दी चीन की जय दीनों दलितों की जय है
इस जय में स्वतन्त्रता नये गान गाती है

1. उस जनपद का कवि हूँ - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 46
2. दिगन्त - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 12

निर्भय मानव पँक्ति आज तैयार खड़ी है,
लाली फैल चली है, सम्मुख सूर्योदय है।" ¹

त्रिलोचन को देश की जनता पर विश्वास है कि वह परिवर्तन में क्रान्तिकारी भूमिका का निर्वाह करेगी। इसलिए उनकी चतुर्दशपदियों में दीन - हीन रूपों में आने वाला मनुष्य भी केवल संघर्ष में विश्वास रखता है।

5. जनशक्ति :-

त्रिलोचन को जन शक्ति पर असीमित विश्वास है। वह जानता है कि जीवन कभी भी पराजित नहीं हो सकता, मौत कभी विजयी नहीं हो सकती। मृत्यु पर जीवन की विजय यह प्रकृति का अखण्ड विधान है।

अन्तर्हित इच्छाएँ अभिव्यक्ति पाती थीं
काय - क्लेश में देखा जीवन रस लेता था,
देखा कोटि संख्य जनता सामने पड़ी है,
गंगा यमुना की धारा के साथ अड़ी है।" ²

6. अवसाद - करुणा :-

त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में महरे अवसाद की छाया है। उसमें दुःख का प्रदर्शन नहीं है, न ही दर्शन है, अर्थात् वह सहानुभूति का भिखारी नहीं है। वह तो भीतर ही भीतर सब कुछ सहता है।

"दुखों के बाणों के विद्ध हृदय जिसका हो
वह सुख को क्या समझ सकेगा, उसको सुख तो
एक कल्पना सारहीन है, दृग - सम्मुख तो
एक अपरिचित विश्व पड़ा है, वह किसका हो।" ³

एक अनाहत शब्द की गूँज उनके चतुर्दशपदी व्यक्तित्व में व्याप्त है। वह एक अनाहत स्वर है। वास्तव में त्रिलोचन क्रान्ति के चतुर्दशपदीकार नहीं हैं।

1. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ 222
2. अरघान - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 40
3. उस जनपद का कवि हूँ - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 18

वे गहरे अर्थों में करुणा के चतुर्दशपदीकार हैं क्योंकि उनकी चतुर्दशपदियों में दुःख और अवसाद का अवसान करुणा में होता है, मायूसी में नहीं। अतः त्रिलोचन का चतुर्दशपदी काव्य करुणा आख्यान का काव्य है।

त्रिलोचन के सॉनेट पढ़ते हुये कभी दुत्कार, प्रवंचना, अपमान, उपेक्षा, अभाव और उससे उपजा दर्द – सबसे एक गहरे दुःख की कसक होती है। भीतर तक हिला देने वाला यह दुःख जब अपने चरम रूप में अभिव्यक्त होता है तो वह करुणा का रूप ले लेता है।

7. अटूट विजय भाव :-

त्रिलोचन शास्त्री को पराजय की कल्पना से भय लगता है, वह जय का प्रेमी है। उसे विश्वास है कि वह राह पा गया है।

"प्रतिबिंबित होकर मानस में, मुझे भा गया
वह विराट् दर्शन, मैंने विश्वास पा लिया,
वह विश्वास जो विजय के नवगान गा गया,
गान के स्वरों से मैंने आकाश छा लिया।" ¹

8. शोषण :-

सामाजिक भाव – भूमि पर लिखी गई शास्त्री जी की चतुर्दशपदियों में सामाजिक विषमता के चित्र हैं। समाज में विषमता अशान्ति और संघर्ष का कारण पूँजीवादी सभ्यता है। यही सभ्यता शोषण को जन्म देती है। शोषण के कारण कलाएं निर्जीव हो जाती हैं। इसी कारण चतुर्दशपदीकार का सबसे बड़ा शत्रु पूँजीवाद है।

समाज के पीड़ित शोषित – वर्ग, विकट परिस्थितियों में रहते हुये भी आत्म सम्मान रखते हैं। चतुर्दशपदीकार ने इस प्रकार शोषित जनता के अक्षुण्ण गौरव की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। अमानवीय दशाओं में भी रहते हुये अपने गौरव को बचाए रखना इस वर्ग की अपराजेय शक्ति का ही सबल प्रमाण प्रस्तुत करता है।

"महाकुम्भ" के सॉनेट भारतीय जीवन की उस संगठित संहारक शक्ति की जबर्दस्त भर्त्सना है, जो धर्म, शासन और सम्पत्ति के मेल से लगातार बढ़ती जा रही है। एक तरह से यह महाकुम्भ सिर्फ प्रयाग का ही महाकुम्भ नहीं, बल्कि पूरे भारत में चल रहे शोषण का महाकुम्भ है। त्रिलोचन ने जनता के विराट् स्वरूप से लेकर शोषण तन्त्र के सभी पेचों का उद्घाटन किया है। सभी महाकुम्भ – सॉनेटों की मुख्य चिन्ता यही है –

"कहीं सरलता भोलेपन में बची हुयी थी,
कहीं किसी को कोई जन ललकार रहा था,
कहीं किसी की कोठी धन से बची हुयी थी,
कहीं अभागा करमकटा झख मार रहा था।"¹

9. कर्मठता :-

जीवन के प्रति चतुर्दशपदीकार का दृष्टिकोण आशावादी है। वह कर्मठता में विश्वास करता है। बाधाओं से हार न मानकर पथ पर निरन्तर चलते रहता ही उसकी दृष्टि में जीवन का चरम लक्ष्य होना चाहिए।

"आने दो, आने दो, जनता को मत रोको,
पर्वत की दुहिता है, कब रुकने वाली है,
पथ दो, प्याऊ बैठा दो, चलते मत टोको,
बल प्रयोग देख कर कब झुकने वाली है,
हार थकन से क्या यह धुन चुकने वाली है।"²

10. वेदना :-

चतुर्दशपदीकार धरती की पीड़ा से व्याकुल हैं और उसके लिये हरा भरा देखने के लिये वह सवयं गल जाना चाहता है, भिट जाना चाहता है।

अन्य समाजवादी कवियों की तरह त्रिलोचन जी ने ईश्वर तथा आध्यात्मिक विश्वासों की खिल्ली तो नहीं उड़ाई है कि प्राचीन विश्वासों से जकड़ी जनता को देखकर

1. अरघान – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 41

2. अरघान – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 43

उन्हें वेदना होती है । इसका एक उदाहरण यहाँ पर देखा जा सकता है -

"भीषण कमी अन्न की, बलात्कार की अनुदिन
बढ़ने वाली गाथाएँ, हत्याएँ, डाके,
चोरी, रिश्वतखोरी, कोई बुरा न ताके
रामराज्य है, रामराज्य ही बढ़ती के दिन ।"¹

4. ग्रामीण जीवन की विविधता को चित्रित करने वाली चतुर्दशपदियाँ :-

त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में ग्रामीण जीवन के अद्भुत चित्र हैं । उसमें गांव की जिन्दगी की वास्तविकताएं और आकांक्षाएँ हैं । जन जीवन के चित्र हैं, और गांव की बोली, भाषा मुहावरे आदि हैं । त्रिलोचन शास्त्री की ग्रामीण जीवन की विविधता को चित्रित करने वाली चतुर्दशपदियों को निम्न भागों में बांटा जा सकता है जो इस प्रकार से हैं -

1. मार्मिक प्रसंग सम्बन्धी ।
2. अन्धविश्वास और रूढ़िवादिता पर आधारित ।
3. भारतीय जन पर आधारित ।
4. अल्हड़ मस्ती सम्बन्धी ।
5. किसानों के जीवन पर आधारित ।
6. मध्यवर्गीय स्त्रियों पर आधारित ।
7. मध्यवर्गीय परिवारों पर आधारित ।
8. फसलों पर आधारित ।
9. त्रिलोचन की काशी ।

1. मार्मिक प्रसंग :-

मार्मिक प्रसंग त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों के आधार भाव हैं । बात के मर्म को सहजता से छूना और सांस्कृतिक उन्नयन के साथ प्रस्तुत करना त्रिलोचन की ऐसी विशेषता है जो आधुनिकता का ढोल पीटने वालों में न मिलेगी ।

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 37

त्रिलोचन की चतुर्दशपदी की वस्तुगत नवीनता इस बात में होती है कि मार्मिकता की पहचान उन स्थितियों में करते हैं जिसमें मार्मिकता पहले नहीं ढूँढी जाती थी । मार्मिकता जीवन का ही एक रूप है । वह जीवन से अलग कोई ऐसी वस्तु नहीं जो असहज या असामान्य हो – मार्मिकता सहजता है, विचलन नहीं ।

"बुढ़िया जब मर गई उसे ले जाकर फँका
अंधे कुएँ में चमारों ने, थोड़ी लकड़ी
नहीं किसी ने दी उस को, वह रास्ता छँका
लड़कों का परेत के भय ने छकड़ा छकड़ी
आया जाया करते थे, हो गए महीनों,
सुना कि बुढ़िया है अब तक जैसी की तैसी
पड़ कुएँ में "1

त्रिलोचन के सभी संग्रहों में इसी प्रकार के मार्मिक प्रसंग हैं ।

2. अन्धविश्वास और रूढ़िवादिता :-

त्रिलोचन शास्त्री की महाकुम्भ पर लिखी गयी चतुर्दशपदियाँ भारतीय जन के चरित्र का दूसरा पक्ष प्रस्तुत करती हैं – अन्धविश्वासी और रूढ़िवादी ।

अन्धविश्वास साधारण जन का ही क्यों न हो, त्रिलोचन के चाबुक से वह बच नहीं सकता । "दिगन्त" का एक सॉनेट है "मूर्तिपूजा" । वाराहावतार की प्रतिमा औड़िहार में आये हुये ग्रामीण नत हुए, लेकिन पता नहीं कि कौन देवता हैं ये ।

महाकुम्भ की चतुर्दशपदी में भारतीय जन का अन्धविश्वास –

"भूले हुये चले आते हैं, पथ पर बीनों
को छेड़ कर गा रहे हैं, बिसरी लाचारी
धर्म न होता तो वह दुनिया कैसे होती,
पुण्य न होता तो प्रवृत्ति क्या ऐसे होती ।"2

1. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 96

2. अरघान – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 52

3. भारतीय जन :-

भारत के जीवन की एक झाँकी और भारतीय चरित्र की एक पहचान त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में मिलती है। भारतीय जन अधिकांश उस ग्रामीण समाज का सच है, जहाँ दो पैसे का हिल्ला ढूँढने के लिए आदमी अपने बाल बच्चों से दूर आ जाता है।

"सचमुच, इधर तुम्हारी याद तो नहीं आई,
झूठ क्या कहूँ। पूरे दिन मशीन पर खटना,
बासे पर आकर पड़ जाना और कमाई
का हिसाब जोड़ना, बराबर चित्त उचटना।"¹

4. अल्हड मस्ती :-

त्रिलोचन शास्त्री की चतुर्दशपदियाँ आत्मव्यंजक हैं। लेकिन उनके बीच झाँकता हुआ व्यक्तित्व दर्द का ही नहीं, स्वाभिमान और अल्हड मस्ती का भी है।

जिस समृद्ध और सुखी जिन्दगी की चाह कवि को है वह उसे अभी तक नहीं मिली।

5. किसानी जीवन :-

त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में निम्नमध्यवर्गीय किसान व्याप्त है। किसान संस्कार से संकोची होता है। त्रिलोचन ने विभिन्न ऋतुओं में बदलते किसान जीवन का वर्णन किया है। उन्हें वर्षा और वसन्त ऋतु विशेष प्रिय है। वे किसान जीवन के वास्तविक सुख - दुःख, आशा-निराशा और संघर्षों की चतुर्दशपदियाँ लिखते हैं, काल्पनिक उल्लास और विजय की नहीं। वे किसान जीवन की करुण कहानी कहते हैं। उनका किसान अभाव में जीता है, लेकिन अभाव से दबता नहीं। उनकी चतुर्दशपदी में किसान - जीवन का यथार्थ सच्चे और खरे रूप में है, न वह भावुकता के उच्छ्वास में डूबा है, न विचारधारा के आग्रह से ढका है।

त्रिलोचन ऐसे चतुर्दशपदीकार नहीं हैं। उनकी दृष्टि एक सजग किसान की दृष्टि है जो उस किसान को जीते, देखते, सुनते और समझते हुये चतुर्दशपदीकार

1. उस जनपद का कवि हूँ - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 46

को मिली है, इसलिए उसमें मध्यवर्गीय तटस्थता और भावुकता नहीं है। उसमें किसान जीवन से आत्मीयता और तादात्म्य है, लेकिन उस जीवन में मौजूद रूढ़ियों की आलोचना भी है। उनकी दृष्टि किसान – जीवन की समग्रता को देखती है। उनकी चतुर्दशपदी में किसान – जीवन के विभिन्न पक्षों के चित्र हैं।

त्रिलोचन न कोरी किसान चेतना के चतुर्दशपदीकार हैं और न इतने अधिक आनुधिक ही। त्रिलोचन किसी पिछड़े किसान की अपेक्षा आधुनिक समाज के झुलसे हुये मनुष्य के चतुर्दशपदीकार हैं –

"मुझ को हरियाली पसन्द है, खुल कर खिलना
फूलों का मुझ को भी आह्लादित करता है
किन्तु चाहने भर से ही वांछित का मिलना
सहज नहीं है, इसके लिये टेक धरता है।
जो वह आँधी, झंझा, ओलों से कब भागा,"¹

6. मध्यवर्गीय स्त्रियाँ :-

त्रिलोचन की चतुर्दशपदी में गरीबी, शोषण और उत्पीड़न के शिकार किसान हैं। उनकी चतुर्दशपदी में सबसे अधिक खेतीहर मजदूर आते हैं और उन खेतीहर मजदूरों में भी स्त्रियों की जीवन – दशा पर उनका ध्यान अधिक जाता है। उनकी चतुर्दशपदियों में कुछ चरित्र हैं वे सब ग्रामीण, कारीगर, खेत-मजदूर और स्त्रियाँ हैं।

7. मध्यवर्गीय परिवार :-

त्रिलोचन जिस जनपद के कवि हैं वहाँ के गरीब किसान और खेत-मजदूर आर्थिक तंगी के दिनों में किसी बड़े शहर में जाकर मजदूरी करते हैं। गांव में पत्नी अकेली रह जाती है। परायापन की प्रक्रिया में पड़े मजदूर की भौतिक और मानसिक स्थितियों की ऐसी अभिव्यक्ति हिन्दी के किसी दूसरे चतुर्दशपदीकार ने की है? किसानों मजदूरों की जिन्दगी की त्रासद स्थितियों को गहराई से महसूस करने वाला

1. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 63

चतुर्दशपदीकार ही ऐसी परायेपन की स्थिति का वर्णन कर सकता है । त्रिलोचन शास्त्री ने मध्यवर्गीय परिवार की स्थिति का वर्णन बड़ी कुशलता से किया है -

"सचमुच , इधर तुम्हारी याद तो नहीं आई,
झूठ क्या कहूँ । पूरे दिन मशीन पर खटना,
बासे पर आकर पड़ जाना और कमाई
का हिसाब जोड़ना, बराबर चित्त उचटना ।" ¹

8. फसलों पर आधारित :-

त्रिलोचन शास्त्री ने फसलों पर अनेक चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं -

"गेहूँ जो के ऊपर सरसों की रंगीनी
छाई है पछुआ आ आ कर इसे झुलाती
है, तेल से बसी लहरें कुछ भीनी भीनी
नाक में समा जाती हैं, सप्रेम बुलाती
है मानो यह झुक झुककर समीप ही लेटी
मटर खिलखिलाती है, फुल भरा आंचल है ।" ²

चतुर्दशपदीकार त्रिलोचन को ग्रामीण जीवन के साथ वहाँ के मौसम, पेड़, पक्षी, फसलें, खेत - खलियानों की जानकारी है । पलाश, वैजयन्ती, कचनार, आम, चिलबिल यहाँ एक सजीव उपस्थिति बनाते हैं ।

9. त्रिलोचन की काशी :-

त्रिलोचन ने काशी पर अनेक चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं । आरम्भिक दिनों यानी सन् 1951 की लिखी एक चतुर्दशपदी -

काशी मुझे गांव सी लगती है, शहराती
हवा यहाँ कम से कम है। सब आसपास से
घुले - मिले रहते हैं। अपना रंग दिखाती
प्रकृति मनुष्यों में है, धरती से आकास से ।" ³

1. उस जनपद का कवि हूँ - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 46

2. उस जनपद का कवि हूँ - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 62

3. अनकहनी भी कुछ कहनी है - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 71

यही काशी आज का सच भले ही न हो, लेकिन त्रिलोचन की काशी यही है। काशी त्रिलोचन के लिये वैसी ही थी जैसे गांधी जी के लिये भारत का गांव। चतुर्दशपदी की दुनिया में त्रिलोचन के लिये काशी का बहुत कुछ यही महत्व है।

5. व्यंग्यगत भाव की चतुर्दशपदियाँ :-

त्रिलोचन ने अन्य प्रगतिवादी कवियों की भांति व्यंग्य की चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं। समाज की दुर्बलताओं पर कवि ने प्रहार व्यंग्य के माध्यम से ही किया है। विश्व-जीवन के व्यापक क्षेत्रों में व्याप्त अराजकता, अकर्मण्यता, गंदी राजनीति, हसशील जीवन मूल्य, राजकीय अधिकारी, धार्मिक रूढ़ियों और पाश्चात्य कृत्रिम संस्कृति से प्रभावित व्यक्ति पर किये गये सशक्त व्यंग्य "गुलाब और बुलबुल" में देखने को मिलते हैं। हिन्दी कविता में व्यंग्य की कई दिशाएं रही हैं। एक दिशा सामन्ती दृष्टिकोण की है जिसमें आधुनिक जीवन के हर विकास की खिल्ली उड़ाई जाती है जिसमें विशेष रूप से नारी स्वतंत्रता की। दूसरे प्रकार का व्यंग्य यह है जिसमें अहंवादी दृष्टिकोण रहता है और व्यंग्य का निशाना बनता है। रूस, चीन साम्यवाद और स्वयं अपने देश की जनता के महान प्रयासों पर मीन - मेख करते रहना ही उनका काम है। ऐसा व्यंग्य अवसरवाद और अराजकतावाद से प्रेरित होता है।

व्यंग्य के ये दोनों दृष्टिकोण हानिकारक हैं। त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों के व्यंग्य में विद्रूप की जगह संयम और गहरी चोट करने की जगह नोक चुभाने की प्रवृत्ति है।

1. "कंटकाकोर्ण और संकट का,
मार्ग जगती में ताज का ही है
जीते हैं आज हम त्रिलोचन यह
बल रंगों में अनाज का ही है।"¹
2. "सड़ी व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह के लिये
में ललकार रहा हूँ उस सोई जनता को

1. गुलाब और बुलबुल - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 79

जिसको नेता लूट रहे हैं, कह कर ताको

मत, हम तो हैं ही, अत्यधिक विमोह के लिए ।" ¹

त्रिलोचन का व्यंग्य गहरी पीड़ा से उठने वाला व्यंग्य है, जो कहीं तो कबीर का तेवर लेकर उभरता है और कहीं गालिब का । यह व्यंग्य अपने आप पर चोट करता हुआ शुरू होता है, पर वह आत्म दैन्य से नहीं आत्म विश्वास से पैदा होता है और जो हजार अभावों के बीच भी आदमी को सम्भाले रहता है और आगे बढ़ने का साहस देता है । त्रिलोचन कहते हैं -

सॉनेट सॉनेट सॉनेट सॉनेट क्या कर डाला

यह उसने भी अजब तमाशा । मन की माला

गले डाल ली ।

यह तो चीज किराये की है

. उसने नई चीज क्या दी है

सॉनेट से उसने मजाक भी खूब किया है

जहाँ तहाँ कुछ रंग - व्यंग्य का छिड़क दिया है।" ²

कई बार व्यंग्य मखौल उड़ाने के अंदाज में भी प्रकट होता है । कई बार तो त्रिलोचन ने अपने मित्रों पर भी व्यंग्य किया है, कवियों पर विशेष रूप से हिन्दी के आलोचकों पर । व्यंग्य के पीछे किसी तरह के दम्भ का अहसास नहीं है ।

6. राजनीति चेतना सम्बन्धित चतुर्दशपदियाँ :-

त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में राजनीतिक घटनाओं का वर्णन बहुत कम है, मानव जीवन की दशाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति अधिक है । वे मानवीय अनुभवों और जीवन दशाओं की अभिव्यक्ति करते हुये संघर्ष आस्था, जिजीविषा, प्रेम न्याय और स्वतंत्रता जैसे जीवन मूल्यों की व्यंजना करते हैं । त्रिलोचन के संग्रह "अरघान" में गहन राजनीतिकता वाले महा कुम्भ सम्बन्धी सॉनेट हैं ।

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 87

2. त्रिलोचन के बारे में - गाविन्द प्रसाद, पृष्ठ 143

"चमत्कार है दावत होने पर दुर्घटना
 नेताओं को ज्ञात हुई , फिर कारें दौड़ी
 दौड़ी इधर से उधर पहुँची, यो ही खटना
 पड़ता है अवसर पर, सजी सजाई चौड़ी
 सड़क दहल सी उठी, भीड़ थी मानो गौड़ी ।"1

7. आत्म चित्रण प्रधान चतुर्दशपदियाँ :-

त्रिलोचन शास्त्री की कुछ चतुर्दशपदियाँ स्वयं ऐसी हैं जिनका मुख्य पात्र स्वयं त्रिलोचन है । इसमें त्रिलोचन नाम का उपयोग है, इसमें त्रिलोचन ने अपने आप को प्रस्तुत किया है, खुद की खाकाकशी की है, जो देखने वाली है -

"वही त्रिलोचन है, वह - जिसके तन पर गंदे
 कपड़े हैं । कपड़े भी कैसे - फटे लटे हैं,

.....

कौन कह सकेगा इसका यह जीवन चन्दे
 पर अवलम्बित है । चलना तो देखो इसका
 उठा हुआ सिर, चौड़ी छाती लम्बी बाहें,
 सधे कदम, तेजी, वे टेढ़ी-मेढ़ी राहें
 मानो डर से सिकुड़ रही हैं ।"2

इस चतुर्दशपदी के वर्ण्य - विषय वे आप ही हैं। मानो सेल्फ पोर्ट्रेट है। सेल्फ पोर्ट्रेट की यह परम्परा पेंटरों में तो बहुत मिलती है लेकिन कवियों में कम । आत्म कथात्मक चतुर्दशपदियाँ तो मिल जायेंगी लेकिन आत्म का यह "लाइव - स्कैच" कम मिलेगा । इसका एक और उदाहरण -

"भीख मांगते उसी त्रिलोचन को देखा कल
 जिसको समझे था है तो है यह फौलादी ।

.....

1. अरघान - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 59
2. उस जनपद काकवि हूँ - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 13

स्वाभिमान ज्योतिष्क लोचनों में उतरा था,
यह मनुष्य था, इतने पर भी नहीं मरा था ।"¹

यह सभी सॉनेट जैसे बायोग्रैफिकल नोट्स के संकेत हों ।

8. नागार्जुन के बारे में चतुर्दशपदियाँ :-

त्रिलोचन शास्त्री ने "फूल नाम है एक" नामक चतुर्दशपदी संग्रह में नागार्जुन पर भी चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं, जिसके माध्यम से त्रिलोचन शास्त्री ने नागार्जुन का नखशिख - वर्णन किया है । उनके स्वभाव, रहन - सहन, सामाजिक चिन्ता पर यह सॉनेट लिखे गये हैं । नागार्जुन त्रिलोचन के प्रिय कवि हैं । नागार्जुन पर लिखे गये सॉनेट इस बात को प्रमाणित करते हैं -

"कहा एक महिला ने, नागार्जुन तो कवि - से
नहीं जान पड़ते । आए तो ज्यों ही आए
त्यों ही घुल - मिल गए । ढंग ऐसे कब पाए
थे हमने कवियों के ।

एक मजूर ने कहा नागार्जुन ने मेरे
बच्चे को बहलाया, फिर रोटी बनाई
खाई और खिलाई । खुशियाँ साथ मनाई
गम आया तो आए । टीह टाह की ।"²

इसके अतिरिक्त वे नागार्जुन के जुझारू व्यक्तित्व से भी परिचित कराते हैं-

"अत्याचार अनय पर नागार्जुन का कोड़ा
चूका कभी नहीं, कोड़ा है वह कविता का
कहीं किसी ने जान - बूझकर अनमल ताका
अगर किसी का तो कवि ने कब उसको छोड़ा ।"³

9. यथार्थवादिता सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ :-

त्रिलोचन का यथार्थवाद दूसरे चतुर्दशपदीकारों के यथार्थवाद से कुछ अलग है । उसमें न कहीं भावुकता है, न झूठा आशावाद, न काल्पनिक संघर्षों के

1. उस जनपद का कवि हूँ - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 13
2. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ 226
3. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ 226

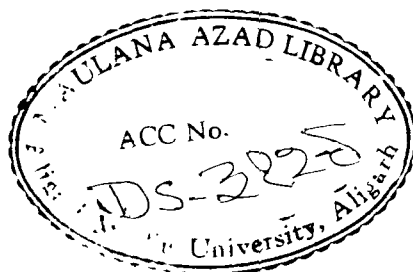
अमूर्त चित्र, न मारो - मारो, काटो - काटो की ललकार है । वहाँ जन शक्ति में आस्था है, संघर्ष के लिये आह्वान है, मुक्ति आन्दोलन में गति भी है, लेकिन यह चेतावनी है कि सोच समझकर चलना होगा ।

"भाव उन्हीं का सबका है जो थे अभावमय

पर अभाव से दबे नहीं, जागे स्वभावमय ।"¹

त्रिलोचन ने साँनेटों में ठेठ भारतीय जीवन की एक दशा सामने रखी है - बिल्कुल मूर्त रूप में । कहीं भी यथार्थ के वास्तविक स्वरूप को अन्य साधनों से बदला नहीं गया - जो है, जैसा है, वैसा ही ।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि त्रिलोचन शास्त्री केवल एक ही वर्ण्य - विषय तक सीमित नहीं रह गये हैं, उनका वर्ण्य - विषय का क्षेत्र बहुत अधिक विस्तृत और विशाल है । पूरे त्रिलोचन शास्त्री को पढ़ते हुये सहसा यह लगता है कि उनकी चतुर्दशपदियों में ठेठ भारतीय चरित्र की एक पहचान मिलती है ।



1. त्रिलोचन के बारे में गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ 149

अध्याय - 4

त्रिलोचन का चतुर्दशपदी
काव्य-शिल्प सौष्ठव

अध्याय - 4

त्रिलोचन का चतुर्दशपदी काव्य - शिल्प सौष्ठव

साहित्य एक ललित कला है, अतः साहित्यिक रचनाओं का स्थान अन्य सभी प्रकार की रचनाओं से भिन्न है। साहित्य वह तभी बनता है जब उसमें स्थायित्व तथा रागात्मक तत्त्व आते हैं। साहित्यकार भावना और विचार का प्रदर्शन ही नहीं करता, वह उसे कलात्मक रूप भी देता है। एक विशेष शिल्प भी प्रदान करता है।

"कला वह क्रिया है जिसकी सहायता से कोई व्यक्ति अपनी अनुभूति एवं मनोभाव दूसरों तक पहुंचाता है।"¹

"कला का लक्ष्य अपने - अपने ढंग से मानव के मनोभावों को व्यक्त करना और इन्हें दूसरों तक पहुंचाना है।"²

प्रत्येक कला, चाहे वह मूर्तिकला हो या चित्रकला, संगीत हो या नृत्य अथवा काव्य हो या नाटक, अपने - अपने ढंग और अपने - अपने माध्यम से कलाकार की अनुभूति और मनोभावों को अभिव्यक्त करने तथा इन्हें दूसरों तक पहुंचाने का प्रयत्न करती है।³

"कला आदि कर्म (वात्स्यायन ने चौंसठ कलाएँ गिनायी हैं)। हुनर, कारीगरी, स्रुवा, दक्षता, हस्तकर्म, रूप, आकृति, निर्माण, सृष्टि, धार्मिक कृत्य, अनुष्ठान।"⁴

हिन्दी का शिल्प शब्द अंग्रेजी के प्रसिद्ध शब्द टेक्नीक (Technique) का अनुवाद है। इसकी परिभाषा अंग्रेजी शब्द कोश में इन शब्दों में दी गयी है - "कलात्मक कार्यवाही की वह रीति, जो संगीत अथवा चित्रकला में प्राप्य है तथा कलात्मक कारीगरी।"⁵ इसी से मिलती - जुलती परिभाषा ज्ञान मण्डल लिमिटेड, बनारस

-
1. हिन्दी उपन्यास की शिल्प विधि का विकास - डॉ. (श्रीमती) ओम शुक्ल, पृष्ठ - 18
 2. हिन्दी उपन्यास की शिल्प विधि का विकास - डॉ. (श्रीमती) ओम शुक्ल, पृष्ठ - 19
 3. वही
 4. बृहत् हिन्दी कोष (ज्ञान मण्डल लिमिटेड, बनारस) स0 कालिका प्रसाद, पृ. -1334
 5. Oxford Dictionary of Current English, P.1258
डॉ. प्रेम भटनागर की पुस्तक "हिन्दी उपन्यास शिल्प: बदलते परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ - 10 से उद्धृत।

द्वारा सम्पादित वृहद हिन्दी कोश में दी गयी है। यथा - "शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा दस्तकारी या कारीगरी से है।"¹

मूलतः शिल्प का प्रयोग उपयोगी कलाओं के निर्माण की क्षमता के लिए होता है। किन्तु उपचार से इसका प्रयोग ललित कलाओं के लिए किया जाता है। यहां इससे अभिप्राय है रचना की दक्षता या निपुणता से। किसी भी उत्कृष्ट रचना में भावों का गाम्भीर्य, विचारों की गरिमा एवं शैली का उत्कर्ष तो पाया ही जाता है, किन्तु साथ ही जब समग्र रूप से उस रचना का मूल्यांकन करते हैं, तो इन सब तत्वों की निजी अवस्थिति एवं इनके विकास का अध्ययन भी करते हैं और साथ ही इन सभी तत्वों की पारस्परिक सम्बद्ध समरस योजना एवं निर्वाह का विवेचन भी करते हैं। यह योजना एवं निर्वाह कलकार की कला विषयक निपुणता या दक्षता पर निर्भर होता है। इसे ही उस कला का शिल्प कहते हैं।²

साहित्य की विविध विधाओं - नाटक, उपन्यास आदि के अपने अपने विशिष्ट रूप, कला - विषयक सिद्धान्त तथा मूल्य हैं, इसलिए उपन्यास का शिल्प नाटक के शिल्प से भिन्न है और नाटक का शिल्प कहानी के शिल्प से भिन्न है जो रचना जितनी विस्तृत होती है, उसमें शिल्प का महत्व उतना ही अधिक होता है। नाटक में इस तत्व का विशेष हाथ है क्योंकि वहाँ रंग मंच आदि की योजना शिल्प के उत्कर्ष पर ही निर्भर करती है। साहित्य में शिल्प के महत्व के विषय में विवाद है। कलावादी आलोचक इसका महत्व अधिक मानते हैं। यद्यपि रचना में शैलिक परिशुद्धता के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता, फिर भी प्रतिभा एवं अन्भूति साहित्य का प्राण है, लॉजाइनस ने निर्दोष कला की अपेक्षा सदोष प्रतिभा को श्रेष्ठ माना है।³

अमूर्त को मूर्त, मूक को सञ्चक और निराकार को साकार बनाने का काम

1. हिन्दी उपन्यास शिल्प : बदलते परिप्रेक्ष्य - डॉ. प्रेम भटनागर, पृष्ठ-10
2. मानविकी पारिभाषिक कोष, स0 डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ -
3. मानविकी पारिभाषिक कोष (साहित्य खण्ड) सम्पादक - डॉ. नगेन्द्र।

शिल्प विधि का है । कोरी अनुभूति और रूपायित अनुभूति अथवा कला में जो अन्तर है वह शिल्प विधि के कारण ही है ।¹

शिल्प – विधि का शब्दिक अर्थ है – किसी चीज के बनाने या रचने का ढंग या तरीका । किसी वस्तु के रचने की जो – जो विधियाँ या प्रक्रियायें होती हैं, उनके समुच्च को शिल्प – विधि के नाम से पुकारा जाता है । सरल भाषा में यदि कहा जाय तो शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा दस्तकारी या कारीगरी से है ।² साहित्य अथवा कला के संदर्भ में प्रयुक्त होने से शिल्प का अर्थ हो जाता है । साहित्यिक कृति अथवा कलात्मक वस्तु के रचने का तरीका या ढंग । कला की रचना में जिन तरीकों, रीतियों और विधियों का उपयोग किया जाता है, वे ही उस कला की शिल्प विधि के नाम से पुकारी जाती है । अपनी मनोगत भावनाओं को रूपायित करने के लिये कलाकार जो विधि, ढंग या तरीका अपनाता है, वही रूपायन – विधि उस कला की शिल्प – विधि के नाम से प्रख्यात हो जाती है ।³

किसी भी कवि का अन्तर – राग किसी भी काव्य शिल्प के साथ जब पूर्णरूपेण समाहित हो जाता है तो वह शिल्प रूपवाद के घेरे को पार करता हुआ, एक लम्बे समय के बाद उसके संस्कारों में खप कर उसकी पहचान बन जाता है । कवि की मर्म भेदी दृष्टि लगातार आश्वस्त होकर शिल्प की रचना प्रक्रिया में संलग्न रहती है तब वह उस परम्परागत शिल्प में वर्तमान और भविष्य दोनों पूरे विश्वास के साथ जीता हुआ शिल्प की सीमाओं को पार कर कथ्य के साथ का गहन रिश्ता स्थापित करता है ।⁴

प्रगीत काव्य एक ऐसा विलक्षण अभिव्यक्ति प्रकार है जो मानीवय संवेदनाओं को उद्दीप्ति प्रदान कर उन्हें स्फीत, पावन एवं उदान्त बनाता है । यह अभिव्यंजना

1. हिन्दी उपन्यास की शिल्प-विधि का विकास, डॉ. (श्रीमती) ओम शुक्ल, पृ. 21
2. वृहत हिन्दी-कोश (ज्ञान मण्डल लिमिटेड बनारस) पृष्ठ 1239, 1334
डॉ. श्रीमती ओम शुक्ल की पुस्तक "हिन्दी – उपन्यास की शिल्प विधि का विकास" पृष्ठ 17 से उद्धृत ।
3. वही, पृष्ठ 18
4. साम्य – प्रगतिशील विचारों की सम्वाहक पत्रिका, स. विजयगुप्त, पृष्ठ 162

का ऐसा रूप है जो भावनाओं को कोमल संस्पर्श देकर उन्हें भव्य, व्यापक एवं विराट बनाता है¹। कथ्य के आधार पर इसके अनेक भेद - प्रभेद किये जा सकते हैं। आकारगत सौन्दर्य के निष्कर्ष पर इसे सॉनेट (Sonnet), ओड (Ode) ऐलिजी (Elegy) आदि अनेक अभिधानों से अभिहित किया गया है। यहां हम इसके सॉनेट (चतुर्दशपदी) नामक काव्य रूप पर ही केन्द्रित रहकर उसके शिल्प सौष्ठव का विवेचन - विश्लेषण करेंगे।

हिन्दी में सॉनेट अंग्रेजी परम्परा से आया है। यह 14 पदों का छंद है। कुछ सॉनेटकारों द्वारा इसे आठ और छः पंक्तियों में विभाजित करके भी लिखा गया है। सॉनेट शेक्सपीयर, स्पेंसर और मिल्टन का प्रिय छंद रहा है।

हिन्दी कविता में त्रिलोचन ने इस विदेशी छंद के शिल्प को अपनी तरह से सिद्ध किया है। यही वजह है कि कहीं भी त्रिलोचन का काव्य सॉनेट के शिल्प से बाधित नहीं हुआ है। आज हिन्दी की काव्य परम्परा में जैसे चौपाई से तुलसीदास, पदों से सूरदास, दोहों से बिहारी का नाम अप्रत्याशित रूप से सामने आ जाता है उसी प्रकार हिन्दी कविता में सॉनेट का जिक्र आते ही त्रिलोचन सामने आ जाते हैं।

त्रिलोचन के सॉनेटों में जो राग की गहराई है, कथ्य की जो स्पष्टता है उस पर गम्भीरता से विचार करने की बजाय उसके शिल्प को ही प्रचारित किया गया है। त्रिलोचन ने विदेशी काव्य के शिल्प को अपनी जातीयपरम्परा में लाकर उसका निर्वाह अपने जातीय रागों से बुनकर किया है।

सॉनेटों में शब्दों की जो सजगता और शिल्पगत कसाव है वह निराला के बाद हिन्दी कविता में कथ्य शिल्प अर्थ की दृष्टि से त्रिलोचन में ही मिलता है।

त्रिलोचन जी ने प्रस्तुत विधा के प्रणयन में अंग्रेजी परम्परा के दोनों रूपों - पैटार्कन और शेक्सपीरियन - का न केवल सफलतापूर्वक प्रयोग किया है, अपितु

1. आधुनिक हिन्दी कविता और विदेशी काव्य रूप - डॉ. एस. नारायण, पृष्ठ 45

मूलतः अंग्रेजी कविता से प्रभावित इस काव्य रूप को उन्होंने अपने ढंग से मोड़ कर इसे विशुद्ध जातीय एवं भारतीय रूप प्रदान किया है। वे हिन्दी में चतुर्दशपदी के ऐसे पर्याय बन गये हैं कि उनमें विदेशीपन की गंध तो कहीं छू तक नहीं गयी। हिन्दी में चतुर्दशपदियों की सृजना में जैसा साफ - सुथरापन एवं जैसी चुस्त दुरुस्त बनावट और कसावट त्रिलोचन जी में दीख पड़ती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ ही है। त्रिलोचन जी ने न केवल परम्परागत चतुर्दशपदियों की सफल सृजना की है, अपितु प्रयोगों की नव्यता का जीवन्त संस्पर्श देकर उन्हें प्राणवान एवं धारदार भी बनाया है। त्रिलोचन जी ने अंग्रेजी के प्रस्तुत काव्य रूप का हिन्दी में उसी निपुणता एवं विदग्धता के साथ प्रयोग किया है, जितना शमशेर ने हिन्दी में गजल का। डॉ. केदार नाथ सिंह के शब्दों में कहें तो "हिन्दी भाषी जाति के साथ त्रिलोचन के सम्बन्ध की जिस अभिन्नता की बात बार-बार कही जाती है उसका एक विशिष्ट रूप उनके 'सॉनेटों' में दिखाई पड़ता है। सॉनेट - जैसा की सब जानते हैं - हिन्दी में अंग्रेजी कविता के प्रभाव से आया है। पर त्रिलोचन ने रोला छंद के मात्रिक संगीत में ढाल कर इसका एक अलग सांचा तैयार किया है, जो पूरी तरह हिन्दी की आन्तरिक लय से मेल खाता है। सॉनेट के लिये इस विशिष्ट छंद में निहित सम्भावनाओं की खोज त्रिलोचन की हिन्दी भाषा की प्रकृति की पहचान का एक और उदाहरण है।" ¹

जैसा कि हम अध्याय दो में बता चुके हैं कि त्रिलोचन शास्त्री ने चतुर्दशपदी विद्या के प्रणयन में इतालवी और अंग्रेजी परम्परा के दोनों रूपों - स्पेन्सरी चतुर्दशपदी और शेक्सपीरियन चतुर्दशपदी का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है।

1950 के आसपास ही त्रिलोचन ने अपनी कविता के लिये सॉनेट का फार्म चुना। उन्होंने बर्दसवर्थ से भी ज्यादा सॉनेट लिखे हैं। यह एक संश्लिष्ट और थोड़ा सा बड़ा काव्य रूप है। लय की गति का धीमा होना, सॉनेट का खास गुण है। अन्य छोटे गीतों से वह इस मायने में भिन्न है। गम्भीरता विचार - शील भाव अनुभूति की गहन एकाग्रता और कसी हुयी भाषा के साथ ही चौदह पंक्तियों का

1. केदारनाथ सिंह - उस जनपद का कवि हूँ के प्लेप से उद्धृत।

अनुशासन, ये सभी बातें जो एक सॉनेट की विशेषता है, त्रिलोचन की मनोभूमि के लिये बहुत ही अनुकूल थीं।

अष्टपदी में लय का अनुशासन और षटपदी में लय की स्वतंत्रता के द्वैत ने त्रिलोचन के अपने स्वभाव को लुभाया होगा। इसके अतिरिक्त सॉनेट के पारम्परिक रूप को उठा कर देखें तो वह हर वक्त किसी को (खासतौर पर प्रेमिका को) सम्बोधित करने वाला काव्य रूप रहा है। सॉनेट के वह पहले समर्थ कवि रहे हैं।

सॉनेट में त्रिलोचन ने अधिकांश उपलब्ध रूपों का प्रयोग किया है। पेट्रार्कीय सॉनेट भी उन्होंने लिखे और शेक्सपियर – सरणि के सॉनेट भी, बल्कि उसमें स्पेंसर और सरे – दोनों की तुक योजनाओं का प्रयोग किया। लेकिन रोला छंद की अपनी लय में ढल कर त्रिलोचन के सॉनेट ने पूरी तरह हिन्दी के जातीय रूप को ग्रहण कर लिया है। त्रिलोचन का यहाँ पूरा सॉनेट रोला के मान्त्रिक अनुशासन में ढला है।

"सॉनेट जैसे विजातीय काव्य रूप को हिन्दी भाषा की सहज लय और संगीत में ढालकर त्रिलोचन ने एक ऐसी काव्य विधा का आविष्कार किया है, जो लगभग हिन्दी की अपनी विरासत बन गयी है।"¹

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है त्रिलोचन के चतुर्दशपदी काव्य में इतालवी और अंग्रेजी – दोनों रूपों का ग्रहण हुआ है। यहां हम अपने कथन की पुष्टि के लिये त्रिलोचन की दो ऐसी चतुर्दशपदियों को उद्धृत कर रहे हैं जो इतालवी रूप का भव्य निदर्शन है :-

- | | |
|--|-----|
| 1. "कभी कभी वह शून्य हृदय बेधा करता है | - a |
| जो भीतर बाहर छाया है, जिसका आदि | - b |
| यह मन है, जिसकी स्वर – लहरें अविंसवादी | - b |
| हैं, जिस की शक्ति के सामने जग डरता है | - a |
| शीश उठाते, निखिल पराक्रम को करता है | - a |
| पल भर में, हो जाते हैं सब दृश्य विषादी | - b |

- मनः प्रसादन जो करते थे, उस आबादी - b
 के पहले परिचय में सूनापन भरता है - a
- जो सुवर्ण का पात्र अमृत से भरा हुआ है - c
 स्वेच्छापूर्वक, विष से उन को कौन भरेगा - d
 जो आनंद तरंगों से ही हरा हुआ है - c
 उस भव को विषाद से आप्लुत कौन करेगा - d
 जीवन भावी अंधकार से भरा हुआ है, - c
 उसका घोर तिमिर करूणा कर कौन हरेगा" ¹ - d
2. " हम तुम दोनों आज दूर हैं, चाहें भी तो - a
 पास नहीं आ सकते हैं, वैसे कहने को - b
 कुछ भी कह लें, मन समझा लें, पर कहने को - b
 साथ, अजी छोड़ो - भी, अपने मन की भी तो - a
 सुननी ही पड़ती है, फिर बाधायें भी तो - a
 एक एक से बढ़ कर है, वैसे बहने को - b
 बढ़ा आँसुओं की क्या कम है, अब सहने को - b
 शेष क्या रहा, आए जो कुछ आए भी तो - a
- बसी हुई दुनिया है यह, वीरान नहीं है - c
 लेकिन अपना मन सूनापन में खोया है - d
 क्या जाने क्या बात हो गई, अगर कहीं है - c
 कोई मेरा तो मालूम किसे ढोया है - d
 जो अस्तित्व भार, उस की विश्रान्ति यहीं है - c
 या आगे है, जीवन का फल तो बोया है" ² - d

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 70
 2. वही, पृष्ठ 74

जैसा कि अन्यत्र विस्तार से उल्लेख किया जा चुका है इतालवी सॉनेट में चौदह पंक्तियों को आठ और छह के रूप में दो वर्गों में विभक्त किया जाता है। पहली आठ पंक्तियों "आक्टेव" तथा दूसरी छः पंक्तियों "सैस्टेट" के नाम से जानी जाती हैं। आक्टेव का तुक - विधान abba , abba के रूप में होता है, अर्थात् पहली, चौथी, पाँचवीं और आठवीं पंक्तियाँ समान तुक की होती हैं। जो यहाँ "a" के रूप में निदर्शित हैं, दूसरी, तीसरी, छठी और सातवीं पंक्तियों की भी समान तुक होती है जो यहाँ "b" से संदर्भित हैं। आठवीं पंक्ति के बाद भाव में एक ठहराव सा आता है। जिसे "सिजरा" कहते हैं। इसे अंकित करने के लिए रचनाकार पूर्ण विराम का प्रयोग करता है। साथ ही आक्टेव और सैस्टेट के मध्य एक अन्तराल छोड़ दिया जाता है, जिससे आक्टेव में वर्णित भाव या विचार एक प्रकार से पूर्णता प्राप्त कर लेता है और फिर सैस्टेट में वही भाव या विचार चिन्तन की गरिमा के साथ उत्कृष्टता प्राप्त करता है।

सैस्टेट की इतालवी रूप में दो भागों में विभक्त किया जाता है जो तीन - तीन पंक्तियों के रूप में "टरसेट" की संज्ञा से अभिहित होती हैं। इन तीन - तीन पंक्तियों के तुक विधान भी भिन्न प्रकार के होते हैं जिसे cdc, dcd, cdc अथवा cdc , cdc 1

यहाँ उद्धृत चतुर्दशपदियों में "सैस्टेट" का रूप विधान cdc,dcd वाला गृहीत हुआ है।

इस प्रकार उद्धृत चतुर्दशपदियों इतालवी चतुर्दशपदी का भव्य रूप प्रस्तुत करती हैं।

त्रिलोचन ने इस रूप को प्रभूत मात्रा में ग्रहण किया है।

2. अंग्रेजी चतुर्दशपदी -

अतः संरचना के आधार पर अंग्रेजी चतुर्दशपदियों के भी दो रूप देखने को मिलते हैं - 1. शैक्सपीयरी चतुर्दशपदी, 2. स्पेन्सरी चतुर्दशपदी।

1. शेक्सपीयरी चतुर्दशपदी :-

यहाँ पर हम त्रिलोचन के सॉनेट काव्य से शेक्सपीयरी चतुर्दशपदी को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं -

"जीवन कैसा हो - इस को तो जीने वाले	- a
जागरूक हो पर जैसा चाहें वैसा	- b
कर सकते है मानव पीले गोरे काले	- a
अपने घर का रूप रचें जी चाहे जैसा	- b
लेकिन घर की भीतर जो स्वरूप मिलता है	- c
मानव का वह घर के बाहर और और है,	- d
घर के भीतर भी सम्बन्ध - भाव खिलता है	- c
बहुरूपों में, दुनिया भर में यह तौर है	- d
जहाँ अनिच्छा हो संगों से वहाँ संग का	- e
कोई अर्थ नहीं, उचित तो है लगाव हो	- f
जीवन का जीवन से, सब से अलग रंग का	- e
आदर सभी करें सच्चा सहयोग - भाव हो	- f
भिन्न - भिन्न रुचि हो तो भी निबाह होता है,	- g
यह सब में हो तो जीवन अथाह होता है' ¹	- g

जैसा कि अन्यत्र विस्तार से उल्लेख किया जा चुका है, शेक्सपीयरी सॉनेट में चौदह पंक्तियों को तीन चतुष्पदी और अंत में एक द्विपदी में विभाजित किया जाता है। पहली चतुष्पदी का तुकविधान abab के रूप में होता है अर्थात् पहली और तीसरी पंक्तियाँ समान तुक की होती हैं, जो यहाँ "a" के रूप में निदर्शित हैं, दूसरी और चौथी की भी समान तुक होती है जो यहाँ "b" से संदर्भित है। दूसरी चतुष्पदी का तुक विधान cdcd के रूप में होता है, अर्थात् पांचवी और सातवीं पंक्तियाँ समान तुक की होती हैं, जो यहाँ "c" के रूप में अंकित है। छठी और आठवीं पंक्तियाँ समान

तुक की हैं, जो यहाँ पर " d " के रूप में संदर्भित हैं । जिसके अन्तर्गत तीसरी चतुष्पदी का तुक विधान e f e f के रूप में है, नवीं और ग्यारवीं पंक्तियाँ समान तुक की होती हैं, जो यहाँ " e " के रूप में निदर्शित हैं । दसवी और बारवहीं पंक्तियाँ समान तुक की होती हैं जो यहाँ पर " f " के द्वारा संदर्शित हैं । अन्त की दो पंक्तियाँ द्विपदी हैं । इन दो पंक्तियों के तुक विधान इस प्रकार के होते हैं । जिसे " g g " के रूप में अंकित किया गया है । द्विपदी में समग्र चतुर्दशपदी का वर्णित भाव निष्कर्ष के रूप में पराकाष्ठा को प्राप्त होता है ।

इस प्रकार उद्धृत चतुर्दशपदी शेक्सपीयरी चतुर्दशपदी का रूप प्रस्तुत करती है ।

त्रिलोचन ने इस रूप को भी प्रभूत मात्रा में ग्रहण किया है, किन्तु विस्तार भय से हम यहाँ एक उद्धरण से सन्तोष कर रहे हैं ।

2. स्पैन्सरी चतुर्दशपदी :-

त्रिलोचन जी ने स्पैन्सरी प्रकार की चतुर्दशपदियाँ भी लिखी हैं । निदर्शन के रूप में निम्नांकित चतुर्दशपदी दृष्टव्य है :-

"काफे रेस्त्रों में हिलमिल कर बैठे - बातें	- a
की, कुछ व्यंग्य - विनोद और कुछ नए टहोके	- b
लहरों में लिए दिए । अपनी - अपनी घातें	- a
रहे ताकते यों, भीतर - भीतर मन दो के	- b
एक न हुए, समीप टिके, अपनापा रवो के,	- b
जीवन से अनजान रहे, पर गाना गाया	- c
जन का, जीवन का, लेकिन दुनिया के होके	- b
दुनिया में न रहे दुनिया को बुरा बताया	- c
उससे तन बैठे जिसने कुछ दोष दिखाया	- c
इस प्रकार से ढले नवीन इलाहाबादी	- d
कवि साहित्यकार, जिन को भाती है छाया	- c
नहीं सुहाती आँखों को भू की आबादी	- d

जीवन जिस धरती का है कविता भी उस की - e
 सूक्ष्म सत्य है तप है नहीं चाय की चुस्की" ¹ - e

जैसा कि उपर्युक्त चतुर्दशपदी से स्पष्ट है कि स्पेन्सरी चतुर्दशपदियों में भी शेक्सपीयरी की भाँति तीन चतुष्पदी और एक तुकान्त द्विपदी का ही समायोजन रहता है। पहली चतुष्पदी का तुक विधान abab के रूप में होता है, अर्थात् पहली और तीसरी पंक्तियाँ समान तुक की होती हैं, जो यहाँ "a" के द्वारा निदर्शित हैं, दूसरी और चौथी की भी समान तुक होती है जो यहाँ "b" से संदर्भित है। दूसरी चतुष्पदी का तुक विधान bcbc के रूप में है, जिसमें पाँचवीं और सातवीं पंक्तियाँ समान तुक की हैं, जो यहाँ "b" के रूप में अंकित हैं। छठी और आठवीं पंक्तियाँ समान तुक की हैं जो यहाँ पर "c" के रूप में संदर्भित है। तीसरी चतुष्पदी का तुक विधान cdcd के रूप में होता है, अर्थात् नवीं और ग्यारवीं पंक्तियाँ समान तुक की होती हैं जो यहाँ "c" के द्वारा निदर्शित हैं। दसवीं और बारवीं पंक्तियाँ समान तुक की होती हैं, जो यहाँ पर "d" के रूप में संदर्भित है। अंत में शेक्सपीयरी चतुर्दशपदियों के मानिन्द स्पेन्सरी चतुर्दशपदी में भी तुकान्त द्विपदी रहती है। द्विपदी का तुक विधान ee के रूप में अंकित किया गया है।

इस प्रकार उद्धृत चतुर्दशपदी स्पेन्सरी चतुर्दशपदी का रूप प्रस्तुत करती है।

त्रिलोचन ने इस को भी प्रभूत मात्रा में ग्रहण किया है, किन्तु विस्तार भय से हम यहाँ एक उद्धरण से संतोष कर रहे हैं।

शेक्सपीयरी तथा स्पेन्सरी चतुर्दशपदियों के अन्तः संव्यूहन में एक मौलिक अंतर है। जहाँ शेक्सपीयरी चतुर्दशपदी में तीनों चतुष्पदियों का तुक विधान एक दूसरे से पृथक् एवं नितान्त स्वतंत्र होता है, वहाँ स्पेन्सरी में ऐसा नहीं है। स्पेन्सरी चतुर्दशपदियों में तीनों चतुष्पदियों में एक अंतःसंबंध बना रहता है और यह संबंध बाह्य रचना अथवा रूप विधान का है। स्पेन्सरी चतुर्दशपदियों में जैसा कि उपर्युक्त उद्धरण में देखा जा सकता है, प्रथम चतुष्पदी की दूसरी और चौथी पंक्तियों के रचना - विधान का दूसरी चतुष्पदी की प्रथम और तृतीय पंक्तियों में पुनरावर्तन किया जाता है इसी

प्रकार दूसरी चतुष्पदी की दूसरी और चौथी पंक्तियों के संरचनात्मक तुक विधान को तीसरी चतुष्पदी की प्रथम और तृतीय पंक्तियों में दुहराया जाता है। कहना न होगा कि स्पैन्सरी चतुर्दशपदी का संरचनात्मक ढाँचा कुछ जटिल है। रचनाकार से कला - कुशलता की अपेक्षा रखता है जिसमें आलोचय कवि खरा उतरा है।

भाषा :-

सॉनेट को लेकर यह कथन कम महत्वपूर्ण नहीं है कि एक विदेशी परम्परागत छंद में अपनी सहज व सजग भाषा द्वारा जिस जन राग को प्रवाहित किया गया है वह आज हिन्दी काव्य जगत की एक मूल्यवान विरासत है। त्रिलोचन तुलसी व निराला की भाँति जनभाषा की समस्त गूँजों व अनुगूँजों से पूरी तरह परिचित है। भाषा की इस सहज, सजग सामर्थ्य ने त्रिलोचन को भाषा के अनेक स्तर दिये हैं। जिस तरह निराला ने अपने गीतों व कविताओं में जान लड़ा दी है। उसी तरह से त्रिलोचन सॉनेटों में पूरी सामर्थ्य के साथ आये हैं। त्रिलोचन का यही स्वर उनकी पहचान का स्वर है। यही स्वर उनकी अभिव्यक्ति को प्राप्त करता है। जिस सहज सजगता के साथ सॉनेटों में त्रिलोचन ने अपने कवि कर्म का निर्वाह किया है, इससे तो यह पूरी तरह भासित होने लगा है कि सॉनेट हिन्दी का ही परम्परागत छंद है।

"सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ भाषा
भाषा की उंगली से मानव मानव हृदय हो गया।"¹

त्रिलोचन जी ने गद्य कम लिखा है। त्रिलोचन अवधी भाषा के विद्वान है। अवधी वे खूब अच्छी जानते हैं और भाषा विज्ञान में उनकी बहुत अच्छी गति है। भाषाओं के आपसी सम्बन्ध के बारे में वे बहुत बातें करते हैं।²

त्रिलोचन हिन्दी वाक्यों में हिन्दी कविता लिखते हैं। काव्य भाषा की सहजता का कारण उनका अवधी पन है। अवधी का वैभव उनकी काव्य भाषा में छलकता रहता है। त्रिलोचन की काव्य भाषा काव्य - विधान के प्रति बहुत सतर्क है।

1. साम्य - प्रगतिशील विचारों की संवाहक पत्रिका - विजय गुप्ता, पृष्ठ 163
2. वर्तमान साहित्य अगस्त 1992, स0 विभूति नारायण राय, पृष्ठ 6

त्रिलोचन की उत्कृष्ट चतुर्दशपदियों में तद्भव शब्दावली से कसा हुआ वाक्य वार्तालाप की लय में गतिशील होता है ।

त्रिलोचन की चतुर्दशपदियाँ अपनी ओर से आकृष्ट नहीं करतीं । उनका सौन्दर्य – बोध अर्जित करना पड़ता है । उसके रूप का सौन्दर्य जानकारी के साथ उद्घाटित होता जाता है । एक बार आत्मीय होने के बाद वह आजीवन संगिनी रहती है।

चतुर्दशपदी की सर्वोत्तम उपलब्धि लोकोक्ति बन कर लोक – भाषा में लीन हो जाती है । यह चतुर्दशपदी की मुक्ति है । त्रिलोचन की चतुर्दशपदी – भाषा में सर्वत्र हिन्दी भाषा का प्रवृत्त स्वरूप सुरक्षित है, छंद भी वहाँ भाषा को तोड़ने – मरोड़ने की कोई छूट नहीं लेता । बल्कि सच तो यह है कि भाषा का यह प्रवृत्त स्वरूप ही त्रिलोचन के यहाँ छंद को चतुर्दशपदी का कारागार बनने नहीं देता बल्कि उस "स्वाधीन" चेतना का कारण बनता है ।

त्रिलोचन भाषा का प्रयोग बिना रंगे चुने करते हैं । उनकी भाषा पारदर्शी लगती है मगर गहराई से देखने पर वाक्य के परे या भाषा के परे एक संसार और दिखाई पड़ने लगता है । यह एक प्रकार से प्रक्षेपण का माध्यम बन जाती है एक भिन्न प्रकार के संसार के लिये । उनकी भाषा में एक प्रकार की अर्धपारदर्शिता विकसित हुयी है ।

उनकी भाषा में ऐसे प्रयोग कम मिलेंगे जिनमें भाषा की वाचलता या शब्द – विदग्धता से काम लिया गया हो । अर्थात् शब्द उनके यहाँ किसी चमत्कार की तरह नहीं आते । इसी बात को विश्वनाथ त्रिपाठी जी ने अपने लेख में बेहतर ढंग से रखते हुये "भाषिक – विचलन" की बात कही है ।¹

त्रिलोचन ने अपनी कृतियों के नामों की उदारता के अनुकूल शब्दों से परहेज न करके सरल टकसाली भाषा का प्रयोग किया है । हिन्दी – कविता के विकास की दृष्टि से इसका बहुत महत्त्व है । उन्होंने भाषा में साफ – सीधे अनुभवों को ही नहीं उसमें मौन विचारों वाली ध्वनियों को भी पहचानते हैं ।

1. त्रिलोचन के बारे में – गोविन्द प्रसाद , पृष्ठ 27

भाषा के स्तर पर वैयक्तिक निर्व्यक्तिकता कई रूपों में व्यक्त होती है । एक ओर वह बोलचाल की सामान्य सार्वजनिक भाषा है तो दूसरी ओर उसमें निजी सृजन का पुट भी है । भाषा में ही त्रिलोचन की अपनी निजी विशेषता निहित है । इसे उन्होंने अपने आप अर्जित किया है अचानक । इसलिए जब त्रिलोचन कहते हैं कि "सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ भाषा"¹ तो वह शुद्ध कवितावादी कवियों की "भाषा" नहीं होती क्योंकि -

"भाषा की लहरों में जीवन की हलचल है ।

ध्वनि में क्रिया भरी है और क्रिया में बल है ।"²

उनकी चतुर्दशपदी की भाषा की लय गद्य और काव्य के सन्धिस्थल पर खड़ी दिखाई पड़ती है । वह भाषा के ठेठपन को नष्ट करके या अंग्रेजी की तर्ज पर गढ़ी गई एक नकली भाषा को अपनाकर चतुर्दशपदी रचना स्वीकार नहीं करते हैं । उनकी भाषा में अभी भी पुराने संस्कारों का अवशेष मात्र है ।

सॉनेट में भाषा अपने पूरे गुणों के साथ आई है । भाषा ने बहुत ही दृढ़ कदम सजगता से उठाये हैं । भाषा क्रमशः एक एक दृश्य खोलती हुयी चलती है अपने ढंग से । इस सब के बीच उसका अपना अलग ही तेवर है -

"हिन्दी कविता उनकी कविता है । जिनकी

सासों में आराम नहीं था, और जिन्होंने

सारा जीवन लगा दिया कल्मष को धोने ।

में समाज के,"³

उनकी भाषा का स्वर, आवेग, अपने उतार चढ़ाव के द्वारा कथ्य बुनता है व उसके अर्थ की परत दर परत खोलता हुआ चलता है । सॉनेट के स्वर आवेग ही उसका ठीक मजा देते हैं ।

1. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद , पृष्ठ - 13

2. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद , पृष्ठ - 13

3. साम्य प्रगतिशील विचारों की संवाहक पत्रिका, सं० विजय गुप्त, पृष्ठ 163

त्रिलोचन के ज्यादातर सॉनेटों में काव्यात्मक सौन्दर्य शब्दों का नहीं होता बल्कि भाषा का होता है, क्योंकि त्रिलोचन अपनी भाषा के साथ गहन रिश्ता कायम करते हुए चलते हैं। त्रिलोचन का भाषा प्रयोग अपने आप में बहुत ही अनोखा है। वे शब्दों को गढ़ते नहीं बल्कि उनमें राग प्रवाहित करके नई जान डालते हैं, उनमें नया अर्थ भरते हैं। त्रिलोचन की भाषा में जो शब्द होते हैं वे जीवन के राग से पगे होते हैं इसलिए त्रिलोचन के सॉनेट की भाषा को समझने के लिए, जीवन के रागों से परिचित होना जरूरी है। जीवन राग ही त्रिलोचन के सॉनेटों का कस और बल है।

"भाषा की लहरों में जीवन की हलचल है,
गति में क्रिया भरी है और क्रिया में
बल है।"¹

भाषा की सहजता व सजगता जनराग के इर्द गिर्द चक्कर लगाती है -

"मैंने उनके लिए लिखा है, जिन्हें जानता
हूँ जीवन के लिए लगाकर अपनी बाजी
जूझ रहे हैं, जो फेंके टुकड़ों पर राजी
कभी नहीं हो सकते हैं, मैं उन्हें मानता।"²

ऊपर के उद्धरण से लगता है जैसे सॉनेट की भाषा त्रिलोचन के सामने नाचती है। विजय गुप्त के शब्दों में "जित बैठाये तित बैठू जो देवै सो खाऊँ"³ की कहावत चरितार्थ होती है।

त्रिलोचन ने कथ्य को बाधित किये बगैर भाषा को इतना घोंटा की वह क्लासिक हो उठी है।

त्रिलोचन ने अपने सॉनेटों के लिए नई भाषा नहीं गढ़ी बल्कि पहले से मौजूद जीवित भाषा को उसकी जीवन्तता में ग्रहण किया - उस भाषा में उन लोगों को बोलने दिया जिन्हें अब तक बोलने का मौका नहीं मिला था। उनकी लोक जीवन सम्भव

1. साम्य - प्रगतिशील विचारों की संवाहक पत्रिका, सं. विजय गुप्त, पृष्ठ 164
2. वही।
3. साम्य - प्रगतिशील विचारों की संवाहक पत्रिका, सं. विजय गुप्त, पृष्ठ 165

भाषा कभी - कभी ऐसी सूक्ष्म कारीगरी का करिश्मा भी दिखा जाती है । जैसे -

"और थोड़ा और, आओ पास
मत कहो अपना कठिन इतिहास
मत सुनो अनुरोध, बस चुप रहो
कहेंगे सब कुछ तुम्हारे श्वास ।"¹

त्रिलोचन भाषा में क्रिया और गति पर सबसे अधिक बल देते हैं और यह मात्र उनके शाब्दिक दावों तक ही सीमित नहीं है । "दिगन्त" में उनका पहला सॉनेट इस तथ्य को बड़े स्वच्छ ढंग से रेखांकित करता है -

"इधर त्रिलोचन सॉनेट के ही पथ पर दौड़ा
सॉनेट सॉनेट सॉनेट सॉनेट क्या कर डाला ।"²

ये दो पंक्तियाँ न केवल एक दौड़ते हुए आदमी का चित्र प्रस्तुत करती हैं, अपितु सॉनेट शब्द की आवृत्ति एक ऐसी ध्वनि भी पैदा करती है जो सूनी रात में सड़क पर दौड़ते घोड़ों की टापों से पैदा होगी ।

त्रिलोचन ने बातचीत के अन्दाज का ही नहीं, बातचीत वाली भाषा का भी कलात्मक उपयोग किया है । उनके सॉनेट में एक ओर किसानों का सा बातूनीपन है तो दूसरे छोर पर बहुत सारी बातों को कुछ शब्दों में एक चुस्त से वाक्य में समेट लेना है । यह इस बात का प्रमाण है कि उनके सॉनेटों का रचाव हिन्दी अंचल के किसान के चरित्र, आदतों और बोलचाल से कितने गहरे अर्थों में सम्पन्न हुआ है । यह निरन्तर बातचीत ही है जिसके सहारे वह अनुभवों को अर्जित करते हैं । एक उदाहरण दृष्टव्य है -

"है धूप कठिन सिर ऊपर
थम गयी हवा है जैसे
दोनों दूबों के ऊपर
रख पैर खींचते पानी

1. अरघान - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 26

2. दिगन्त - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 1

उस मलिन हरी धरती पर
मिलकर वह दोनों प्राणी
दे - रहे खेत में पानी"¹

त्रिलोचन के सॉनेटों में जिस तरह के वर्ण्य-विषय हैं वे एक साथ वर्णन, विश्लेषण और यहाँ तक कि चित्रण और रेखांकन की मांग एक साथ करते हैं। अतः अपने सॉनेटों में वे एक साथ भाषा, भाषा की वर्णन शक्ति, विश्लेषण क्षमता और चित्रकारों जैसी रेखांकन पद्धति अथवा चित्रात्मक शैली में बातचीत करते नजर आते हैं। त्रिलोचन के ज्यादातर सॉनेटों में विभिन्न मनोदशाओं और मनोवेगों को वहन करने वाली सघी हुई और संभावित भाषा का प्रयोग मिलता है। यही भाषा त्रिलोचन की अपनी सरल और विरल प्रकृति के तथा सॉनेटों में निहित भावों के अधिक अनुकूल पड़ती है। यह भाषा नहीं बरन् उनके वस्तु रूप की आंतरिक मांग है।

"स्लेटी बादल आसमान को घेर घिरे हैं,
कहीं जरा सा रन्ध्र नहीं है। जब तक बूँदा
बाँदी हो जाती है। फैल फैल कर मूँदा
बदली ने नभ-नील नयन को। उधर तिर्रे हैं
बादल के ऊपर बादल, चहुँ ओर फिरे हैं
नाना रूपों - रेखाओं में, जैसे खूँदा-
खूँदी बँधे अश्व करते हैं। सुन्दर फूँदा
किरणों का निकला, जिससे सांध्य चिरे है।"²

त्रिलोचन के सॉनेटों में अपने आप से संवाद करने जैसा है। इस संवाद में ऐसी लय है मानो कवि किसी धुन में अपने ही से बातें कर रहा हो। संवाद की परोक्ष प्रकृति है, अपने - आप से बात करना है। इससे त्रिलोचन की चतुर्दशपदी की भाषा में एक नाटकीयता आ जाती है।

1. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ - 151
2. शब्द - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 24

"हो तुम भी घोंचूँ ही, भाषा, छंद, भाव के
पीछे जान खपाते हो, लद गया जमाना
इनका छोड़ो भी, आओ अब से मनमाना
लिखा करो । गद्य ही ठीक है । अब कटाव के
ढब बदले हैं । बोल चढ़े हैं भाव - ताव के,"¹

अथवा

"अपना बस क्या, जीवन है दुनिया का सपना
जब तक आँखों में है तब तक ज्योति बना है,
अलग हुआ तो आँसू है या तिमिर घना है,
बने ठीकरा तो भी मिट्टी को है तपना,"²

वाक्यों में चुस्त गद्य का वेग और लाघवता त्रिलोचन के सॉनेटों में ध्यान देने योग्य है । वाक्यों से शिथिल और बेकार करने वाले फर्जी, लुभाने वाले शब्दों को बड़ी तेजी के साथ हटाते हुये चलते हैं । भाषा और शब्द के प्रति जड़ाऊ रवैये से उनके सॉनेट अपने आप को बचाते हैं ।

त्रिलोचन ने अपने सॉनेटों में स्वयं को चित्रकार की तरह पेश करते हुये कहा है :-

"मैं जीवन का चित्रकार हूँ चित्रकार बनाता
घूम रहा हूँ ।"³

अथवा

"लड़ता हुआ समाज, नई आशा अभिलाषा,
नए चित्र के साथ नई देता हूँ भाषा ।"⁴

1. फूल नाम है एक - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 31
2. दिगन्त - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 12
3. दिगन्त - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 55
4. दिगन्त - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 24

त्रिलोचन सूक्ष्म पर्यवेक्षण के कवि हैं। त्रिलोचन के यहाँ बादलों के इतने रूप हैं कि लगता है कि जैसे बादल कोई साज़ है और रागों के बदलने पर वह अलग अलग रूप धरने लगता है। बादलों में त्रिलोचन ने गति के प्राण फूँके हैं। यहाँ इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है -

'जो क्षण भर पहले
कपोताभ बादल थे उनमें कहीं सुनहले
कही रूपहले रंग आ गये। आवाजाही
कूजन करते हुए खगों की है।" ¹

त्रिलोचन की कई बातों की तरह भाषा और शैली पर भी इनके दृष्टिकोण में एक तरह का कट्टरपन और कड़ापन है। त्रिलोचन खड़ी बोली की हिन्दी भाषा और साहित्यिक अभिव्यक्ति के आधुनिक इतिहास में एक कड़ी बनकर आते हैं। भाषा और भाव में स्पष्टता, सुथरापन एवं तरतीब है। उन्होंने अपनी भाषा में भावों को ढाला है, भावों को भाषा पर हावी नहीं होने दिया है। उन्होंने खड़ी बोली के उन रूपों को आदर्श बनाया जिसमें लोक जीवन से आमने - सामने हाथ मिलाने की दक्षता प्राप्त थी लेकिन इस साध में त्रिलोचन की भाषा कब शास्त्रोचित हो उठे, कहा नहीं जा सकता, परन्तु भाषा पर ऐसा और इतना बोझ नहीं डाला जो अन्ततः पाठकों के सिर पर पड़े।

शब्द :-

जैसा कि अन्यत्र संकेत किया जा चुका है - त्रिलोचन के साँनेटों में शब्दों की जो सजगता और शिल्पगत कसाव देखने में आता है वह हिन्दी कविता में कथ्य, शिल्प व अर्थ की दृष्टि से त्रिलोचन में ही दृष्टव्य है। त्रिलोचन के साँनेटों में भाषा की मजबूत पकड़ के साथ - साथ छंद, लय और शब्दों की पहचान अनायास ही देखी परखी जा सकती है।

त्रिलोचन जी अभिव्यक्ति के लिये सपाट और स्पष्ट शैली को अपनाते हैं तथा सम्पूर्ण वाक्य - विन्यास को उपयोग में लाते हैं। उनके यहाँ लगता है शब्द पहले से तैयार जिह्वा पर धरे - धराये रखे हों। प्रयोग करना भर रह गया हो।

संस्कृतनिष्ठ शब्दों के साथ – साथ अवधी भाषा के अनेक शब्दों का प्रयोग उन्होंने पहली बार किया है, जो अर्थ में बाधक न होकर उसे एक विस्तार रूप देता है। अवधी भाषा के शब्द उनकी भाषा में ऐसे घुले – मिले हुए हैं कि उन्हें हटाकर दूसरे शब्द उस स्थान पर नहीं रखे जा सकते हैं, क्योंकि ये पूरे जीवन संदर्भ के साथ उनकी भाषा में मिले हुए हैं, चौंकाने के लिए जड़े नहीं गये हैं। शब्द ज्ञान के बारे में वे भाषा – वैज्ञानिकों से लोहा ले सकते हैं।

"दहउ न लागइ सोई के जइस जाग
मनई के पीछे मनहई उठि लाग ।" ¹

त्रिलोचन के साँनेटों में कुछ शब्द-प्रयोग तो इतने अनूठे और उनमें ऐसा आलोक है कि उन शब्दों को केन्द्र बनाकर पूरी पंक्ति का अर्थ उभरने लगता है। इसका एक उद्धरण दृष्टव्य है –

"वही त्रिलोचन है, वह – जिसके तन पर गन्दे
कपड़े हैं। कपड़े भी कैसे – फटे लटे हैं,
.....
कौन कह सकेगा इसका, यह जीवन चन्दे
पर अवलम्बित है। चलना तो देखो इसका" ²

कहना न होगा कि त्रिलोचन उन थोड़े से वाक्-सिद्ध कवियों में से हैं जो शब्दों का प्रयोग मिट्टी और खाद की तरह कर पाते हैं। वे इनके प्रति अतिरिक्त सचेष्ट नहीं दिखाई देते क्योंकि इनकी गंध और रंगत की उन्हें पहचान है। त्रिलोचन के लिये शब्द का अर्थ है जीवन से घनिष्ठ साक्षात्कार। वे शब्द – मर्म के पारखी प्रयोक्ता और व्याख्याता भी हैं।

त्रिलोचन के शब्दों में निहित जीवन की असली पहचान, जो त्रिलोचन के जाने हुये, पर अपने, चुने हुये शब्द हैं। त्रिलोचन के शब्द – शब्द भी हैं, और जीवन वास्तविकता भी – कई बार चरित्र भी।

1. त्रिलोचन के बारे में – गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ 106

2. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ – 11

त्रिलोचन का शब्द काव्य भाषा की "विनय पत्रिका" है, जिसके अन्दर आज की हिन्दी देसी बोली से लेकर वैदिक भाषा तक यात्रा करती है और इस साहसिक अभियानमें क्लासिकी संस्कृत से भी शब्द लेना नहीं भूलती ।

शब्द - विन्यास में कहीं - कहीं छायावादी शब्दावली - अमराई, मजरियाँ, मिक आदि तथा कहीं - कहीं आंचलिक शब्दावली - अंजीरिया, तिलकुट इत्यादि का प्रयोग भाव को अधिक संवेद्य बनाने के लिये उन्होंने किया है । लेकिन शब्द प्रयोग के प्रति त्रिलोचन जी का आग्रह नहीं है, बल्कि भावाभिव्यक्ति की अनिवार्यता ही प्रधान है। कहीं - कहीं शब्द - विन्यास व्याकरणसम्मत नहीं हो पाया है ।

"नीरव" शब्द त्रिलोचन के सॉनेटों में बहुधा प्रयोग हुआ है । "मौन", "चुपचाप", "अकेला", "अनकहनी", "निर्वाक" जैसे अन्य शब्द रूप भी "नीरव" अथवा "गतिमय नीरवता" के ही पर्याय भाव है । त्रिलोचन की काव्य - प्रकृति को समझने के लिये यह शब्द कुंजी की तरह काम करते हैं । बड़बोलेपन, तथा अहंकार से कोसों दूर अपने आत्म को इतना पहचानना और इस निजता को शब्द - बद्ध करना, निश्चित शिल्प में कम आसान नहीं । ¹

त्रिलोचन के सॉनेटों में हिन्दीपना है । शब्द अपनी जगह अकड़े या अवरूद्ध नहीं है - वाचन की लय में परस्पर जुड़े हैं ।

चित्रकार माइकेल एंजिलो की तरह त्रिलोचन भी आसमान के मेघों के बनते - मिटते चित्रों को तल्लीनता से देखते हैं । कभी - कभी उन्हें मन में साधकर शब्दों में उतारते भी हैं -

"संध्या ने मेघों के कितने चित्र बनाये -

हाथी, घोड़े, पेड़, आदमी, जंगल क्या - क्या

नहीं रच दिया और कभी रंगों से क्रीड़ा

की , आकृतियाँ नहीं बनाई । कभी चलाये ।" ²

1. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ - 16

2. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ - 155

त्रिलोचन को एक ऐसी शब्द परम्परा मिली थी जो जन से जुड़कर जन को लेकर आगे बढ़ रही थी -

"मैंने इस जीवन की शराब को पीते - पीते

वर्षों का क्षण छोटी सी सीमायें

तय करता हुआ चुपचाप रहा अनजाने

और अपरचित चेहरे अपने जैसे जीते

जीर्ण, शीर्ण मिलते हैं मैं उनका कर थामें

देता हूँ जीवन जीवन के मधुमय गाने ।" ¹

त्रिलोचन के सॉनेट जीवन की गहराई और जटिलता को जिस संवेदनात्मक स्थिति की हृद तक पहुंचाते हैं, वह सीधे जनसंस्कारों के बीच रचनाकार को लाकर खड़ा कर देते हैं ।

छंद :-

त्रिलोचन जी का जो अधिकार सॉनेट के रूप और उसमें प्रयुक्त रोला छंद पर है, वह गजलों के रूप और बहारों पर नहीं । छायावादियों से लेकर आज तक अनेक हिन्दी कवियों ने सॉनेट और रोला छंद को लेकर प्रयोग किये हैं लेकिन यह कहना शायद अत्युक्तिपूर्ण या अनुचित नहीं कि त्रिलोचन ने हिन्दी में उनकी शक्ति का उद्घाटन करके अन्य कवियों से कहीं ज्यादा उन्हें हिन्दी - कविता में स्थापित कर दिया है। पहले भी रोला हिन्दी का लोकप्रिय छंद था लेकिन त्रिलोचन ने उसमें लय की विविधता की सृष्टि से आधुनिक हिन्दी - कवियों का ध्यान नये सिरे से उसकी ओर खींचा है।

त्रिलोचन जी ने परम्परा प्राप्त छंदों का काफी प्रयोग किया है, लेकिन पारम्परिक प्रवाह को नये बोध से अनुकूलित करके उनके रूप में परिवर्तन किया है।

"रंग - रंग उठता है छोर कोई दिशा का

उठ - उठ कर पौधे धान के ताकते हैं

सुरभि लहर लेती व्योम को बासती है

रस - बस कर मेरी बात भी खेलती है ।" ¹

त्रिलोचन ने सॉनेटों में गेय तत्त्व का भी उल्लेख किया है लेकिन सॉनेटों में तरल संगीत की गुंजाइश नहीं होती । त्रिलोचन के सॉनेटों में मधुरता है, लेकिन वह स्निग्ध और कोमल स्वरों का नहीं । उसमें चिन्तन के दृढ़, कठोर स्नायु हैं । रोला छंद हिन्दी का अत्यंत गेय छंद रहा है, लेकिन त्रिलोचन ने जानबूझकर उसमें भावों की इकाइयों को एक पंक्ति से दूसरी पंक्ति में खींच कर संगीत की समानान्तर इकाइयों की जगह यतियों की विविधता का सौन्दर्य पैदा किया है इस तरह वे तुकों के बंधन में रह कर भी अंग्रेजी के अतुकान्त काव्य के संगीत - अनुच्छेद की दृष्टि कर सके हैं -

"नया वर्ष आया है, माथे पर होली की

भस्म लगाये, अंगों में बहार रंगों की

छाई है । अमराई में नूतन ढंगों की

सिन्दूरी केसरिया मज्जरियों टोली की ।" ²

त्रिलोचन के सॉनेट में जहाँ वह मुक्त छंद है वहीं नहीं बल्कि जहाँ छन्दोबद्ध है वहाँ भी ताल की रागिनी नहीं, अलाप का स्वर सुनाई पड़ता है । त्रिलोचन के सॉनेट हर हमेशा हमसे बोलती - बतियाती लगती है । उन्होंने परम्परागत छंदों और शैली का सहारा लेकर उस शैली को अपनी निजी मौलिकता भी प्रदान की है ।

त्रिलोचन की दृष्टि आश्चर्यजनक रूप से साफ है । उन्होंने अधिकांश सॉनेटों में मुक्त छंद का प्रयोग किया है ।

"बरस रहे रस, बरस रहे रस

गरज गरज घन ये

घरामयी घरा हो आयी

रंग रंग की ले सुघराई ।" ³

इस उदाहरण में मात्र छंदों का ही नया प्रयोग नहीं है बल्कि इसकी सृष्टि कवि ने बड़ी खूबी से की है ।

1. वर्तमान साहित्य (अगस्त 1992) सं. विभूति नारायण राय, पृष्ठ 7

2. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ - 75

3. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ - 136

बिम्ब योजना :-

आधुनिक हिन्दी कविता की प्रवृत्ति बिम्बों के माध्यम से बात कहने की है, कुछ कवि बिम्ब पर बिम्ब लादते चलते हैं। सॉनेट में ऐसा करना शायद सम्भव नहीं है और त्रिलोचन बिम्बों की झालरें नहीं बाँधते। बिम्ब उनके यहाँ बहुत कम है। उन्होंने एक - दो बिम्बों का सहारा लिया है। उनमें उनको उभारने की अद्भुत क्षमता है।

"दर्शन हुये, पुनः दर्शन, फिर मिलकर बोले,
खोला मन का मौन, गान प्राणों का गाया,
एक दूसरे की स्वतन्त्र लहरों का पाया
अपनी अपनी सत्ता में जैसे पर तोले।¹

त्रिलोचन शास्त्री के सॉनेट एक समग्र इकाई के होते हैं। एक ऐसी अन्विति वहाँ होती है कि अलग से उसका कोई अंश निकालकर उद्धृत करना अगर असम्भव नहीं तो मुश्किल जरूर होता है। उनके बिम्बों में असामान्यता नहीं। अधिकतर वे परम्परा से लिये गये हैं लेकिन कल्पना के सहारे त्रिलोचन ने उनमें नई भंगिमा भर दी है। त्रिलोचन के बिम्ब, उनकी आस्था की ही भाँति उन्नत शिर और उन्नत बाहु हैं। जीवन की छोटी से छोटी स्थिति को भी नाटकीय आकस्मिकता से स्वप्नलोक का विस्तार और भव्यता देने की जो शैली हम निराला में पाते हैं उसे त्रिलोचन के सॉनेटों में देख सकते हैं।

त्रिलोचन के बिम्बों में उनका प्रकृति - प्रेम भरा हुआ है। इसके अतिरिक्त प्रकृति के स्वतंत्र चित्रों में भी प्रकृति के प्रति त्रिलोचन का मुग्ध आत्मीयभाव प्रकट होता है।

त्रिलोचन के सॉनेटों में जो बिम्ब आते हैं वो सिर तानकर अपनी उपस्थिति का अलग से रोब जमाते हुये नहीं, अपितु सर झुकाये हुये पूरे सॉनेट में खोये और मिले हुये। "दिगन्त" के प्रथम सॉनेट में ही सॉनेट के अनुशासन की बात करते हुये त्रिलोचन कहते हैं -

"कसे कसाये भाव अनूठे

1. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ 76

ऐसे आये जैसे किला आगरे में जो
नग है, दिखलाता है पूरे ताजमहल को ।" ¹

प्रतीक योजना :-

त्रिलोचन शास्त्री अपनी भावाभिव्यक्ति के लिये जिन प्रतीकों का चुनाव करते हैं वे शेष प्रगतिवादियों से भिन्न नहीं हैं । पथिक, पवन, बादल, संध्या, प्रभात और प्रकृति के ऐसे ही अनेक उज्ज्वल और गतिशील या सांकेतिक रूप, मनुष्य की रूढ़ियाँ और कुसंस्कार । उन्होंने कहीं - कहीं अत्यन्त सहज ढंग से प्रतीक - पद्धति का हल्का सहारा लेकर प्रकृति के रूपों और क्रिया व्यापारों के माध्यम से जीवन - स्थितियों की व्यंजना की है ।

जीवन के इस पराजहीन, अनुरागपूर्ण, आसक्तिपूर्ण, तेजोपूरित भाग के प्रतीक प्रभाव का कवि के मन में अगांभी सम्बन्ध है, और प्रकृति के उल्लास - चित्रों के प्रति प्राकृतिक मोह । यथा -

"लहर - लहर परिचय - पराग - पूर्ण
दृश्य - दृश्य अनुरंजित ज्योति - चूर्ण ।" ²

.....

त्रिलोचन शास्त्री ने सॉनेटों में जन जीवन के बहुत ही चुस्त और दुरुस्त प्रतीक दिये हैं ।

ध्वनि - योजना :-

त्रिलोचन जी ने वातावरण को जीवन्त बनाने के लिये ध्वनि - योजना का भी सफल प्रयोग किया है ।

त्रिलोचन शास्त्री "दिगन्त" में कह चुके हैं - "ध्वनि ग्राहक हूँ मैं / समाज में उठने वाली ध्वनियाँ पकड़ लिया करता हूँ ।" ³

1. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद , पृष्ठ 134

2. वही, पृष्ठ - 34

3. वही, पृष्ठ - 212

त्रिलोचन ने "दिगन्त" में जो उनका पहला सॉनेट है सम्भवतः इस संकलन की भूमिका भी है, उसमें उन्होंने ध्वनि का बड़े स्वच्छ ढंग से प्रयोग किया है -

"इधर त्रिलोचन सॉनेट के ही पथ पर दौड़ा
सॉनेट सॉनेट सॉनेट सॉनेट क्या कर डाला ।"¹

ये दो पंक्तियाँ न केवल एक दौड़ते हुये आदमी का चित्र प्रस्तुत करती हैं, अपितु सॉनेट की आवृत्ति एक ऐसी ध्वनि भी पैदा करती है जो सूनी रात में सड़क पर दौड़ते घोड़े की टापों से पैदा होगी । इसी तरह "भादों की एक रात" में बिजली के तड़का कर गिरने की एक ध्वनि चित्र है -

"भरी रात भादों की पथ ... लपका वह कौंधा
दीप्ति भर उठी आँखों में इतनी फिर हम तुम
कुछ भी सके न पकड़ डीठ से, छाया चौंधा
तड़ तड़ तड़ तड़क, धाड़ धा धाड़ धूड - इधर हम ।"²

इस सॉनेट में बिजली कौंधने, आँखों के चौंधियाने, बिजली के गिरने, तड़कने, बादलों के गरजने, चमकने और वर्षा के झपाके के साथ हवा के बहने का जो अत्यंत संश्लिष्ट चित्रांकन हुआ है वह पूरी हिन्दी कविता में अनन्य है ।

अलंकार योजना -

त्रिलोचन शास्त्री सॉनेटों में आडंबर और अलंकार बाज़ी के विरुद्ध रहे हैं ।

मुहावरे :-

त्रिलोचन शास्त्री के सॉनेटों में मुहावरे बाज़ी भी नहीं है ।

1. त्रिलोचन शास्त्री के बारे में - गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ - 132
2. वही

भावभिव्यक्ति :-

त्रिलोचन के सॉनेटों में भावों की अभिव्यक्ति शब्दों के प्रवाह में कल - कल का संगीत बिखेरती हुयी आगे बढ़ती है -

"यह तो सदा कामना की, इस तरह से लिखूँ
जिन पर लिखूँ वही यों अपने स्वर में बोलें ।" ¹

औदात्य :-

त्रिलोचन के यहाँ औदात्य वाचन - लय के साथ आता है - प्रवाह - अवरोध से नहीं । निराला, तुलसी - निराला, कबीर, गालिब, हिन्दी भाषा पर लिखते समय या अपना संघर्षमय जीवनानुभव प्रकट करते हुये कवि का वाक्य - विन्यास अक्षत रहता है । वे औदात्य के लिये संध्यक्षरों वाली तत्सम पदावली का उपयोग नहीं करते । सहजता ही मानो औदात्य में द्रुति के माध्यम से पर्यवसित हो जाती है ।

तद्भव शब्दावली :-

त्रिलोचन के सॉनेटों में तद्भव शब्दावली से कसा हुआ वाक्य वार्तालाप की लय में गतिशील होता है, सुवाचन से अर्थ - छवियाँ उद्घाटित करता हुआ । वार्तालाप की लय भी वस्तुतः वाचन की अति नाटकीयता का वर्जन करती है ।

आत्मपरकता :-

सॉनेटों में त्रिलोचन की आत्मपरकता जिस प्रकार से यथार्थपरक होकर आयी है उसमें रचनात्मक यथार्थ का एक नया रूप ही पैदा हो गया है, जो जन सम्बन्धों व उनके रागों के बहुत निकट है । त्रिलोचन की आत्मपरकता के अपने अनेक स्वर हैं, लेकिन वे किसी भी दशा में आत्म ग्रस्त नहीं कहे जा सकते । अपने प्रति उनकी जो निर्मम दृष्टि है, वह आज भी समकालीन कविता की एक धरोहर है -

"भीख मांगते उसी त्रिलोचन को देखा कल

जिसको समझे था है तो है यह फौलादी ।

.....

स्वाभिमान ज्योतिष्क लोचनों में उतरा था

यह मनुष्य था, इतने पर भी नहीं मरा था ।" ¹

त्रिलोचन शास्त्री की शैली सांघत सरल और सुबोध है । कवि में कल्पना की शक्ति है ।

बोलचाल के शब्दों में ऊँचे किस्म के सॉनेट लिखना टेढ़ी खीर है लेकिन त्रिलोचन शास्त्री को इसमें पूरी सफलता मिली है । इसकी संरचना के विषय में त्रिलोचन की अवधारणा बहुत स्पष्ट और प्रौढ़ है ।

शिल्प की दृष्टि से भी बहुत से सॉनेटों में छायावादी प्रभाव स्पष्ट है । छायावादी कवियों की संस्कृतनिष्ठ उदात्त भाषा, आवश्यकता से अधिक उनके कोमल स्वर और माधुर्य के लिये "थान", "प्रानी" इत्यादि जैसे प्रयोग क्रिया पदों में "हैं", "था" इत्यादि का लोप और पंक्तियों में तरल संगीत इन सॉनेटों में अनेक स्थानों पर मिलते हैं।

रूप और शिल्प पर त्रिलोचन जी ने भले ही बहुत बड़ी बड़ी बातें न की हों लेकिन देखा जाये तो विभिन्न विधाओं और भिन्न - भिन्न रूपों के तहत जितने प्रयोग त्रिलोचन जैसे प्रगतिशील कवि ने किये हैं, शायद ही दूसरों ने किये हों और सॉनेट जैसे नये काव्य प्रयोग में अपना स्थान रखते हैं ।

1. उस जनपद का कवि हूँ - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 13

अध्याय - 5

उपसंहार

चतुर्दशपदीकार त्रिलोचन का प्रदेय :-

छायावाद के बाद वाली पीढ़ी के कवियों में त्रिलोचन शास्त्री का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रगतिवादी काव्य धारा के कुछ चुने हुये कवियों में उनका नाम निःसंकोच लिया जा सकता है। त्रिलोचन जी प्रगतिवादी धारा के सशक्त हस्ताक्षर हैं। शास्त्री जी निराला के बाद और उन्हीं की परम्परा में आने वाले बहुत ही समर्थ कवि हैं।

त्रिलोचन शास्त्री ने अपनी कविताओं में चतुर्दशपदी (सॉनेट) काव्य रूप का सबसे अधिक प्रयोग किया है। उन्होंने इस दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया है। सॉनेट में जैसे कवि त्रिलोचन के प्राण ही बसते हैं। त्रिलोचन से पहले भी हिन्दी कविता में कतिपय कवियों ने सॉनेट काव्य रूप का बीजबपन किया। परन्तु त्रिलोचन ही सॉनेट के पहले सफल कवि हैं। शायद ही कोई ऐसा कवि होगा जिसका कोई छंद या काव्य रूप उसका पर्याय बना हो।

हिन्दी में सॉनेट अंग्रेजी परम्परा से आया है। यह चौदह पंक्तियों का छंद है। कुछ अतालवी सॉनेटकारों ने इसे आठ और छः पंक्तियों में विभाजित किया है जबकि अंग्रेजी सॉनेटकारों ने तीन चतुर्दशपदी और अंत में तुकान्त द्विपदी के रूप में विभक्त कर अपनाया है। सॉनेट शेक्सपीयर स्पेंसर और मिल्टन का प्रिय काव्य-रूप रहा है।

हिन्दी कविता में त्रिलोचन ने इस विदेशी छंद के शिल्प को अपनी तरह से सिद्ध किया है। यही कारण है कि कहीं भी त्रिलोचन का काव्य सॉनेट के शिल्प से बाधित नहीं हुआ है, क्योंकि त्रिलोचन ने विदेशी काव्य के इस शिल्प को अपनी जातीय परम्परा एवं अपने जातीय रागों में ढाल कर किया है।

आज हिन्दी की काव्य परम्परा में जैसे चौपाई से तुलसीदास, पदों से सूरदास, दोहों से बिहारी का नाम अप्रत्याशित रूप से सामने आ जाता है, उसी प्रकार हिन्दी कविता में सॉनेट का नाम आते ही त्रिलोचन सामने मूर्तिमान हो जाते हैं।

हिन्दी कविता में जहाँ तक शब्दों की सजगता और शिल्पगत कसाव का प्रश्न है, वह निराला के बाद हिन्दी कविता में कथ्य, शिल्प और अर्थ – सभी धरातलों पर

त्रिलोचन में देखते ही बनता है । चौदह पंक्तियों की प्रतिबद्धता वाले काव्य - रूप में अपनी समग्र चेतना और अनुभव - जगत को वाणी देने की चुनौती कवि के सामने एक बड़ी चुनौती थी । यहाँ कवि को कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक कहना होता है और यदि इसमें कवि किसी भी घरातल पर चूक गया, तो फिर सफलता की सीढ़ी उसके हाथ से सदा सर्वदा को खिसक जाती है । अतः इस विधा के ग्रहण में कवि को भावानुभूति एवं भावाभिव्यक्ति - दोनों स्तरों पर अत्यंत ही जागरूक और चौकन्ना रहना पड़ता है । उसमें कुशल शिल्पी जैसे हस्तलाघव की अपेक्षा की जाती है । कहना न होगा कि त्रिलोचन शास्त्री ने इस साहस भरी चुनौती को स्वीकार ही नहीं किया उसे सफलता के उच्चतम शिखर पर आसीन भी किया है ।

त्रिलोचन जी ने प्रस्तुत विधा के प्रणयन में अंग्रेजी परम्परा के दोनों रूपों - पैटार्कन और शेक्सपीरियन - का न केवल सफलतापूर्वक प्रयोग किया है, अपितु मूलतः अंग्रेजी कविता से प्रभावित इस काव्य रूप को उन्होंने अपने ढंग से मोड़ कर इसे विशुद्ध जातीय एवं भारतीय रूप प्रदान किया है । डॉ. एस. नारायण के स्वर में स्वर मिलाकर कह सकते हैं कि वे हिन्दी में चतुर्दशपदी के ऐसे पर्याय बन गये हैं, कि उनमें विदेशीपन की गंध तो कहीं छू तक नहीं गयी । हिन्दी में चतुर्दशपदी की सृजना में जैसा साफ सुथरा पन एवं जैसी चुस्त - दुरुस्त बनावट और कसावट त्रिलोचन जी में दीख पड़ती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ ही है ।¹ त्रिलोचन जी ने न केवल चतुर्दशपदियों की सफल सृजना की है, अपितु प्रयोगों की नव्यता की जीवंत संस्पर्श देकर उन्हें प्राणवान एवं धारदार भी बनाया है जिसका सोदाहरण सविस्तार विवेचन अन्यत्र किया जा चुका है । त्रिलोचन जी ने अंग्रेजी के प्रस्तुत काव्य - रूप का हिन्दी में उसी निपुणता एवं विदग्धता के साथ प्रयोग किया है, जितना शमशेर ने हिन्दी में गजल का । डॉ. केदारनाथ सिंह के शब्दों में कहें तो "हिन्दी भाषी जाति के साथ त्रिलोचन के सम्बन्ध की जिस अभिन्नता की बात बार - बार कही जाती है उसका एक विशिष्ट रूप उनके "सॉनेटों" में दिखाई पड़ता है । सॉनेट जैसा की सब जानते हैं - हिन्दी में

1. आधुनिक हिन्दी कविता और विदेशी काव्य रूप - डॉ. एस. नारायण,

अंग्रेजी कविता के प्रभाव से आया है। पर त्रिलोचन ने रोला छंद के मात्रिक संगीत में ढालकर इसका एक अलग ढांचा तैयार किया है, जो पूरी तरह हिन्दी की आन्तरिक लय से मेल खाता है। सॉनेट के लिये इस विशिष्ट छंद में निहित सम्भावनाओं की खोज त्रिलोचन की हिन्दी भाषा की प्रकृति की पहचान का एक उदाहरण है।¹

जैसा की संकेत किया जा चुका है द्विवेदी युगीन हिन्दी कविता में आयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध" सरीखे साहित्यकारों ने कतिपय चतुर्दशपदियों का प्रणयन कर इस विधा के बीज - बपन का कार्य किया है। आधुनिक काल में चतुर्दशपदी की रचना में प्रसाद, पंत एवं निराला ने खूब रुचि दिखाई। सृष्टि के कण - कण में अपने प्रेमास्पद प्रियतम की परोक्ष सत्ता का आभास पाने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी महाकवि जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी कविता में सर्वथा एक नवीन युग का द्वार खोला। वे कविता की इस नवीन धारा के प्रवर्तक एवं अन्यतम कवि हैं।

प्रसाद जी की चतुर्दशपदियों का प्रकाशन समय - समय पर "इन्दु" में होता रहा, एकाध अन्यत्र भी प्रकाशित हुयी। किन्तु पुस्तककार रूप में बाद में उनमें नाटकों के समस्त गीतों के साथ उनकी चतुर्दशपदियों का "प्रसाद संगीत" नामक संग्रह में समाकलन हुआ है। प्रसाद ने कुल मिलाकर 27 चतुर्दशपदियों की रचना की हैं, जिनमें पांच चतुर्दशपदियाँ उनके नाटकों के गीतों में - "अज्ञात शत्रु" में दो "स्कन्दगुप्त" में दो और "चन्द्रगुप्त" में एक - सम्मिलित हैं। शेष बाईस चतुर्दशपदियाँ स्वतन्त्र रूप से लिखी एवं प्रकाशित हुयी हैं।² प्रसाद जी की एक चतुर्दशपदी यहाँ अंकित है -

"क्यों जीवनधन । ऐसा ही न्याय तुम्हारा क्या सर्वत्र

लिखते हुए लेखनी हिलतीं कॉपता जाता है यह पत्र ।

औरों के प्रति प्रेम तुम्हारा, इसका मुझको दुःख नहीं,

जिसके तुम हो एक सहारा उसको भूल न जाव कहीं।³

निराला हिन्दी में स्वच्छन्दतावाद के प्रबल समर्थक रहे हैं। उन्होंने न केवल छंदों के बंधों को तोड़ा है अपितु इस दिशा में नवीन व सफल मौलिक यात्राएं की हैं।

1. डॉ. केदारनाथ सिंह - उस जनपद का कवि हूँ, के फ्लैप से उद्धृत।

2. आधुनिक हिन्दी कविता और विदेशी काव्य रूप - डॉ. एस. नारायण, पृ. 70

3. प्रसाद संगीत - जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ 140

निराला ने 15 चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं जो निराला ग्रन्थावली की तीसरे वोल्यूम में संकलित हैं। निराला जी की चतुर्दशपदियों का वर्ण्य - विषय व्यापक है। वे प्रेम - प्रकृति सौन्दर्य एवं देशभक्ति आदि भावनाओं से परिपूर्ण हैं।

सुभद्राकुमारी चौहान के 'मुकुल तथा अन्य कविताएं' नामक संग्रह में उनकी तीन चतुर्दशपदियाँ - 'जीवन फूल', 'आराधना', तथा 'आगमन' संग्रहीत हैं। उनकी चतुर्दशपदी के वर्ण्य - विषय - प्रेम और दार्शनिक हैं।

छायावादोत्तर युग की हिन्दी कविता में प्रस्तुत विधा की सृजना की दिशा में कवियों में पर्याप्त उत्साह देखने को मिलता है। इस युग के कवियों में डॉ. रामविलास शर्मा इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। इनकी चतुर्दशपदियाँ उनके प्रगीतात्मक संग्रह 'रूपतरंग' में संग्रहीत हैं। दो सॉनेट 'तारसप्तक' में भी हैं। उन्होंने अपनी चतुर्दशपदियों में पैटार्क के मॉडल का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है।

डॉ. प्रभाकुमार माचवे का योगदान भी चतुर्दशपदी की रचना में अनुपेक्षणीय है। प्रभाकर माचवे ने पैटार्क तथा शेक्सपीयर के मॉडल को अपने तरीके से काट-छांट कर अपने अनुकूल ढाल कर अपनी राह बनाई है।

नरेन्द्र शर्मा की चतुर्दशपदियों में एक ही भाव अथवा एक ही विचार अन्तर्निहित रहता है, जो अपने में पूर्ण होता है। उनकी एक चतुर्दशपदी का उदाहरण दृष्टव्य है -

"अग्नि का कर आचमन संकल्प कर मानव

तम अनल के सिंधु भी बढ़ता चलेगा तू।

तू नहीं वह चीज जो जल राख हो जाए ,

नित्य निखरेगा मनुज जितना जलेगा तू।" ¹

छायावादोत्तर युग के हिन्दी कवियों में प्रस्तुत विधा की दृष्टि से त्रिलोचन शास्त्री ने सबसे अधिक ख्याति अर्जित की है। त्रिलोचन जी मार्क्सवादी कवि होते हुये भी एक विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्होंने अपनी रचना - धर्मिता को पार्टी-

प्रोपेगन्डा की कुचक्र से सावधानी पूर्वक बचाया है। त्रिलोचन जी का सृजन कहीं भी सिद्धान्त की व्याख्या का न तो हथियार ही बनता है और न प्रकट रूप से अपने में कहीं सिद्धान्तों को मुखरित ही होने देता है। यही कारण है, कि उनकी कविताएं काव्यत्व की कसौटी पर आस्वाद्य ठहरती हैं। त्रिलोचन जी का कवि व्यक्तित्व परम्परा के विनत स्वीकार के साथ साथ प्रयोगों के लिये कभी अनुदार नहीं बना है, अपितु उसमें सर्वदा एक उदार अवकाश बना रहता है। उनके काव्य में चतुर्दशपदी की सर्वाधिक व्याप्ति इसका भव्य निदर्शन है।

हिन्दी कविता में "दिगन्त" के प्रकाश के साथ शास्त्री जी ने "सॉनेट" को अपनी भावाभिव्यंजना का सफल वाहक बनाया है।¹ "दिगन्त" पूरी तरह से उनकी चतुर्दशपदियों का ही संग्रह है। "दिगन्त" का एक सॉनेट दृष्टव्य है -

"इधर त्रिलोचन सॉनेट केही पथ पर दौड़ा

सॉनेट सॉनेट सॉनेट सॉनेट क्या कर डाला।"²

इसके बाद "उस जनपद का कवि हूँ", "अनकहनी भी कुछ कहनी है" यह दोनों भी उनके चतुर्दशपदियों के संकलन हैं। "उस जनपद का कवि हूँ" में कुल 106 चतुर्दशपदियाँ हैं। "तुम्हें सौंपता हूँ" नामक संग्रह में भी त्रिलोचन जी की 31 चतुर्दशपदियाँ हैं। त्रिलोचन शास्त्री ने इसके बाद "गुलाब और बुलबुल" नामक संग्रह का प्रकाशन किया। जिसमें 28 चतुर्दशपदियाँ संग्रहीत की गयी हैं। "ताप के तापे हुए दिन" में कुल 10 चतुर्दशपदियाँ हैं।

सॉनेट में त्रिलोचन ने अधिकांश उपलब्ध रूपों का प्रयोग किया है। पेट्रार्कीय सॉनेट भी उन्होंने लिखे और शेक्सपीयर सरणि के सॉनेट भी, बल्कि उनमें कहीं - कहीं इन्होंने स्पेन्सर और सरे - दोनों की तुक योजनाओं का प्रयोग भी किया है। जिनका सोदाहरण विवेचन शोध में यथास्थान किया जा चुका है।

1. आधुनिक हिन्दी कविता और विदेशी काव्य - रूप - डॉ. एस. नारायण, पृष्ठ - 74

2. दिगन्त - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 1

त्रिलोचन जी का कवि - कर्म एक दीर्घ - काल का साक्षी रहा है । एक लम्बे अंतराल में प्रणीत इनकी चतुर्दशपदियों में हमें उनके रचनात्मक विकास के अनेक पड़ावों से साक्षात्कार होता है । त्रिलोचन जी के चतुर्दशपदी कवि - कर्म के प्रतिपाद्य पर अवधान केन्द्रित करने से पता चलता है कि उनका वर्ण्य - विषय व्यापकता एवं विविधता लिये हुये है ।

त्रिलोचन शास्त्री की आरम्भिक चतुर्दशपदियाँ प्रेम - परक हैं । उनकी सबसे अधिक चतुर्दशपदियाँ प्रेम पर आधारित हैं । उन्होंने प्रेम - भावना का चित्रण अनेक कोणों से किया है जैसे - साहचर्य, श्रम, रूप और सौन्दर्य, गार्हस्थिक और आत्मिक प्रेम । प्रेम - परक चतुर्दशपदी का एक उदाहरण दृष्टव्य है -

"हम तुम दोनों आज दूर हैं, चाहें भी तो
पास नहीं आ सकते हैं, वैसे कहने को
कुछ भी कह लें, मन समझा लें , पर रहने को
साथ अजी छोड़ो भी, अपने मन की भी तो ।" ¹

त्रिलोचन शास्त्री के मुख्य वर्ण्य विषय प्रकृति सौन्दर्य भी हैं । सौन्दर्य की चेतना जैसे कवि के हृदय पर स्थाई रूप से छा गयी है । त्रिलोचन के काव्य में प्रकृति चित्रण के अनेक सॉनेट भरे हुये हैं जैसे - प्रकृति का निर्मल रूप, नया प्रभात, मौसम, प्रकृति और मनुष्य और प्रकृति के रूप और प्रभाव आदि हैं ।

त्रिलोचन शास्त्री ने सामाजिक जीवन की अनेक विविधताओं को प्रस्तुत किया है जैसे - महानगरीय सभ्यता, मध्यवर्गीय परिवार, अकेलापन, संघर्ष जन्य, जन शक्ति, अवसाद करुणा, अटूट विजयभाव, शोषण, कर्मठता और वेदना आदि हैं ।

त्रिलोचन शास्त्री ने इन सब चतुर्दशपदियों के अतिरिक्त ग्रामीण जीवन, राजनीतिक चेतना, आत्म चित्रण, नागार्जुन, आदि को चतुर्दशपदी का वर्ण्य विषय बनाया है ।

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 74

इनके अतिरिक्त छायावादोत्तर हिन्दी कविता में नेमीचन्द्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, डॉ. केदार नाथ सिंह, रामझकवाल सिंह राकेश, बालकृष्ण राव, प्रभृति कवि साहित्यिकों ने इस विधा के सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

सॉनेट को लेकर यह कथन कम महत्वपूर्ण नहीं है कि त्रिलोचन ने एक विदेशी परम्परागत छंद में अपनी सहज व सजग भाषा द्वारा जिस जन राग को प्रवाहित किया है वह आज हिन्दी काव्य जगत की एक मूल्यवान विरासत है । त्रिलोचन तुलसी और निराला की भांति जनभाषा की समस्त गूँजों व अनगूँजों से पूरी तरह परिचित है। जिस सहज सजगता के साथ सॉनेटों में त्रिलोचन ने अपने कवि कर्म का निर्वाह किया है, इससे तो यह पूरी तरह भासित होने लगा है कि सॉनेट हिन्दी का ही परम्परागत छंद है ।

"सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ भाषा

भाषा की उंगली से मानव मानव हृदय हो गया ।" ¹

त्रिलोचन अवधी भाषा के विद्वान हैं । भाषा विज्ञान में उनकी बहुत अच्छी गति है । भाषाओं के आपसी सम्बन्ध के बारे में वे बहुत बातें करते हैं । ²

त्रिलोचन ने अपने सॉनेटों के लिये नयी भाषा नहीं गढ़ी, बल्कि पहले से मौजूद जीवित भाषा को उसकी जीवन्तता में ग्रहण किया – उस भाषा में उन लोगों को बोलने का मौका दिया जिन्हें अब तक बोलने का मौका नहीं मिला था । त्रिलोचन खड़ी बोली की हिन्दी भाषा और साहित्यिक अभिव्यक्ति के आधुनिक इतिहास में एक कड़ी बनकर आते हैं ।

जैसा कि अन्यत्र संकेत किया जा चुका है – त्रिलोचन के सॉनेटों में शब्दों की जो सजगता और शिल्पगत कसाव देखने को आता है, वह हिन्दी कविता में कथ्य, शिल्प व अर्थ की दृष्टि से त्रिलोचन में ही दृष्टव्य है । त्रिलोचन के सॉनेटों में भाषा की मजबूत पकड़ के साथ – साथ छंद , लय और शब्दों की पहचान अनायास ही देखी जा सकती है ।

1. साम्य प्रगतिशील विचारों की संवाहक पत्रिका – विजयगुप्त, पृ. 163

2. वर्तमान साहित्य अगस्त , 1992, सं. विभूति नारायण राय, पृ. 6

संस्कृतनिष्ठ शब्दों के साथ साथ अवधी भाषा के अनेक शब्दों का प्रयोग उन्होंने पहली बार किया है ।

त्रिलोचन जी का जो अधिकार सॉनेट के रूप और उसमें प्रयुक्त रोला छंद पर है, वह गजलों के रूप और बहारों पर नहीं । त्रिलोचन जी ने परम्परा प्राप्त छंदों का काफी प्रयोग किया है । त्रिलोचन की दृष्टि आश्चर्यजनक रूप से साफ है । उन्होंने अधिकांश सॉनेटों में मुक्त छंद का प्रयोग किया है ।

"बरस रहे रस बरस रहे रस

गरज गरज घन ये

धरामयी धरा हो आयी

रंग रंग की ले सुघराई ।" ¹

आधुनिक हिन्दी कविता की प्रवृत्ति बिम्बों के माध्यम से बात कहने की है, कुछ कवि बिम्ब पर बिम्ब लादते चलते हैं । सॉनेट में ऐसा करना सम्भव नहीं है, इसलिए त्रिलोचन बिम्बों की झालरें नहीं बांधते । बिम्ब उनके यहाँ बहुत कम हैं। उन्होंने एक दो बिम्बों का सहारा लिया है । उनमें उनको उभारने की अद्भुत क्षमता है।

"दर्शन हुये पुनः दर्शन, फिर मिलकर बोले,

खोला मन का मौन, गान प्राणों का गाया,

एक दूसरे की स्वतंत्र लहरों को पाया,

अपनी अपनी सत्ता में जैसे पर तोले ।" ²

त्रिलोचन के बिम्बों में उनका प्रकृति - प्रेम भरा हुआ है ।

त्रिलोचन शास्त्री अपनी भावाभिव्यक्ति के लिये जिन प्रतीकों का चुनाव करते हैं, वे शेष प्रगतिवादियों से भिन्न नहीं है । उन्होंने कहीं - कहीं अत्यंत सहज ढंग से प्रतीक - पद्धति का हल्का सहारा लेकर प्रकृति के रूपों और क्रिया व्यापारों के माध्यम से जीवन - स्थितियों की व्यंजन की है ।

1. त्रिलोचन के बारे में - गोविन्द प्रसाद , पृ० 136

2. वही, पृष्ठ 176

त्रिलोचन जी ने वातावरण को जीवन्त बनाने के लिये ध्वनि योजना का भी सफल प्रयोग किया है ।

त्रिलोचन शास्त्री सौनेटों में आडम्बर और अलंकार बाजी के विरुद्ध रहे हैं। त्रिलोचन शास्त्री के सौनेटों में मुहावरे बाजी भी नहीं है ।

रूप और शिल्प पर त्रिलोचन जी ने बहुत बड़ी - बड़ी बातें न की हों, लेकिन देखा जाये तो विभिन्न विधाओं और भिन्न - भिन्न रूपों के तहत जितने प्रयोग त्रिलोचन जैसे प्रगतिशील कवि ने किये हैं, शायद ही दूसरों ने किये हों।

त्रिलोचन के चतुर्दशपदी काव्य का एक विहंगम दृष्टि से सर्वेक्षण करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है, कि त्रिलोचन शास्त्री ने आलोच्य विधा की सृजना में पर्याप्त परिष्कार के साथ परिवर्तन एवं परिवर्धन किये हैं । चतुर्दशपदियों की पंक्ति के योग की योजनाओं में - जैसे - अष्टपदी, षट्पदी, तीन चतुष्पदी और एक द्विपदी, एक चतुष्पदी और एक दस पदी और सात द्विपदियाँ - अन्तर होते हुये भी सब में एक ही भाव और एक ही विचार ही अन्विति कहीं भी विच्छिन्न नहीं होने पाती । कुल मिलाकर अंग्रेजी के इस काव्य रूप का त्रिलोचन शास्त्री ने उन्नत प्रयोग किया है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मुख्य ग्रन्थ

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है : त्रिलोचन शास्त्री - राधाकृष्ण, प्रथम संस्करण, 1985, 2/38, अन्सारी रोड, दारेयागंज नई दिल्ली - 110002
2. अरघात : त्रिलोचन शास्त्री - यात्री प्रकाशन, सी-3/169, यमुना विहार, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1983
3. उस जनपद का कावे हूँ : त्रिलोचन शास्त्री - राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण - 1981, दरियागंज नई दिल्ली ।
4. गुलाब और बुलबुल : त्रिलोचन शास्त्री - वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण - 1985, 4697 / 521ए, दारेयागंज नई दिल्ली - 110002
5. ताप के ताए हुए दिन : त्रिलोचन शास्त्री - सम्भावना प्रकाशन, प्रथम संस्करण - 1980, रेवती कुंज, हापुड ।
6. तुम्हें सोंपता हूँ : त्रिलोचन शास्त्री - राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण - 1985, 2/38, अन्सारी रोड, नई दिल्ली - 110002
7. दिगन्त : त्रिलोचन शास्त्री - राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण - 1985, 2/38, अन्सारी रोड, दारेयागंज, नई दिल्ली - 110002

सहायक ग्रन्थ

1. आधुनिक हिन्दी कावेता और विदेशी काव्य रूप : डॉ. एस.नारायण - मिथिला प्रकाशन, 18/4, सराय बाला, अलीगढ़ - 202001
प्रथम संस्करण - 1993
2. छायावादोत्तर हिन्दी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : डॉ. कमला प्रसाद पाण्डेय, रचना प्रकाशन
3. त्रिलोचन के बारे में : गोविन्द प्रसाद - वाणी प्रकाशन, 21-ए, दारेयागंज नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1994
4. हिन्दी उपन्यास शिल्प : बदलते पारेप्रेक्ष्य - डॉ. प्रेम भटनागर, अचना प्रकाशन, जयपुर, 1968
5. हिन्दी उपन्यास की शिल्प विधि का विकास : डॉ. (श्रीमती) ओम शुक्ला - अनुसंधान प्रकाशन, आचाये नगर कानपुर
प्रकाशन काल - 1964

पत्र पत्रिकाएँ

1. आलोचना त्रैमासिक : सं. नामवर सिंह - अंक 86, वर्ष - 37
जुलाई - सितम्बर 1988
2. आलोचना त्रैमासिक : सं. नामवर सिंह - अंक 89, वर्ष 37,
अप्रैल - जून 1989
3. आलोचना त्रैमासिक : सं. नामवर सिंह - अंक 82, वर्ष 36,
जुलाई - सितम्बर 1987
4. आलोचना त्रैमासिक : सं. नामवर सिंह - अंक 83, वर्ष 36,
अक्टूबर - दिसम्बर 1987

5. भाषा त्रैमासिक : सितम्बर 1981 - सम्पादक - जगदीश चतुर्वेदी, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
6. वर्तमान साहित्य : अगस्त 1992, वर्ष - 9, अंक - 11, विभूति नारायण राय, लखनऊ, अशोक ऋषि राज, 13/130, इन्दिरा नगर ।
7. सापेक्ष :
8. साम्य . प्रगतिशील विचारों की संवाहक पात्रिका - सम्पादक - विजय गुप्त, साम्य मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ शीतला वाडे आम्बिकापुर (म.प्र.) द्वारा प्रकाशित एवं जारी
9. हंस : मई 1942
10. हंस : फरवरी 1952 वर्ष
11. The collected works of O.G. Rossetti Vol. 1 London 1890

कोष - सूची

1. ऐंसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका - वाल्यूम - XXV
2. ऐंसाइक्लोपीडिया अमरिकाना
3. मानविकी पारिभाषिक कोष - साहित्य खण्ड, सं. डॉ. नगेन्द्र
4. बृहत हिन्दी कोष (ज्ञान मण्डल लिमिटेड, बनारस) सं. कालिका प्रसाद ।
5. A Background to the study of English Literature - Dr. B. Prasad.
6. Popular Oxford Encyclopaedia illustrated Dictionary.